3 राजधानी
आप सदस्यों के हंगामे के चलते विस स्थगित

6 अभिमत
संत शिरोमणि विद्यासागर जी को श्रद्धांजलि

11 विदेश
पुतिन के खिलाफ जंग जारी रखेंगी नवलनी की पत्नी

12 स्पोर्ट्स
पंत आईपीएल में वापसी को तैयार

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 106
नई दिल्ली, बुधवार, 21 फरवरी, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

एक्ट ईस्ट नीति के क्रियान्वयन से पूर्वोत्तर को भरपूर मिल रहा लाभ

राष्ट्रीय-10

आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी चंडीगढ़ के मेयरः सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भावुक हो गए आप पार्षद कुलदीप कुमार।

पीटीआई। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को हारे हुए आप-कांग्रेस गठबंधन के उम्मीदवार कुलदीप कुमार को चंडीगढ़ का मेयर घोषित कर दिया। कोर्ट ने विवादित चुनाव के नतीजे को पलट दिया जिसमें भाजपा प्रत्याशी चौंकाने वाले विजेता बने थे। यह चुनाव अधिकारी द्वारा चुनाव में धांधली करने के खुले प्रयास को सुधारने के लिए एक अभूतपूर्व हस्तक्षेप था। कोर्ट भाजपा नेता, रिटर्निंग ऑफिसर अनिल मसीह के खिलाफ अदालत के समक्ष कथित रूप से गलत बयान देने के लिए मुकदमा चलाने का आदेश दिया कि उन्होंने आठ मतपत्रों को अमान्य कर दिया था क्योंकि उन्हें विरूपित किया गया था। पूर्ण न्याय करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करते हुए, शीर्ष अदालत ने कहा कि रिटर्निंग अधिकारी, एक नामांकित पार्षद द्वारा घोषित परिणाम स्पष्ट रूप से कानून के विपरीत था।

मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि ऐसे मामले में, शीर्ष अदालत कर्तव्य से बंधी है, खासकर संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपने अधिकार क्षेत्र के संदर्भ में, यह सुनिश्चित करने के लिए कि चुनावी लोकतंत्र की प्रक्रिया को छल से विफल नहीं होने दिया जाए। पीठ, जिसमें न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल थे, ने कहा कि अदालत को वहां कदम उठाना चाहिए जहां असाधारण स्थितियां विकसित होती हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि चुनावी लोकतंत्र का मूल जनादेश संरक्षित है।

पीठ ने फैसला सुनाते हुए कहा, 'हम तदनुसार आदेश देते हैं और निर्देश देते हैं कि पीठासीन अधिकारी (मसीह) द्वारा घोषित चुनाव परिणाम को रद्द कर दिया जाए और अलग रखा जाए। याचिकाकर्ता (कुमार) को चंडीगढ़ नगर निगम के मेयर के रूप में चुनाव के लिए वैध रूप से निर्वाचित उम्मीदवार घोषित किया जाता है।' शीर्ष अदालत ने कहा कि मसीह द्वारा अमान्य किए गए आठ मतपत्रों में से प्रत्येक में वोट कुमार के पक्ष में डाले गए थे। कांग्रेस पार्टी ने 'हास्यास्पद चुनाव' पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले की सराहना करते हुए कहा कि इसने लोकतंत्र को 'निरंकुश भाजपा' के दंश से बचाया जोचुनाव हेरफेर का सहारा लेती है। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे (शेष पेज 9)

किसानों के प्रदर्शन की आशंका से दिल्ली सतर्क

राजेश कुमार। नई दिल्ली/चंडीगढ़

पंजाब-हरियाणा शंभू बॉर्डर पर जमा आंदोलनकारी किसान

दिल्ली के आसपास की सीमाओं पर बुधवार से सुरक्षा व्यवस्था अधिक कड़ी होने से तनाव बढ़ने के साथ आम जनता को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसका कारण प्रदर्शनकारी किसानों द्वारा सरकार के मौजूदा न्यूनतम समर्थन मूल्यों पर मक्का, कपास और तीन तरह की दालों के पांच साल के अनुबंध के प्रस्ताव को खारिज करना है। इसके साथ ही राजधानी के प्रमुख प्रवेश बिंदुओं पर पहले के व्यवधानों की तरह अराजकता की संभावना बढ़ गई है। वहीं नोएडा और ग्रेटर नोएडा के किसान समूहों ने विकसित भूखंडों और उनकी अधिग्रहित भूमि के लिए बढ़े हुए मुआवजे की मांग करते हुए शुक्रवार को राजधानी तक मार्च करने के योजना की घोषणा की है। न्यूनतम समर्थन मूल्य के लिए पांच सूत्री आउट ऑफ बॉक्स फॉर्मूले को खारिज करने के बाद, किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने मंगलवार को केंद्र से एक दिवसीय संसद सत्र बुलाने और एमएसपी गारंटी पर कानून लाने का आग्रह किया। उन्होंने घोषणा की कि वे बुधवार को दिल्ली जायेंगे। उनका यह बयान 'दिल्ली चलो' आंदोलन में भाग लेने वाले किसान नेताओं द्वारा पांच साल के लिए सरकारी एजेंसियों द्वारा एमएसपी पर दालों, मक्का और कपास की खरीद के केंद्र के प्रस्ताव को खारिज करने के एक दिन बाद आया है, यह कहते हुए कि यह किसानों के पक्ष में नहीं है।

इस बीच, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने भी शंभू सीमा पर सैकड़ों ट्रैक्टरों के साथ डेरा डाले हुए प्रदर्शनकारी किसानों को फटकार लगाई और कहा कि ट्रैक्टर ट्रॉलियों का उपयोग राजमार्गों पर नहीं किया जा सकता है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश जीएस संधावालिया और न्यायमूर्ति लपीता बनर्जी की पीठ ने इतनी बड़ी संख्या में किसानों को एकत्र होने की अनुमति देने के लिए पंजाब सरकार से भी सवाल किया। संबंधित घटनाक्रम में, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा नेता अमरिंदर सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और किसानों से संबंधित कई मुद्दों पर चर्चा की। सिंह ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, किसानों से संबंधित मुद्दों सहित पंजाब से संबंधित व्यापक मुद्दों पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के साथ एक विस्तृत बैठक हुई। इस बीच इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) ने 'सार्वजनिक व्यवस्था' बनाए रखने के लिए सोमवार को किसानों के विरोध प्रदर्शन से संबंधित 177 सोशल मीडिया खातों और लिंक को ब्लॉक करने का आदेश दिया, जिसमें 35 फेसबुक लिंक, 35 फेसबुक अकाउंट, 14 इंस्टाग्राम अकाउंट, 42 ट्विटर शामिल हैं। अकाउंट, 49 ट्विटर लिंक, 1 स्नैपचैट अकाउंट और 1 रेडिट अकाउंट। जबकि फेसबुक और ट्विटर (अब एक्स) को आदेश देना आम बात है, यह स्नैप को जारी किया गया पहला ब्लॉक करने का आदेश है।

प्रदर्शनकारी किसानों को मंगलवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी का समर्थन मिला, जिसमें उन्होंने दावा किया कि 'झूठ' फैलाया जा रहा है कि सरकार के बजट के तहत एमएसपी की गारंटी संभव नहीं है। एक्स पर एक पोस्ट में, गांधी ने दावा किया कि जब से कांग्रेस ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के लिए कानूनी गारंटी प्रदान करने का संकल्प लिया है, मोदी की प्रचार मशीनरी और उनके अनुकूल मीडिया ने एमएसपी पर झूठ का जाल फैलाया है। जिसमें भारत सरकार के बजट में एमएसपी की कानूनी गारंटी देना संभव नहीं है। राहुल ने अपने पोस्ट में कहा, क्रिसिल के अनुसार, 2022-23 में किसानों को एमएसपी देने से सरकार पर 21,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा, जो कुल बजट का केवल 0.4 प्रतिशत है। उन्होंने पूछा, जिस देश में 14 लाख करोड़ रुपये के बैंक ऋण माफ कर दिए गए हैं और 1.8 लाख करोड़ रुपये की कॉर्पोरेट कर छूट दी गई है, वहां किसानों पर थोड़ा सा खर्च भी उन्हें परेशान क्यों कर रहा है। गांधी ने तर्क दिया कि एमएसपी की कानूनी गारंटी से कृषि में (शेष पेज 9)

महाराष्ट्र सरकार ने मराठा समुदाय को दी राहत

पायनियर समाचार सेवा। मुंबई

गंभीर संदेह के बीच कि क्या विवादास्पद कानून सुप्रीम कोर्ट की जांच में पारित होगा, महाराष्ट्र विधानमंडल के दोनों सदनों ने मंगलवार को राज्य में मराठा समुदाय को शिक्षा और सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत आरक्षण देने वाला विधेयक पारित कर दिया। राज्य में राजनीतिक रूप से प्रभावशाली समुदाय को आरक्षण प्रदान करने के एक और प्रयास में, महाराष्ट्र विधानसभा और विधान परिषद ने सर्वसम्मति से महाराष्ट्र राज्य सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ा विधेयक, 2024 पारित किया, जिसमें सरकारी नौकरियों और शिक्षा में मराठा समुदाय को 10 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने मराठा आरक्षण पर विधानमंडल के एक दिवसीय विशेष सत्र के दौरान सदन में महाराष्ट्र राज्य सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ा विधेयक 2024 पेश किया। विधेयक को सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। इसमें कहा गया कि महाराष्ट्र की कुल आबादी में मराठों की हिस्सेदारी 28 प्रतिशत है। इसमें कहा गया है कि बड़ी संख्या में जातियां और समूह पहले से ही आरक्षित श्रेणी में हैं, जिन्हें कुल मिलाकर लगभग 52 प्रतिशत आरक्षण मिल रहा है। इसमें कहा गया है कि मराठा समुदाय को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी में रखना पूरी तरह से अनुचित होगा। विधेयक में कहा गया है कि मराठा वर्ग का पिछड़ापन पिछड़े वर्गों और विशेष रूप से ओबीसी से इस अर्थ में भिन्न और अलग है कि यह अपने प्रसार के मामले में अधिक व्यापक है, यह अपनी पैठ में भिन्न है और चरित्र में और अधिक प्रतिगामी है। विधेयक में यह भी प्रस्ताव किया गया है कि एक बार आरक्षण लागू हो जाने पर 10 साल बाद इसकी समीक्षा की जा सकती है। राज्य में वर्तमान में मौजूद 52 प्रतिशत आरक्षण में से, अनुसूचित जाति 13 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति 7 प्रतिशत, ओबीसी 19 प्रतिशत, विशेष पिछड़ा वर्ग 2 प्रतिशत, विमुक्त जाति 3 प्रतिशत, घुमंतू जनजाति (बी) 2.5 प्रतिशत, घुमंतू जनजाति (सी) (शेष पेज 9)

प्रधानमंत्री मोदी ने ममता बनर्जी को दिया संदेश

रडार पर संदेशखाली

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली/कोलकाता

पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के सदस्यों द्वारा महिलाओं के यौन उत्पीड़न के आरोपों पर राजनीतिक विवाद के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राज्य का दौरा करने की संभावना है और भाजपा के सूत्रों ने कहा कि सात मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस से एक दिन पहले बारासात में पीएम एक विशिष्ट महिला रैली को संबोधित करने की योजना बना रहे हैं। उत्तर 24-परगना जिले के मुख्यालय में रैली निर्धारित है, जहां संदेशखाली स्थित है। संदेशखाली इलाके में बड़ी संख्या में महिलाओं द्वारा तृणमूल कांग्रेस के कद्दावर नेता शाहजहां शेख और उनके समर्थकों पर जबरदस्ती जमीन हड़पने और यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाए जाने से तनाव व्याप्त है। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि यह पूरी तरह तय है कि पीएम का दौरा आम चुनावों की घोषणा से पहले मार्च की शुरुआत में होगा क्योंकि आदर्श आचार संहिता लागू हो जाएगी।

पार्टी नेता ने कहा, 'पीएम मोदी जल्द ही पश्चिम बंगाल का दौरा करेंगे क्योंकि कई परियोजनाएं कतार में हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रधानमंत्री संदेशखाली में हुई घटना को लेकर चिंतित हैं और पार्टी पहली बार महिला रैली की योजना बना रही है क्योंकि एनडीए सरकार विशेष रूप से महिलाओं के कल्याण और उनसे संबंधित योजनाओं के लिए काम कर रही है।' पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कहा कि प्रधानमंत्री एक महिला रैली को संबोधित करने के लिए सात मार्च को बारासात जा सकते हैं। मजूमदार को पिछले सप्ताह चोटों के कारण अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था क्योंकि संदेशखली जाने से रोके जाने के बाद भाजपा कार्यकर्ता पुलिस कर्मियों से भिड़ गए थे। राज्य भाजपा अध्यक्ष, पार्टी के अन्य नेताओं और पार्टी की एक केंद्रीय तथ्यान्वेषी टीम को पुलिस ने क्षेत्र का (शेष पेज 9)

अनुच्छेद 370 बना इतिहास, जम्मू कश्मीर का एकीकरण तयः पीएम

मोहित कंडारी। जम्मू

जम्मू में मंगलवार को विभिन्न परियोजनाओं की आधारशिला रखने और उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

डोगरा की भूमि से भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा अभियान की शुरुआत करते हुए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को लोगों से आग्रह किया कि '(2024 लोकसभा) चुनावों में भाजपा को 370 सीटें और एनडीए को 400 सीटें जीतने में मदद करें।' यहां जम्मू के मौलाना आजाद खेल स्टेडियम में 32,000 करोड़ रुपये की विकासात्मक परियोजनाओं का उद्घाटन करने के बाद खचाखच भरी सभा को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि अनुच्छेद 370, जिसे 2019 में खत्म कर दिया गया था, जम्मू-कश्मीर के विकास में सबसे बड़ी बाधा थी। समृद्ध जम्मू-कश्मीर के लिए अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए, मोदी ने स्विट्जरलैंड जैसे प्रतिद्वंद्वी अंतरराष्ट्रीय स्थलों के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण करने की कसम खाई। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा, 'हमने एक विकसित जम्मू-कश्मीर का संकल्प लिया है और मुझे पूरा विश्वास है कि हम जम्मू-कश्मीर को और अधिक विकसित बनाएंगे और अगले कुछ वर्षों में आपके सभी सपनों को पूरा करेंगे... हम कश्मीर में ऐसा बुनियादी ढांचा तैयार करेंगे कि लोग स्विट्जरलैंड जाना भूल जाएंगे।' मोदी ने पिछले साल इस क्षेत्र में आयोजित जी20 कार्यक्रम के बाद खाड़ी देशों से निवेश में वृद्धि पर भी प्रकाश डाला, जिसने इसकी प्राकृतिक सुंदरता पर वैश्विक ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि जम्मू-कश्मीर में पिछले साल 2 करोड़ से अधिक पर्यटक आए, जबकि अमरनाथ जी और श्री माता वैष्णो देवी के दर्शन करने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या पिछले दशक में सबसे अधिक हो गई है। प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि बुनियादी ढांचे के तेजी से विकास को देखते हुए पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी।

सभा को संबोधित करने से पहले मोदी ने पद्मा सचदेव का प्रसिद्ध डोगरी दोहा 'मिट्ठदी-ए-डोगरी दी बोली ते खंड मीठे लोग डोगरे' भी सुनाया। पहाड़ी जातीय समूह को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने वाले विधेयक के पारित होने के जवाब में राजौरी और पुंछ के सीमावर्ती जिलों से बड़ी संख्या में लोगों ने सार्वजनिक रैली में भाग लिया। सार्वजनिक रैली में वरिष्ठ पहाड़ी नेता मुजफ्फर हुसैन बेग, सैयद मुश्ताक बुखारी और शहनाज़ गनई भी शामिल हुए।

अपने आधे घंटे से ज्यादा लंबे भाषण में मोदी ने वंशवादी शासकों पर भी निशाना साधा। मोदी ने कहा, 'वंशवादी शासकों को केवल अपने हितों की चिंता थी। उन्हें युवाओं और उनके परिवारों के भविष्य की कोई चिंता नहीं थी क्योंकि उन्हें केवल अपने परिवारों की चिंता थी। जिस सरकार की प्राथमिकता सिर्फ एक परिवार का कल्याण हो आम लोगों के कल्याण के लिए वह सोच भी नहीं सकती।' मोदी ने कांग्रेस, नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी (शेष पेज 9)

सोनिया, वैष्णव सहित कई राज्यसभा सदस्य चुने गए

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राज्यसभा में अपना पहला कार्यकाल चिह्नित करते हुए वरिष्ठ कांग्रेस नेता सोनिया गांधी मंगलवार को राजस्थान से राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुनी गईं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव, एल मुरुगन और कई चुनावी राज्यों और विभिन्न दलों के कई अन्य उम्मीदवारों को गुजरात, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र और राजस्थान से राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। गुजरात मेंभाजपा के सभी चार उम्मीदवार राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुने गए. भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, हीरा कारोबारी गोविंदभाई ढोलकिया, मयंक नायक और डॉ. जसवन्तसिंह परमार को गुजरात से राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया है। चूंकि गुजरात से चार रिक्त सीटों पर राज्यसभा चुनाव के लिए किसी अन्य उम्मीदवार ने अपना नामांकन दाखिल नहीं किया था, इसलिए तीन नेता मंगलवार को निर्विरोध राज्यसभा के लिए चुने गए। ओडिशा में सभी तीन उम्मीदवार निर्विरोध चुने गए- देबाशीष सामंतराय, सुभाशीष खुंटिया और केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव।

उत्तराखंड भाजपा प्रमुख महेंद्र भट्ट राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुने गए। उच्च सदन सीट के लिए उनका निर्विरोध निर्वाचन तय था क्योंकि कोई अन्य उम्मीदवार मैदान में नहीं उतरा था। राज्यसभा चुनाव के लिए मैदान में उतरे (शेष पेज 9)

कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच अब भी असमंजस बरकरार

प्रीतम श्रीवास्तव। लखनऊ

आगामी संसद चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को चुनौती देने के उद्देश्य से गठित इंडिया गठबंधन में समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव और कांग्रेस के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। वर्तमान हालात में दोनों के बीच जारी गतिरोध समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। ताजा दरार उस समय दिखाई दी जब सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होने से इनकार करते हुए कांग्रेस से तत्काल सीट समायोजन समझौते की मांग की है। इससे पहले जयंत चौधरी के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) पहले ही इंडिया गठबंधन से किनारा कर लिया है। यात्रा में भाग लेने से पहले अखिलेश यादव के सीट-बंटवारे समझौते के आग्रह ने मामले को और अधिक जटिल बना दिया है।

अमेठी या रायबरेली में यात्रा में शामिल होने के पहले के संकेतों के बावजूद, यादव दोनों जिलों में अनुपस्थित रहे, जो उनके असंतोष का संकेत है। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी दोनों के परस्पर विरोधी बयानों ने गठबंधन को लेकर अनिश्चितता बढ़ा दी है। जहां कांग्रेस साझेदारी को लगभग अंतिम रूप दे रही है, वहीं समाजवादी पार्टी के सूत्रों ने इसकी व्यवहार्यता पर संदेह व्यक्त किया है। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल सीट-बंटवारे की बातचीत को लेकर आशावादी बने हुए हैं और जल्द ही सकारात्मक नतीजे आने का संकेत दे रहे हैं। हालाँकि, समाजवादी पार्टी खेमे के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि अंतिम समझौते के बिना यात्रा में भाग लेने के लिए यादव की अनिच्छा का हवाला देते हुए, उत्तर प्रदेश में गठबंधन की बातचीत टूटने की कगार पर है। एसपी-कांग्रेस गठबंधन के संभावित टूट से पहले कमजोर पड़ते इंडिया गठबंधन पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है, जिसका उद्देश्य 2024 के आम चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए को चुनौती देना है।

वहीं बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने कांग्रेस की पेशकश को अस्वीकार करने और स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ने के हालिया फैसले व अन्य घटनाक्रम ने विपक्षी खेमों के भीतर कलह को और बढ़ा दिया है। वहीं कांग्रेस सपा के बीच सीट आवंटन वार्ता में बिजनौर, अमरोहा और संभल जैसी प्रमुख सीटें विवाद का केंद्र बिंदु बन गए हैं। कोई भी पार्टी समझौता करने को तैयार नहीं है, इसलिए गतिरोध बना हुआ है, रालोद के गठबंधन से अलग होने से यह और बढ़ गया है। शुरुआत में, कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में 15 सीटों की मांग की थी, लेकिन आरएलडी के बाहर निकलने के साथ, मांग को संशोधित कर 20 सीटें कर दिया गया है, जबकि समाजवादी पार्टी केवल 17 सीटें देने को तैयार है। इस गतिरोध के बीच, दोनों दल अड़े हुए हैं, जिससे गतिरोध बढ़ गया है। पिछले गठबंधनों को प्रतिबिंबित करते हुए, 2017 के विधानसभा चुनावों में असफल 'यूपी के लड़के' चुनाव गठबंधन और 2019 के लोकसभा चुनावों में असफल एसपी-बीएसपी-आरएलडी गठबंधन सतर्क कहानियों के रूप में काम करते हैं। ठोस प्रयासों के बावजूद, सहयोगी दलों के बीच वोटों का हस्तांतरण नहीं हो सका, जिसके परिणामस्वरूप चुनावी झटके लगे। इन अनुभवों के आलोक में, समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश में भाजपा के प्रभुत्व का मुकाबला करने में कांग्रेस को एक संपत्ति के बजाय एक बाधा के रूप में देखती है। हालाँकि, उत्तर प्रदेश के चुनावी परिदृश्य की जटिलताएँ अकेले चुनाव लड़ने की चुनौतियों को (शेष पेज 9)

पायनियर
नई दिल्ली, बुधवार, 21 फरवरी, 2024

देश की सभी महिलाएं आत्मनिर्भर बनें: राज्यपाल

आनंदी पटेल ने नोएडा में सरस आजीविका मेल का किया निरीक्षण, दीदियों से रूबरू हुईं

● सांसद महेश शर्मा, पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह व अन्य अधिकारी रहे मौजूद

सेक्टर-33 ए स्थित नोएडा हाट में आयोजित सरस आजीविका मेले में पहुंचीं यूपी की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल व अन्य।

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

सेक्टर-33 ए स्थित नोएडा हाट में आयोजित सरस आजीविका मेला-2024 में पांचवें दिन मंगलवार को उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने भ्रमण किया।

मेले में विभिन्न राज्यों के स्वयं सहायता समूहों द्वारा लगाए गए स्टालों पर पहुंचकर राज्यपाल ने दीदियों की हस्तशिल्प कला को परखा और उनकी सराहना की।

राज्यपाल श्रीमती पटेल ने विभिन्न समूह की दीदियों के साथ वार्ता कर उनके कारोबार की जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने इस आयोजन के लिए केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थान एनआईआरडीपीआर के प्रयासों की सराहना की। दीदियों को दिए संदेश में राज्यपाल ने कहा केंद्र एवं राज्य सरकार का प्रयास है कि देश की सभी महिलाएं आत्मनिर्भर बनें।

इसी कड़ी में सरस आजीविका मेलों का आयोजन देशभर के सभी राज्यों में किया जाता है। चूंकि यह मेला उत्तर प्रदेश के नोएडा में आयोजित हो रहा है, तो इस अवसर पर मैं, देशभर के सभी राज्यों से आयी अपनी सभी बहनों का यहाँ नोएडा हाट में स्वागत करती हूँ। उन्होंने सभी दीदियों में अपना स्वरोजगार स्थापित कर आत्मनिर्भर बनने का जोश भर दिया। मेले में दूरदराज से आयी सभी दीदियों ने सम्बोधन के बीच तालियों की गड़गड़ाहट के साथ राज्यपाल का स्वागत किया। राज्यपाल ने कहा कि आज वह समय है कि हमारी कोई भी बहन और कोई भी बेटी खाली न बैठे। सभी के पास अपना खुद का रोजगार हो। इस अवसर वह समूह की 10 दीदियों से रूबरू हुईं। जिनमें 3 दीदी रुमीना अहाद, अमरजीत कौर और चंदू देवी फू ड कोर्ट से तथा भावना, रेनू तिरके, गीता, प्रणिता, लिमा गोगोई, आयेशा और नेहा सिंह शामिल रहीं। इस अवसर पर यहाँ स्थानीय सांसद डॉ महेश शर्मा, एमएलसी श्रीचंद शर्मा, केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय की संयुक्त सचिव स्वाति शर्मा, जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा, पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह, नोएडा प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम, एडीएम प्रशासन नितिन मदान तथा एनआईआरडीपीआर के सहायक निदेशक चिरंजी लाल कटारिया के सहित जनपद के प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

मेले में पांचवें दिन भारी संख्या में खरीदारों की भीड़ उमड़ी

मेले में पांचवें दिन भारी संख्या में खरीदारों की भीड़ उमड़ी। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थान एनआईआरडीपीआर द्वारा समर्थित इस सरस आजीविका मेला 2024 में ग्रामीण भारत की शिल्प कलाओं का मुख्य रूप से प्रदर्शन किया जा रहा है।

एनआईआरडीपीआर के सहायक निदेशक चिरंजीलाल कटारिया ने बताया कि 16 फरवरी से 4 मार्च 2024 तक चलने वाले इस उत्सव में नोएडा के नोएडा हाट में मौजूद करीब 29 राज्यों के 400 से अधिक महिला शिल्प कलाकार, जो परंपरा, हस्तकला एवं ग्रामीण संस्कृति तथा स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं, इसके साथ ही 85 से ज्यादा

सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। स्थानीय स्तर पर भी मेले में इस बार हैंडलूम तथा हैंडीक्राफ्ट के उत्पाद शामिल किए गए है, जो लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। बच्चों के खेलकूद व मनोरंजन के लिए भी यहाँ संसाधन मौजूद हैं। दर्शकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सरकार की ओर से तमाम व्यवस्थाएं की गयी हैं। इंडिया फूड कोर्ट सरस आजीविका मेले में आकर्षण का केंद्र बन रहा है।

कजाकिस्तान की महिला गाजियाबाद में चला रही थी सेक्स रैकेट

गाजियाबाद। गाजियाबाद के थाना शालीमार गार्डन क्षेत्र में पुलिस ने रेड करके एक सेक्स रैकेट का पर्दाफाश किया है। पुलिस को यहां से एक कजाकिस्तान की महिला भी मिली है। इसके अलावा तीन अन्य महिलाएं और चार युवकों को मौके से पुलिस ने पकड़ा है। विदेशी महिला से खुफिया विभाग पूछताछ कर रहा है।

एसीपी शालीमार गार्डन सिद्धार्थ गौतम ने बताया कि उन्हें मुखबिर से सूचना मिली थी के इलाके में विदेशी महिला सेक्स रैकेट चला रही है।

इसके बाद उन्होंने महिला फोर्स और अन्य फोर्स इकट्ठा करके बताए गए फ्लैट पर रेड करी तो वहां कजाकिस्तान की महिला मारिया मिली। उसके साथ ही अन्य दो महिला भी पुलिस ने पकड़ी। उनके साथ चार युवक आमिर, आसिफ , अभिषेक और रोहित भी पुलिस ने पकड़े।

जीएसटी चोरी में 7 आरोपियों की संपत्ति होगी कुर्क

● कोर्ट के आदेश पर नोएडा कमिश्नरेट पुलिस ने शरू की कार्रवाई

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

तीन हजार से अधिक फर्जी फर्म तैयार कर करीब 15 हजार करोड़ रुपए की जीएसटी का नुकसान पहुंचाने वाले गिरोह के सात आरोपियों की चल और अचल संपत्ति को नोएडा पुलिस कुर्क करेगी। इसके लिए कोर्ट की तरफ से कुर्की वारंट जारी किया गया है। इन आरोपियों के 21 संपत्तियों को पुलिस कुर्क करेगी।

नोएडा कमिश्नरेट पुलिस कोर्ट के आदेश के बाद तैयारी में जुट गई है। जिन आरोपियों की संपत्ति को कुर्क किया जाएगा उनमें आदर्श नगर दिल्ली निवासी अंचित गोयल, इसके पिता प्रदीप गोयल, रोहिणी दिल्ली निवासी अर्जित गोयल, हिसार हरियाणा निवासी कुनाल मेहता उर्फ गोल्डी, हिसार निवासी बलदेव उर्फ बल्ली, मुबारकपुर दिल्ली निवासी विकास डबास और रोहिणी निवासी रोहित नागपाल शामिल हैं। पूर्व में आरोपियों के घर पर नोटिस चस्पा किया गया था।

इसके बाद भी वह अदालत के समक्ष पेश नहीं हुए। पुलिस लगातार आरोपियों को खोज रही है, लेकिन उनका कुछ पता नहीं चला। इस मामले में अब तक 29 आरोपियों की गिरफ्तारी देश के अलग-अलग हिस्से से हुई है।

नोएडा पुलिस नौ आरोपियों पर 25-25 हजार रुपए का इनाम भी घोषित कर चुकी है। अभी भी कई आरोपी पुलिस की पकड़ से बाहर हैं।

बिल्डर ने बंद परियोजना में बेच डाला फ्लैट

● 10 साल बाद भी न तो प्रोजेक्ट का पता है और न ही मिला घर

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

दिल्ली-एनसीआर में सुपरटेक बिल्डर के शिकार बने सैकड़ों बॉयर्स आज भी अपने फ्लैट हासिल करने के लिए लड़ रहे हैं। इस महाठगबाज बिल्डर कंपनी की कारस्तानी दुनिया के सामने आ चुकी है। अब इस महाठगबाज बिल्डर कंपनी ने बंद पड़े प्रोजेक्ट में फ्लैट बेच डाला है। 10 साल बाद भी न तो प्रोजेक्ट का पता है और न ही फ्लैट का। न्यायालय के आदेश पर थाना सेक्टर-39 में सुपटेक बिल्डर के चेयरमैन व निदेशकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गयी है।

एफ आईआर लिखवाने वाले पवन शर्मा पुत्र ओमप्रकाश शर्मा निवासी चन्द्रलोक कालोनी शाहदरा, दिल्ली ने आरोप लगाया है कि उन्होंने सुपरटेक बिल्डर्स के गोल्फ विलेज प्रोजेक्ट में वर्ष.2013 में एक फ्लैट बुक कराया था। फ्लैट की कीमत 24 लाख 67 हजार रूपये थी। उन्होंने इसके लिए 1 लाख 82 हजार रूपये बुकिंग राशि भी दी थी। पवन शर्मा ने बिल्डर कंपनी सुपरटेक टाउनशिप प्रोजेक्ट लिमिटेड को 17 लाख 67 हजार रूपये का भुगतान चैकों के माध्यम से किया। सुपरटेक बिल्डर ने 2017 तक फ्लैट का कब्जा व रजिस्ट्री कराने का आश्वासन दिया था। लेकिन 10 वर्ष बीत जाने के बाद भी कंपनी ने गोल्फविलेज प्रोजेक्ट का निर्माण नहीं किया है। इस प्रोजेक्ट में 25 प्रतिशत भी निर्माण नहीं हुआ है। पवन शर्मा ने आरोप लगाया कि जब वह फ्लैट के संबंध में कंपनी के चेयरमैन आरके अरोड़ा व मैनेजिंग निदेशक मोहित अरोड़ा से मिले तो उन्होंने उसके साथ मारपीट की और कार्यालय से धक्का देकर बाहर निकाल दिया। पीड़ित पवन शर्मा का आरोप है कि सुपरटेक बिल्डर के चेयरमैन आरके अरोड़ा व उनके साथियों ने उन्हें धमकी दी है कि यदि पैसे व फ्लैट की बात की तो अच्छा नहीं होगा।

पीड़ित पवन शर्मा की शिकायत पर सुपरटेक बिल्डर के चेयरमैन आरके अरोड़ा, निदेशक मोहित अरोड़ा, सह मैनेजिंग निदेशक संगीता अरोड़ा, निदेशक कृष्ण गोपाल अरोड़ा, शैलेन्द्र कुमार, निदेशक गुलशन लाल खेरा व विकास कंसल के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई।

संक्षिप्त समाचार

कैब चालक से लूटपाट करने वाला गिरफ्तार

गाजियाबाद। गाजियाबाद में टीवी चैनल के कैब ड्राइवर से गन पॉइंट पर हुई लूट में शामिल एक बदमाश एनकाउंटर में पकड़ा गया। झाड़ियों में छिपी गन बरामद कराने के बहाने आरोपी ने पुलिस पर फायर झोंक दिया। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने भी गोली चलाई, जो उसके पैर में जा लगी। पुलिस को अब घायल बदमाश के दो साथियों की तलाश है।कैब के ड्राइवर अमर सिंह 13 फरवरी की सुबह स्टाफ को पिक करने गाजियाबाद के इंदिरापुरम क्षेत्र में आए थे। तभी गन पॉइंट पर बदमाशों ने उन्हें अगवा कर लिया। दो बदमाश कैब के अंदर बैठ गए। उन्हें एटीएम पर ले गए। वहां से 10 हजार रुपए निकलवाए। इसके बाद वे कैब ड्राइवर से कैश, मोबाइल लूटकर फरार हो गए। इस दौरान स्पलेंडर बाइक सवार एक संदिग्ध रोका गया। पूछताछ में उसने खुद को गणेश निवासी मयूर विहार दिल्ली बताया। छानबीन में उस पर लूट के कई मुकदमे निकले। बाद में आरोपी ने कैब ड्राइवर से लूट की बात कुबूली।

डीएम ने लाभार्थियों को दिए प्रमाण पत्र

गाजियाबाद। इस माह शनिवार के बजाए आज सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। डीएम इन्द्र विक्रम सिंह ने मोदीनगर तहसील में समाधान दिवस में लोगों की शिकायतें सुनी। बडी संख्या में फरियादी डीएम के समक्ष अपनी शिकायतें लेकर पहुंचे। समाधान दिवस के दौरान डीएम श्रम विभाग द्वारा मृत्यु एवं विकलांगता सहायता और महिला शिशु एवं बालिका मदद योजना की सहायता राशि के पांच लाभार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। इस अवसर पर सीडीओ अभिनव गोपाल, सीएमओ डॉ भवतोष शंखधर, डीडीओ प्रज्ञा श्रीवास्वत, एसडीएम मोदीनगर पूजा गुप्ता, एसडीएम न्यायिक राजेन्द्र कुमार शुक्ला मौजूद रहे। वहीं तहसील सदर में आयोजित हुए सम्पूर्ण समाधान दिवस में एडीएम प्रशासन रणविजय सिंह ने फरियादियों की शिकायतों को सुना। इस अवसर पर एसडीएम सदर अरूण दीक्षित, तहसीलदार रवि प्रकाश आदि मौजूद रहे।

भाजपा ने की विधानसभा प्रभारियों की नियुक्ति

गाजियाबाद। लोकसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा ने आज विधानसभा प्रभारियों की नियुक्ति कर दी है। गाजियाबाद लोकसभा सीट के तहत आने वाली लोनी विधानसभा के लिए सत्यवीर राघव, मुरादनगर विधानसभा के लिए रकम सिंह भाटी, साहिबाबाद के लिए सुखविंद्र सोम, गाजियाबाद विधानसभा के लिए राकेश शर्मा और धौलाना विधानसभा के लिए सरदार एसपी सिंह को विधानसभा प्रभारी नियुक्त किया गया। ये नियुक्तियां क्षेत्रीय सतेंद्र सिसौदिया ने की।

घर से गई तीन किशोरियां नहीं लौटी वापस

नोएडा। जनपद के दो थाना क्षेत्र से तीन किशोरियों संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई एक किशोरी के परिजन ने एक युवक के खिलाफ अपहरण का मुकदमा दर्ज कराया है। थाना सूरजपुर क्षेत्र के अंबेडकर मोहल्ला में रहने वाले देव काल्पनिक नाम ने बताया कि उसकी 17 वर्षीय बहन 8 फरवरी को घर से बिना बताए चली गई थी परिजनों ने उसकी काफी तलाश की लेकिन उसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। इसी थाना क्षेत्र के साकीपुर गांव में किराए पर रहने वाले विनय काल्पनिक नाम ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उनके 14 वर्षीय बेटी 16 फरवरी की सुबह घर से बिना बताए चली गई थी देर शाम तक वापस न आने पर परिजनों ने उसकी तलाश की लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। वहीं थाना बीटा-2 क्षेत्र के सेक्टर चाई तीन में रहने वाली रेखा काल्पनिक नाम ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उसकी 16 वर्षीय बेटी 16 फरवरी की सुबह घर से बाहर गई थी। इसके बाद वह वापस घर नहीं लौटी। रेखा के मुताबिक उसकी बेटी पड़ोस में रहने वाले शिवम नाम के लडके से अक्सर बात करती थी। उन्होंने आशंका जताई कि शिवम ही उसकी बेटी को बहला फुसलाकर भगा ले गया है। पुलिस के मुताबिक पीड़ितों की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और किशोरियों की तलाश की जा रही है।

मां की मौत, पिता को कैंसर और अब बेटे ने लगाई बिल्डिंग से छलांग

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गुडगांव की एक कंपनी में बिजनेस एनालिसिस का कार्य करने वाले युवक ने मानसिक तनाव के चलते तीसरी मंजिल से छलांग लगा दी। गंभीर स्थिति में परिजनों ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया जहां उसकी मौत हो गई। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि युवक की मां की कुछ समय पूर्व ही मौत हुई थी और उसके पिता भी कैंसर पीड़ित हैं।

थाना बिसरख क्षेत्र के मां हाइट्स वृंदावन गार्डन कॉलोनी शाहबेरी में रहने वाले 37 वर्षीय फरहाद हसन पुत्र मुराद हसन बीती रात तीसरी मंजिल से संदिग्ध परिस्थितियों में नीचे गिर गए गंभीर स्थिति में परिजन व पड़ोसी उन्हें उपचार के लिए वृंदावन अस्पताल लेकर पहुंचे जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक फरहाद हसन ने तीसरी मंजिल से छलांग लगाई थी। थाना प्रभारी ने बताया कि प्रारंभिक जांच में पता चला है कि हसन गुडगांव में बिजनेस एनालिसिस का कार्य करता था।

फरहाद की मां का कुछ समय पूर्व निधन हुआ था और उसके पिता कैंसर से पीड़ित है इस कारण वह पिछले काफी समय से डिप्रेशन में चल रहा था। उन्होंने आशंका व्यक्त की कि उसने डिप्रेशन के चलते ही आत्महत्या की है।

डाटा सेंटर व सेमी कंडक्टर से आकर्षित होंगे बड़े निवेशक

● अभी केवल पांच कंपनियां ही 90 हजार करोड़ रुपये लगा रही

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा अब देश को क्लाउड स्टोरेज और सेमी कंडक्टर उपलब्ध कराने वाली आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों का हब बनने जा रहा है।

सोमवार को लखनऊ में नोएडा और ग्रेटर नोएडा सहित पूरे गौतमबुद्ध नगर जिले के लिए 2.95 लाख करोड़ रुपये के जिन प्रोजेक्टों पर काम शुरू होने के लिए नोएडा में भूमिपूजन किया गया। उनमें से करीब 40 फसदी निवेश केवल डाटा सेंटर की स्थापना, सेमी कंडक्टर उत्पादन प्लांट और मोबाइल और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद बनाने के लिए किया जाएगा। इन प्रोजेक्टों के लिए ग्रेटर नोएडा और यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में जमीन उपलब्ध कराई गई है।

नोएडा में जिला उद्योग बंधु के रिकॉर्ड के मुताबिक डाटा सेंटर बनाने के लिए एनआईडीपी डेवपलर्स कंपनी सबसे बड़ी निवेशक के रूप में सामने आई है। ये कंपनी नोएडा सहित जिले में करीब 30 हजार करोड़ का निवेश कंपनी कर रही है। इसके अलावा एसटीटी ग्लोबल, सिफी इंफानाइट, वीएएलएस डेवलपर्स जैसी कंपनियां भी क्लाउड स्टोरेज सर्विस और डाटा सेंटर में अच्छा खासा निवेश नोएडा में कर रही हैं। आपको बता दें कि नोएडा में डाटा सेंटर प्रोजेक्ट के बाद हीरानंदानी समूह अपनी सहयोगी कंपनी टार्क सेमीकंडक्टर्स बिजनेस पर निवेश कर रहा है। इन पांच कंपनियों का कुल निवेश ही करीब 90 हजार करोड़ रुपये होगा।

प्रोजेक्ट से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक निवेश से तीन से पांच वर्ष में रोजगार मिलना शुरू कर हो जाएगा। नोएडा डाटा सेंटर और सेमी कंडक्टर निर्माण के लिए प्रमुख केंद्र बन जाएगा। वहीं इससे करीब पांच हजार आईटी विशेषज्ञों के लिए नोएडा और ग्रेटर नोएडा में रोजगार के मौके उपलब्ध होंगे। नोएडा में एख बार फिर से चीन की कंपनी मोबाइल फोन के निर्माण को भी विस्तार देगी। ग्रेटर नोएडा के बाद अब यीडा क्षेत्र में भी 6990 करोड़ का निवेश कर प्लांट लगाएगी। इससे 38000 लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। वहीं नीदरलैंड की कंपनी इंग्का समूह अपनी आइकिया फर्नीचर चेन और उत्पाद निर्माण के लिए 4300 करोड़ का निवेश नोएडा करेगा। आइकिया भी सोमवार को हुए भूमिपूजन में शामिल हुई है।

इसके लिए करीब 4000 करोड़ का निवेश कंपनी कर रही है। गौतमबुद्ध नगर में निवेश का आकलन करें तो आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों के लिए केंद्र बन रहे हैं। वहीं नोएडा में सबसे अधिक निवेश रियल एस्टेट प्रोजेक्टों में आएगा।

नोएडा अतिरिक्त पुलिस आयुक्त कानून-व्यवस्था ने यूपी-112 द्वारा शिकायतों का त्वरित समाधान करने का निर्देश दिया।

दवा बनाने वाली कंपनी में लगी भीषण आग

● लाखों का माल जलकर राख

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा की दवा बनाने वाली एक फैक्ट्री में आग लग गई। आग फैक्ट्री के ऊपरी हिस्से के टीन शेड में लगी। यहां एसी में शॉट सर्किट हुआ। जिससे टीन शेड के नीचे रखी दवा और पुरानी किताबों और ऑफिस की फाइलों में लग गई। आग तेजी से फैली। वहां मौजूद लोगों ने शोर मचाया। साथ ही गार्ड ने तत्काल फायर विभाग को इसकी जानकारी दी। पूरी फैक्ट्री में काम कर रहे लोग बाहर आ गए। दमकल की छह गाड़ियों ने आग पर काबू पाया।

सीएफओ प्रदीप चौबे ने बताया कि सेक्टर-3 में चिस्टेनी हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड है। यहां दवा बनाने का काम किया जाता है। दोपहर करीब डेढ़ बजे के आसपास फैक्ट्री में आग लगने की जानकारी मिली। इसके बाद एक एक करके दमकल विभाग की गाड़ी मौके पर रवाना की गई। करीब एक से डेढ़ घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। इस हादसे में कोई जन हानि नहीं हुई है। हालांकि फैक्ट्री में रखा मॉल जलकर राख हो गया। गनीमत रही कि आग नीचे की ओर नहीं फैली। अन्यथा नुकसान ज्यादा होता। एहतियात के तौर पर आसपास की फैक्ट्री के लोगों को भी बाहर निकाल दिया गया था। ताकि यदि आग फैले तो कोई जनहानि नहीं हो। आग फैलने से पहले ही उस पर काबू पा लिया गया। इस दौरान जीने से पाइप लाइन को ऊपर तक लाया गया।

गाजियाबाद के थाना नंदग्राम इलाके के मेरठ रोड पर लगे ट्रांसफार्मर में आग लग गई। आग किन कारणों से लगी इसकी जांच दमकल विभाग कर रहा है। आग इतनी भीषण थी की आसपास के बोर्ड को भी उसने अपनी चपेट में ले लिया। ट्रांसफार्मर के आसपास कूड़ा जमा था। एक कारण कूड़े में आग लगाया जाना हो सकता है। फिलहाल आग पर दमकल विभाग ने काबू पा लिय है।

बहू ने ससुर पर लगाये आपत्तिजनक वीडियो बनाने का आरोप, केस दर्ज

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में एक महिला ने अपने सुसर पर आपत्तिजनक वीडियो बनाने का आरोप लगाया है।

पीड़िता ने अपने ससुराल वालों के खिलाफ थाना सूरजपुर में मुकदमा दर्ज कराया है। ग्रेटर नोएडा में रहने वाली प्रिया काल्पनिक नाम ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि उसकी शादी 24 नवंबर 2020 में एलिट गोल्फ ग्रीन्स निवासी मोहित मोहन के साथ हुई थी। शादी के एक-दो दिन बाद ही उसके पति मोहित मोहन व घर वालों ने उसके साथ गाली-गलौज मारपीट करनी शुरू कर दी। ससुराल वाले उस पर मायके से 25 लाख रुपए नगर तथा फॉर्च्यूनर गाड़ी लाने का दवाब डालने लगे। उसके इनकार करने पर उसके साथ अक्सर गाली गलौज की जाने लगी। इस दौरान उसकी सास ने उसके सभी जेवर लॉकर में रखवा लिए। प्रिया का आरोप है कि उसके पति मोहन का रश्मि सिंह नामक महिला से अवैध संबंध थे उसने एक दिन दोनों को आपत्तिजनक स्थिति में घर में ही पकड़ लिया था। जिस पर जिसके साथ मारपीट की गई।

प्रिया के मुताबिक उसने जब इस बारे में अपने सास.ससुर से बात की तो उल्टा उन्होंने उसे पर परिवार को बदनाम करने का आरोप जड़ दिया। 29 अगस्त 2023 को उसके ससुर ने उसके साथ छेड़छाड़ की। उसने जब अपने ससुराल वालों से इसकी शिकायत की तो उन्होंने उल्टा उसके साथ मारपीट की और जान से मारने की नीयत से गला दबा दिया।

गौतमबुद्धनगर की जमीं पर बनेगा सौर मंडल पार्क

● सेक्टर-167 में करीब 29 एकड़ क्षेत्रफल में नोएडा प्राधिकरण करेगा निर्माण

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

प्रतीकात्मक फोटो

वेदवन पार्क, बायोडायवर्सिटी पार्क औषधि पार्क के बाद अब नोएडा के लोग खगोल पर आधारित एक नायाब पार्क को मंजर का लुत्फ उठा सकेंगे।

यह पार्क न सिर्फ मनोरंजन बल्कि ज्ञानवर्धन का भी प्रमुख केन्द्र साबित होगा। दरअसल नोएडा प्राधिकरण सेक्टर-167 में करीब 29 एकड़ क्षेत्रफ ल में सौर मंडल पर आधारित पार्क बनाने जा रहा है। जिसमें सूर्य के अलावा सभी नवग्रहों को प्रदर्शित किया जाएगा। नोएडा प्राधिकरण से मिली जानकारी के अनुसार यह पार्क शहर के सेक्टर-167 में तैयार किया जाएगा। जिसका क्षेत्रफ्ल 29 एकड़ है। इस पार्क के लिए थीम की खोज की जा रही थी। शनिवार को हुई समीक्षा बैठक में एजेंसी ने सौर मंडल पर आधारित थीम का प्रजेंटेशन दिया। यह थीम मुख्य कार्यपालक अधिकारी को काफी पसंद आई है। थीम फ़ाइनल की जा चुकी है। सीईओ ने बताया कि पार्क में विकसित की जा रही झील पर खास ध्यान दिया जाना चाहिए। झील का वॉटर फ्लो बना रहना चाहिए। पानी को साफ करने के लिए अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग करना चाहिए। अधिकारियों का कहना है कि थीम फाइनल होने के बाद अब तेज़ी से पार्क विकसित किया जाएगा। इस पार्क में सौर मंडल के ग्रहों से जुड़ी जानकारी भी लोग पढ़ सकेंगे। ग्रहों के रंग वाले पत्थरों का उपयोग ग्रहों की आकृति बनाने के लिए किया जाएगा। सभी ग्रहों को उनके आकार के अनुपात में पार्क में तैयार किया जाएगा। इस सौर मंडल का केंद्र सूर्य होता है, बाकी 9 ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। 9 ग्रहों में बुध, शुक्र, पृथ्वी, शनि, मंगल, बृहस्पति, प्लूटो, नेप्च्युन और यूरेनस हैं। इनको साधारण भाषा में नवग्रह भी कहते हैं। पूजा पाठ के समय पण्डित के मुंह से नवग्रह की पूजा के बारे में जरुर सुना होगा। वैज्ञानिकों के अनुसार किसी समय एक विशाल उल्का या पुच्छल तारा अंतरिक्ष में घूमता-घूमता सूर्य के पास से गुजरा था। इससे सूर्य में व्याप्त पदार्थ के टुकड़े-टुकड़े हो गए। वे बंटकर नौ यह बन गए और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने लगे।

विधानसभा की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित

पानी के वन टाइम सेटलमेंट स्कीम रोकने पर आम आदमी पार्टी विधायकों का भाजपा के खिलाफ प्रदर्शन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पानी के गलत बिलों के समाधान का एक मुश्त निपटान को कैबिनेट में न लाने वाले अफसरों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग को लेकर आम आदमी पार्टी के विधायकों ने विधानसभा में किया हंगामा।

सत्ता पक्ष के सदस्यों ने उपराज्यपाल से आरोपी सचिवों को निलंबित करने की मांग को लेकर विधानसभा अध्यक्ष राम निवास गोयल के आसान के सामने पहुंच गए और हाथों में तख्तियां लेकर नारेबाजी करने लगे। गोयल ने आप सदस्यों को शांत करने की कोशिश की और उन्हें अपनी सीट पर बैठने के लिए कहा। लेकिन जब विधायकों ने वापस जाने से इंकार कर दिया तो उन्होंने सदन की कार्यवाही आधे घंटे के लिए स्थगित कर दी।

विधानसभा परिसर में विरोध प्रदर्शन करते आप के विधायक। फोटो: रंजन डिमरी

सदन की कार्यवाही जब दोबारा शुरू हुई तो आप विधायक फिर से आसन के सामने आ गए और नारे लगाने लगे। विस अध्यचा ने दोबारा विधायकों से अपनी सीटों पर वापस जाने का अनुरोध किया लेकिन वे नारे लगाते रहे। आखिरकार अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही बुधवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी। इसके बाद आम आदमी पार्टी के विधायक सदन के बाहर आकर गांधी प्रतिमा अए सामने बैठकर न केवल प्रदर्शन शुरू कर दिया बल्कि उपराज्यपाल के खिलाफ नारेबाजी भी की। उन्होंने मौखिक और तख्तियों पर लिखे नारों के सहारे दोषी अधिकारियों के तुरंत निलंबन की मांग की। इस दौरान उन्होंने भाजपा शर्म करो, एलजी अफसरों पर कार्रवाई करें समेत अन्य नारे लगाए। मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली में करीब 27 लाख लोग दिल्ली जल बोर्ड के उपभोक्ता हैं। उसमें से करीब 10 लाख 60 हजार यानि करीब 40 फीसदी उपभोक्ता ऐसे हैं जिन्होंने कई महीनों से अपने पानी का बिल नहीं दिया है।

इसका कारण भी यहीं है कि उनका पानी का बिल उनके खपत के कहीं ज्यादा आया है, और उनका मानना है कि इन बिलों में गड़बड़ी है। इससे कुल मिलाकर ऐसी स्थिति पैदा हो गई है जिसमें उपभोक्ता पैसा नहीं दे रह है और दूसरी तरफ जल बोर्ड अपना बिल कम नहीं कर रहा है।

इसके अलावा ब्याज और फाइन जुड़ने से लोगों का बिल लगातार बढ़ता ही जा रहा है। इस विषय में जल बोर्ड ने पिछले साल जब वह डीजेबी का अध्यक्ष थे तब वन टाइम सेटलेंट स्कीम पास की जिसके अंदर सारे उपभोक्ताओं के पानी के बिल की समस्याओं को हल करेंगे, ताकि वो अपने पुराने सही बिल के आधार पर औसतन एकमुश्त पैसे दे दें जिससे उनके बकाया बिल का एक बार में समाधान हो जाए और नए सिरे से फिर शुरुआत की जाए। वित्त मंत्री आतिशी ने कहा कि आज दिल्ली के लोगों की सबसे बड़ी परेशानी उनके घरों में आ रहे बढ़े हुए अनाप शनाप पानी के बिल।

ये समस्या लगातार पिछल एक डेढ़ साल से चल रही है। इस कारण कुछ हद तक ये भी है कि कोविज के दौरान मीटर रीडर्स ने बिना मीटर की रीडिंग लिए पानी के बिल बनाए और लोगों के ऊपर पानी के बिलों का पोझ बढ़ता गया। आज एक आम परिवार में भी किसी का 40 हजार, 80 हजार, 1 लाख तो किसी का डेढ़ लाख का पानी का बिल भी आ रहा है। अरविंद केजरीवाल की सरकार के तहत दिल्ली जल बोर्ड ने एक वन टाइम सेटलमेंट स्कीम लाने का निर्णय लिया, जिसके तहत आपके पुराने बिलों के औसत के अनुसार आपके बिल को ठीक किया जाएगा।

आज दिल्ली की जनता अपने पानी के बिलों के लिए ये वन टाइम सेटलमेंट स्कीम चाहती है। वित्त मंत्री आतिशी ने कहा कि उन्होंने एलजी से भी अनुरोध किया है कि इस प्रकार का संवैधानिक संकट पैदा मत होने दीजिए कि अफसर इस तरह से मंत्रियों की बात ही नहीं माने। आतिशी ने कहा कि भाजपा अफसरों के माध्यम से इस स्कीम को रोका तो केजरीवाल सरकार और उनका एक-एक सिपाही सड़क पर उतर कर संघर्ष करेगा और इस स्कीम को पास कराएगा।

सत्तापक्ष के विधायकों ने सदन में मेरे साथ किया दुर्व्यवहार : बिधूड़ी

नई दिल्ली। नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने सत्तापक्ष के विधायकों के सदन में किए गए आचरण के खिलाफ विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल से शिकायत की है।

उन्होंने अध्यक्ष से अनुरोध किया है कि आम आदमी पार्टी के विधायकों के खिलाफ कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाए। नेता प्रतिपक्ष ने सवाल किया कि जब भाजपा विधायकों को केवल अपनी बात कहने के लिए सदन से निलंबित कर दिया जाता है तो फिर सत्तापक्ष के विधायकों के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं। उन्होंने कहा है कि अब अध्यक्ष को घटना की फुटेज देखकर पूरी तरह से निष्पक्ष होकर कदम उठाना चाहिए। बिधूड़ी ने कहा कि जब सदन की कार्यवाही चल रही थी तो उस दौरान आम आदमी पार्टी के कई विधायक वेल में आ गए। उनके हाथों में तख्तियां थीं और वे वेल में आकर नेता प्रतिपक्ष की सीट तक पहुंच गए और उन्होंने घेर लिया और तख्तियां लहराने लगे। यही नहीं, कुछ विधायकों ने ये तख्तियां उनके मुंह पर लगा दीं और शोर मचाते रहे। बिधूड़ी ने कहा कि उन्होंने न केवल उनके खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग किया बल्कि भाजपा और शीर्ष नेतृत्व के प्रति भी आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल किया। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि उन्होंने विस अध्यक्ष से मांग की है कि निष्पक्ष होकर आप विधायकों के विरुद्ध समुचित कार्रवाई करें।

● बोलेः भाजपा विधायकों को केवल अपनी बात कहने पर निलंबित किया गया

संक्षिप्त समाचार

एसएसबी जवानों को योग के प्रति किया जागरूक

नई दिल्ली। टिगरी स्थित सीमा सुरक्षा बल (एसएसबी) कैंप में जवानों और उनके परिजनों को तीन दिवसीय योग शिविर में योग व स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया। इस शिविर का आयोजन निश्चय चेरिटेबल ट्रस्ट के संयोजन में किया गया। कार्यक्रम में सीमा सुरक्षा बल के अधिकारियों व जवानों ने भाग लिया। योग शिविर में योग प्रशिक्षक कौशल किशोर ने जवानों को ड्यूटी के दौरान तनाव को कम करने के लिए योग आसनों व प्राणायम की विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम की समाप्ति पर बीआईसीआईटी महानिरीक्षक इन्दराज सिंह योग प्रशिक्षक कौशल किशोर तथा ट्रस्ट के संचालकों को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

स्वच्छ जल, स्वच्छ मन मुहिम 25 से

नई दिल्ली। निरंकारी मिशन के प्रोजेक्ट अमृत के अंतर्गत स्वच्छ जल, स्वच्छ मन का दूसरा चरण 25 को सतगुरु माता सुदीक्षा एवं निरंकारी राजपिता रमित के पावन सान्निध्य में यमुना छठ घाट, आईटीओ से शुरू होगा। संत निरंकारी मण्डल के सचिव एवं समाज कल्याण प्रभारी जोगिन्दर सुखीजा ने जानकारी देते हुए बताया कि स्वच्छ जल, स्वच्छ मन के आदर्श वाक्य से प्रेरणा लेते हुए यह परियोजना पूरे भारत के लगभग 1500 से भी अधिक स्थानों के 900 शहरों के 27 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में एक साथ आयोजित की जायेगी। इस अभियान का मकसद जल निकायों को संरक्षित करने के विकल्पों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ भविष्य दिया जा सके। अमृत परियोजना के अंतर्गत अशोक विहार का संजय झील, कैनल सोर यमुना, आई. टी. ओ का छट घाट, निगम बोध घाट, भलस्वा झील, यमुना का सुर घाट और राम घाट, कालिंदी कुंज घाट इत्यादि स्थान प्रमुख है।

एबीवीपी ने शुरू किया डूसू इन कैंपस अभियान

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों की समस्याओं को जानने एवं उनकी समस्याओं को समाधान की ओर ले जाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने 'डूसू इन कैंपस' अभियान शुरु किया है। इस अभियान के तहत तीन समूहों में डूसू के पदाधिकारी हंसराज कॉलेज, किरोड़ीमल कॉलेज, रामजस कॉलेज, शिवाजी कॉलेज, राजधानी कॉलेज, लक्ष्मीबाई कॉलेज, अरबिंदो कॉलेज, कॉलेज फॉर वोकेशनल स्टडीज आदि में जाकर छात्रों से मिलें और उनकी समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयास किया एवं कॉलेज कैंपस गतिविधियों के बारे में और डूसू की वर्तमान योजनाओं से छात्रों को अवगत कराया। छात्रा-छात्रों से संवाद के बाद डूसू ने अलग-अलग कॉलेजों के प्राचार्यों को ज्ञापन देकर कॉलेज की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रान्त मंत्री हर्ष अत्री ने कहा, डूसू इन कैंपस अभियान के माध्यम से छात्र अभाविप के नेतृत्व वाले दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ को अपनी समस्या से कॉलेज परिसर में ही अवगत करा पायेंगे।

खेलकूद प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बांटे पुरस्कार

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद के अध्यक्ष अमित यादव ने परिषद सचिव, कृष्ण मोहन उप्पू की उपस्थिति में तालकटोरा क्रिकेट ग्राउंड में एक समारोह में 43 एनडीएमसी स्कूलों के लिए वार्षिक खेल प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर यादव ने शिक्षा विभाग की टीम की सराहना करते हुए विजेता छात्रों को 300 पदक और स्कूलों के लिए 60 ट्राफियां वितरित कीं। यादव ने शीर्ष स्तर की खेल सुविधाएं प्रदान करने और विभिन्न खेलों में प्रशिक्षकों को नियुक्त करने के लिए एनडीएमसी की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

बंगाल में दबाई जा रही मीडिया और महिलाओं की आवाज : अनुराग ठाकुर

● केंद्रीय मंत्री ने कहा- संदेशखाली का संदेश पूरे प्रदेश में गूंज रहा कि यहां महिलाएं सुरक्षित नहीं

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने मंगलवार को कहा कि पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में घटने वाले मामले पूरे देश और मानवता को शर्मसार करने वाली हैं। उन्होंने कहा कि ममता राज में बंगाल में मीडिया और महिलाओं की आवाज़ दबाई जा रही है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, महिला मुख्यमंत्री के राज्य में महिलाओं के साथ बलात्कार और अत्याचार की वीभत्स कर देने वाली घटनाओं का सामने आना और उन पर कोई कारवाई ना होना बेहद चिंताजनक है। आज पश्चिम बंगाल में गुंडों और अपराधियों को पुलिस का संरक्षण है। अनुरा ठाकुर ने इस मामले को उठाते हुए पूछा कि पश्चिम बंगाल की महिलाओं को कब तक यह अत्याचार सहना होगा उन्हें न्याय कब मिलेगा। उन्होंने कहा, संदेशखाली का संदेश आज पश्चिम बंगाल के गली-गली जा रहा है कि पश्चिम बंगाल में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। केंद्रीय मंत्री ने आगे पश्चिम बंगाल में मीडिया को पुलिस व सरकार द्वारा दबाए जाने की खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, ममता दीदी की सरकार पश्चिम बंगाल में स्वतंत्र मीडिया की आवाज को दबाने की कोशिश कर रही है। ठाकुर ने पूछ कि सीएम ममता बनर्जी कब तक मीडिया और महिलाओं की आवाज को दबाएंगी। पंश्चिम बंगाल में कानून व्यवस्था बेहद खराब हालत में है।

सेंट स्टीफंस कॉलेज के 100 से अधिक छात्रों को परीक्षा से रोका

नई दिल्ली। सेंट स्टीफंस कॉलेज के प्रथम वर्ष के 100 से अधिक छात्रों को कथित तौर पर सुबह की प्रार्थना सभा में शामिल नहीं होने के कारण निलंबित कर दिया गया। शिक्षकों और छात्रों ने मंगलवार को यह दावा किया।

प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा सोमवार को प्रधानाचार्य जॉन वर्गीज को भेजे गए एक ईमेल के अनुसार, कथित तौर पर प्रार्थना सभा में अनुपस्थित रहने के कारण छात्रों को अपने माता पिता के साथ प्रधानाचार्य से मिलने के लिए कहा गया था जिसमें वह विफल रहे। इसके कारण उन्हें दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा देने की अनुमति नहीं दी जा रही है। वर्गीज की ओर से इस मामले में तत्काल कोई प्रतिक्रिया उपलब्ध नहीं हो सकी है।

छात्रों ने वर्गीज को किए ईमेल में कहा मैं आपको 17 फरवरी को सेंट स्टीफंस कॉलेज के 100 से अधिक प्रथम वर्ष के छात्रों को भेजे गए ईमेल के संबंध में लिख रहे हैं, जिसमें उन्हें दूसरे सेमेस्टर की परीक्षाओं से निलंबित करने की बात कही गई है। उन्होंने कहा चार फरवरी को भेजे गए ईमेल के जवाब में कई छात्रों द्वारा इतने कम समय में प्रधानाचार्य से अभिभावकों को मिला पाना मुश्किल था क्योंकि उनके माता पिता दिल्ली एनसीआर में नहीं रहते हैं।

कोर्ट का निलंबित भाजपा विधायकों से सवाल, उपराज्यपाल से मांगेंगे माफी

● विपक्षी सदस्यों पर एलजी के अभिभाषण के दौरान शोर-शराबा करने का आरोप

पायनिर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्च न्यायालय ने उपराज्यपाल के अभिभाषण को बाधित करने के लिए विधानसभा से निलंबित भारतीय जनता पार्टी के सात विधायकों से पूछा कि क्या वे उनसे माफी मांगने को तैयार हैं। विधानसभा के तरफ से पेश वरिष्ठ वकील ने जब कहा कि सांसद राघव चड्ढा के मामले में उच्चतम न्यायालय में इसी तरह का दृष्टिकोण अपनाया गया था तो न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद ने निलंबित विधायकों की ओर से पेश वरिष्ठ वकील से इस पहलू पर निर्देश लेने को कहा।

विधानसभा की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सुधीर नंदराजोग ने कहा कि यह मामला राजनीतिक नहीं है और इसमें उपराज्यपाल के पद की गरिमा शामिल है। नंदराजोग ने कहा उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष से बात की। उन्होंने राघव चड्ढा के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा अपनाए गए तरीके का भी सुझाव दिया। अगर सदस्य आएं और अध्यक्ष से मिलें तथा उपराज्यपाल से माफी मांगें, तो पूरी बात रखी जा सकती है। विधायकों की ओर से पेश वरिष्ठ वकील जयंत मेहता ने कहा कि उपराज्यपाल से माफी मांगने में कोई दिक्कत नहीं है। अदालत ने याचिकाकर्ताओं के वकील से दोपहर के भोजन के बाद के सत्र में निर्देशों के साथ वापस आने को कहा। भाजपा के सात विधायकों मोहन, अजय , ओपी शर्मा, अभय अनिल, जितेंद्र और विजेंद्र गुप्ता ने उपराज्यपाल के अभिभाषण को बाधित करने के लिए विधानसभा से अपने अनिश्चितकालीन निलंबन को चुनौती देते हुए सोमवार को उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। उपराज्यपाल जब 15 फरवरी को अपने अभिभाषण में आम आदमी पार्टी सरकार की उपलब्धियों को रेखांकित कर रहे थे तो उस दौरान भाजपा विधायकों ने उसने कई बार बाधा डाली।

धूल नियंत्रण नियमों का उल्लंघन करने पर लगेगा दंड

● सीएक्यूएम के अनुसार ऐसी परियोजनाओं को पूर्णता और कब्जा प्रमाणपत्र नहीं मिलेगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में वायु गुणवत्ता नियंत्रण से जुड़े केंद्रीय आयोग ने मंगलवार को संबंधित एजेंसियों को निर्देश दिया कि वे धूल प्रदूषण नियंत्रण मानदंडों का उल्लंघन करने वाली परियोजनाओं के लिए पूर्णता और कब्जा प्रमाणपत्र जारी नहीं करें।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने एक बयान में कहा कि निर्माण और विध्वंस स्थलों के निरीक्षण से संकेत मिलता है कि परियोजनाओं के कार्यान्वयन में धूल नियंत्रण निर्देशों और दिशानिर्देशों के अनुपालन के स्तर में सुधार की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बयान में कहा गया है कि कुछ मामलों में, परियोजना का कार्यान्वयन करने वाले लोगों ने निर्देशों की पूरी तरह से अवहेलना की है और सीएक्यूएम के आदेश के बिना तथा धूल पर काबू के लिए उचित निवारक उपाय किए बिना अपने निर्माण स्थलों पर काम जारी रखा है।

इसमें कहा गया है, सीएक्यूएम पूर्णता प्रमाणपत्र जारी करने के लिए जिम्मेदार एनसीआर की सभी एजेंसियों को निर्देश देता है कि वे किसी भी परियोजना को ऐसे प्रमाण पत्र नहीं जारी करें, जिसके खिलाफ समापन निर्देश लंबित है। आयोग ने कहा कि एजेंसियों को प्रमाण पत्र जारी करने के लिए आवेदनों पर विचार करने से पहले सीएक्यूएम की वेबसाइट पर उपलब्ध उन संस्थाओं की सूची देखने के लिए कहा गया है जिन्हें अभी तक काम फिर शुरू करने के आदेश नहीं मिले हैं। दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में नगर निकायों, और सभी संबंधित विभागों को यह सुनिश्चित करने को कहा गया।

थाईलैंड में बुद्ध के अवशेषों का किया जाएगा प्रदर्शन

नई दिल्ली। दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में संजोकर रखे गए भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों में कुछ 22 फरवरी से 18 मार्च तक थाईलैंड में प्रदर्शित किए जाएंगे।

संस्कृति मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि इन अवशेषों को भारतीय वायुसेना के विशेष विमान से ले जाया जाएगा। दुनिया भर में बौद्ध धर्मावलंबी बहुत आदर भाव से इन अवशेषों को देखते हैं। संस्कृति मंत्रालय के सचिव गोविंद मोहन ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय में संजोकर रखे गए भगवान बुद्ध के 20 अवशेषों में चार थाईलैंड में प्रदर्शित किए जाएंगे। ये अवशेष 22 फरवरी को थाईलैंड पहुंचेंगे तथा तीन मार्च तक बैंकाक में विशेष मंडप में प्रदर्शित किया जाएगा।

दिल्ली नगर निगम की 28 पार्किंग होगी फास्टैग से लैस

● चयनित एजेंसी मासिक लाइसेंस शुल्क के आधार पर संचालन, प्रबंधन और पार्किंग शुल्क का संग्रह करेगी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली नगर निगम शहर की 28 पार्किंग स्थालों को फास्टैग से लैस करने की योजना बनाई है। इसके मद्देनजर उसने निविदा आमंत्रित की है।

ठेका मिलने के बाद चयनित एजेंसी मासिक लाइसेंस शुल्क के आधार पर फास्टैग के माध्यम से संचालन, प्रबंधन और पार्किंग शुल्क का संग्रह करेगी। पार्किंग स्थलों का आवंटन तीन साल की अवधि के लिए होगा जिसे आपसी सहमति से 2 साल के लिए और बढ़ाया जा सकता है। दिल्ली नगर निगम के अनुसार, स्वचालित पार्किंग प्रणाली से लोगों को पार्किंग शुल्क का भुगतान करने में आसानी होगी क्योंकि इससे शुल्क आरएफआईडी-आधारित फास्टैग के माध्यम से स्वचालित रूप से काटा जाएगा। पार्किंग शुल्क का संग्रह चार पहिया वाहनों के लिए फास्टैग का उपयोग करके किया जाएगा और दो पहिया वाहनों के लिए क्यूआर कोड या यूपीआई आधारित होगा। फास्टैग को पढ़ने के लिए प्रवेश और निकास द्वारों पर सेंसर लगाए जाएंगे, जिससे पार्किंग शुल्क संग्रह की प्रक्रिया आसान हो जाएगी। इन पार्किंग स्थलों में गाजीपुर, पटपड़गंज, मयूर विहार, लक्ष्मी नगर मेट्रो स्टेशन, विकास मार्ग, मंडावली, नंद नगरी, राजौरी गार्डन, वसुंधरा एन्क्लेव, द्वारका सेक्टर 6 मार्केट, अप्पू घर, संत नगर, बाबरपुर रोड, गीता कॉलोनी, बिहारी कॉलोनी, शशि गार्डन शामिल हैं। और ओखला चरण-तीन। अन्य प्रमुख स्थलों में नेहरू प्लेस व हौज खास, न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी और कालकाजी में बहु-स्तरीय पार्किंग शामिल हैं।

दिल्ली नगर निगम द्वारा फरवरी माह के अंत तक 21 पार्किंग स्थलों पर आरएफआईडी-आधारित पार्किंग खोल दी जाएगी। स्वचालित प्रणाली से लोगों के साथ-साथ एजेंसियों के लिए शुल्क एकत्र करना आसान हो जाएगा। बोली जमा करने की अंतिम तिथि 4 मार्च है। निगम राजधानी में स्टैक या मल्टीलेवल पार्किंग सहित 400 से अधिक पार्किंग साइटों का संचालन कर रही है।

दिल्ली पुलिस ने 1600 करोड़ रुपये की ड्रग्स नष्ट की

● उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना और पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा ने जहांगीरपुरी स्थित एसएसआई औद्योगिक क्षेत्र में निस्तारित किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मंगलवार को उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना की मौजूदगी और पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा की नेतृत्व में 1600 करोड़ रुपये की 10631.745 किलोग्राम अवैध ड्रग्स को नष्ट किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई केंद्र सरकार नशा मुक्त भारत बनाने के लिए नशीली दवाओं के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई है। इसी कड़ी में दिल्ली पुलिस ने भी पादक पदर्थों के खिलाफ मुहिम छेड़ रखा है।

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी कहा है कि उनका संकल्प है कि वह भारत में नारकोटिक्स का व्यापार नहीं होने देंगे और ना ही भारत के माध्यम से मादक पदार्थों को विश्व में कहीं बाहर जाने देंगे। केंद्र सरकार ने नारकोटिक्स के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की जो नीति अपनाई है आज उसके सफल परिणाम दिखने लगे हैं। मंगलवार को उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना की मौजूदगी और पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा की नेतृत्व में 1600 करोड़ रुपये की 10631.745 किलोग्राम अवैध ड्रग्स को नष्ट कर दिया है। ये नशीले पदार्थ जहांगीरपुरी स्थित एसएसआई औद्योगिक क्षेत्र में नष्ट किया गया। दिल्ली पुलिस के अनुसार, केंद्र सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना और सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के मुताबिक ड्रग तस्करों से बरामद अवैध मादक पदार्थों को नष्ट करने के लिए दिल्ली पुलिस द्वारा विभिन्न समितियों का गठन किया गया था और ये समितियाँ वर्ष 2009 से वर्ष 2023 तक केसों का हिस्सा रही। नष्ट की गई अवैध नशीने पदार्थों में गांजा, हेरोइन, चरस, कोकीन, डोडा पोस्ट और साइकोट्रोपिक आदि प्रमुख थे। भविष्य में भी अवैध मादक पदार्थों को नष्ट करने की कार्यवाही इसी प्रकार की जाती रहेगी। इससे पहले दिल्ली पुलिस ने दिसंबर 2022 में 8 सालों से जब्त की गई डेढ़ हजार करोड़ से ज्यादा की कीमत की करीब 2800 किलो ड्रग्स को तबाह किया था। इन्हें कुल 65 मामलों में जब्त किया गया था।

इन मामलों में 154 लोगों को गिरफ्तार भी किया गया था। तब एल सक्सेना ने कहा कि वह दिल्ली पुलिस के कामों से संतुष्ट है। पुलिस ड्रग्स के खिलाफ प्रभावी तरीके से काम कर रही है। उन्होंने यह भी कहा था कि ड्रग्स के धंधे में अधिकतर देश विरोधी शक्तियां लगी होती हैं। ये शक्तियां देश के युवाओं को ड्रग्स में डुबोकर बर्बाद करना चाहती है लेकिन पुलिस उनके मंसूबों पर लगातार पानी फेर रही है।

डीडीए द्वारका को संवारने में जुटा

● उपराज्यपाल ने द्वारका में स्टॉर्म वाटर चैनल नं. 2एवं 5, फव्वारे एवं सौंदर्यीकरण कार्य का किया उद्घाटन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारका सब सिटी को खूबसुरत बनाने में जुटा है। इस कड़ी में उपराज्यपपाल विनय कुमार सक्सेना ने डीडीए द्वारा द्वारका में स्टॉर्म वाटर चैनल नं. 2 एवं 5, द्वारका के जीर्णोद्धार के अंतर्गत विभिन्न विकास कार्यों तथा सेक्टर 1/7 एवं सेक्टर 2/6चौराहे पर नवनिर्मित फव्वारे एवं सौंदर्गीकरण के कार्य का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उपराज्यपाल ने कहा कि द्वारका में लगातार विकास हो रहा है। यहां के ड्रेन में ट्रीटमेंट किया हुआ हाई क्वालिटी का पानी डाला जाएगा। वह ऐसा पानी होगा जो कंस्ट्रक्शन में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। अभी चार फाउंटेन का उद्घाटन हुआ है, 80 और बनाने की योजना है। जानकारी के अनुसार, उपराज्यपाल के दिशा निर्देश पर डीडीए द्वारका शहर में कई जनहित योजनाओं पर कार्य कर रहा है। इनमें नाले नाली बनाना, पार्क बनाना व उनका सौंदर्यीकरण, सड़क चौड़ीकरण, पैदल पारपथ निर्माण, जलभराव को रोकने के उपाय, विभिन्न चौराहों पर आकर्षक फव्वारे आदि अन्य कार्य शामिल हैं।

गुरुग्राम-द्वारका एक्सप्रेस-वे के आसपास की सोसायटी में पाइप से पहुंचेगी गैस

गैस सिलेंडर भरवाने से मिलेगी मुक्ति

सेक्टर-81 से 115 तक की सोसायटी में चल रहा है काम

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम के सेक्टर-36ए में एवीएल सोसायटी।

वह दिन दूर नहीं जब गुरुग्राम के घरों में गैस सिलेंडरों में गैस भरवाने से छुटकारा मिलेगा। गुरुग्राम-द्वारका एक्सप्रेस-वे किनारे बनीं सोसायटीज में पीएनजी (पाइप्ड नेचुरल गैस) पहुंचाने के लिए पाइन लाइन बिछाने का काम शुरू हो गया है। हरियाणा सिटी गैस (एचसीजी) की ओर से द्वारका एक्सप्रेस-वे के आसपास सेक्टर-81 से 115 तक की सोसायटी में यह काम किया जा रहा है।

मिलेनियम सिटी गुरुग्राम के घरों में पाइप लाइन के जरिये गैस पहुंचाने का काम युद्ध स्तर पर शुरू किया गया है। द्वारका एक्सप्रेस-वे के आसपास 100 से अधिक सोसायटी विकसित हो चुकी हैं। अभी इनमें गैस एजेंसियों द्वारा सिलेंडर के माध्यम से ही गैस सप्लाई हो रही है। सेक्टर-81 से 115 के क्षेत्र में कोई गैस एजेंसी नहीं है। सभी एजेंसियां शहर की तरफ ही हैं। ऐसे में गैस वितरकों को दूर-दूर तक जाना पड़ता है। सरकार की योजना है कि लोगों को सिलेंडर की बजाय किचन तक पाइप लाइन के जरिये ही गैस की आपूर्ति हो। इसके लिए अब पीएनजी के माध्यम से सप्लाई होगी। इसका सबसे बड़ा फायदा यह भी होगा कि लोगों को सिलेंडर की बुकिंग नहीं करानी पड़ेगी।

बिना किसी बाधा के 24 घंटे गैस की सप्लाई रहेगी। द्वारका एक्सप्रेस-वे के आसपास की 50 से अधिक सोसायटी में करीब 8 हजार घरों/फ्लैट में हरियाणा सिटी गैस कंपनी की ओर से गैस पहुंचाने के लिए पाइन लाइन बिछाने का काम शुरू किया गया है। उम्मीद जताई जा रही है कि मार्च 2024 तक यह काम पूरा हो जाएगा और पीएनजी आपूर्ति शुरू हो जाएगी। गुरुग्राम-द्वारका एक्सप्रेस-वे के आसपास की सोसायटी में करीब 42 किलोमीटर लंबाई में पाइन लाइन बिछाई जा रही है।

पीएनजी को लेकर लोगों ने जताई खुशी

सेक्टर-36ए स्थित एवीएल सोसायटी में फ्लैट मालिक राजीव बंसल का कहना है कि डोर स्टैप तक चौबीसों घंटे गैस पहुंचाना बहुत ही खुशी की बात है। गैस भरवाने के झंझट से अब छुटकारा मिल जाएगा। सुंदर लाल यादव ने कहा कि पाइप लाइन से गैस की आपूर्ति बहुत बड़ा प्रोजेक्ट है। इतनी ज्यादा सोसायटी में यह काम पूरा होने जा रहा है। सोसायटी के निवासियों की गैस भरवाने की टेंशन खत्म हो जाएगी। मैपस्को कासा बेला सोसायटी आरडब्ल्यूए के प्रधान धर्मबीर का कहना है कि कई वर्षों से पाइप लाइन के जरिये गैस सप्लाई शुरू करने की मांग सोसायटी द्वारा की जा रही थी। अब खुशी की बात है कि पाइप लाइन का काम शुरू हो चुका है।

इस प्रोजेक्ट को सिरे चढ़ाने में लगी हरियाणा सिटी गैस (एचसीजी) कंपनी के चेयरमैन संजीव चोपड़ा के मुताबिक द्वारका एक्सप्रेस-वे के आसपास विकसित हो चुकी सोसायटीज में पाइप लाइन बिछाने का काम अंतिम चरण में है। इसी महीने में यह काम पूरा हो जाएगा। मार्च माह के अंत से आवेदन करने वालों को पीएनजी कनेक्शन देने की शुरुआत की जाएगी। इन सभी सोसायटी में करीब एक लाख उपभोक्ताओं तक पीएनजी पहुंचाए जाने का लक्ष्य है।

बिजली चोरी का मामला गलत साबित हुआ, उपभोक्ता को वापस मिलेगा जुर्माना

गुरुग्राम। बिजली चोरी के मामले में सिविल जज अनिल कुमार यादव की अदालत ने मामले को गलत पाया। अदालत ने बिजली निगम को आदेश दिए हैं कि उपभोक्ता द्वारा जमा कराई गई जुर्माना राशि का 9 प्रतिशत ब्याज दर से उपभोक्ता को भुगतान किया जाए। कादीपुर के उपभोक्ता सुभाष नरुला के अधिवक्ता क्षितिज मेहता से प्राप्त जानकारी के अनुसार बिजली निगम ने उपभोक्ता पर आरोप लगाया था कि 16 जून 2015 को चेकिंग के दौरान उसका बिजली का मीटर उतारकर लैबोरेट्री में टेस्ट कराया था और मीटर टैंपर्ड पाया गया था। जिससे साबित होता है कि उपभोक्ता बिजली की चोरी कर रहा था।

विभाग ने उस पर 2 लाख 49 हजार 616 रुपए का जुर्माना लगा दिया था। निगम ने उसे धमकी दी थी कि वह जुर्माना राशि जमा कर दे, नहीं तो उसका बिजली का कनेक्शन काट दिया जाएगा। इस मामले में 7 जुलाई 2015 को उपभोक्ता ने बिजली निगम के अधिकारियों को पत्र लिखकर बताया था कि न तो बिजली का मीटर उसके सामने उतारा गया। ना ही उसे कभी लैबोरेट्री में बुलाया गया। अधिकारियों ने उसकी नहीं सुनी। उपभोक्ता ने पूरी जुर्माना राशि जमा कर दी थी।

गुरुग्राम में एक चौक पर शिवाजी महाराज की प्रतिमा लगवाने का करूंगा प्रयास : नवीन गोयल

भारतीय संस्कृति व स्वतंत्रता की रक्षा के लिए शिवाजी महाराज ने किया था संघर्ष

मुगलों व अन्य विदेशी ताकतों के खिलाफ कई युद्ध लड़े थे

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

सेक्टर-31 कम्युनिटी सेंटर में महाराष्ट्र मंडल गुरुग्राम द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज जी की जयंती पर शिव जन्मोत्सव कार्यक्रम में छत्रपति शिवाजी महाराज को नमन करते नवीन गोयल व अन्य अतिथि।

महाराष्ट्र मंडल गुरुग्राम की ओर से महाराष्ट्र के आराध्य दैवत छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्मोत्सव कार्यक्रम में शिरकत की। सेक्टर-31 कम्युनिटी सेंटर में महाराष्ट्र मंडल गुरुग्राम द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज जी की जयंती पर शिव जन्मोत्सव सोहळा कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में आयोजन स्थल से लेकर सेक्टर-40 तक शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में गुरुग्राम में कार्यरत सभी मराठी एवं हिंदी भाषिक अपने परिवार के साथ शामिल रहे।

इस अवसर पर भाजपा हरियाणा के व्यापार प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक नवीन गोयल, अतुल चंद्र कुलकर्णी आईपीएस, दीपक पाटिल आईएफएस पलवल, केतन पाटिल डीआईजी दिल्ली, जीवन तलेगावकर, शांताराम उदागे, आरबी मांढेकर, संजय कावरे, अरविंद कुमार, गंगाधर गुंडे, अरविंद कामले, विनोद पालवे, भंगाले, दीपक हराल, मनोज खरड़, सुनील चौधरी, सतीश सोनावणे व कमलाकर वाकेकर ने अतिथि के रूप में शिरकत की। मंडल के विष्णु पाटिल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की सांगता प्रसाद वितरण से की गई। संस्था के प्रधान विष्णु पाटिल द्वारा प्रस्ताव रखा गया कि गुरुग्राम में छत्रपति शिवाजी के नाम से किसी चौक पर बड़ा स्टेच्यू लगना चाहिए। नवीन गोयल ने कहा कि छत्रपति शिवाजी के गुरुग्राम में स्टेच्यू लगाने के लिए वे मुख्यमंत्री मनोहर लाल और केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मिलकर इस काम को सिरे चढ़वाने का प्रयास करेंगे। महाराजा शिवाजी को नमन करते हुए नवीन गोयल ने कहा कि छत्रपति शिवाजी भारत के महान योद्धा, रणनीतिकार और शासक थे। उनकी माता जीजाबाई एक वीर और कुशल योद्धा थीं। उन्होंने ही छत्रपति शिवाजी को युद्ध कौशल और प्रशासन की शिक्षा दी।

समिति अध्यक्ष जीवन तलेगांवकर एवं उपाध्यक्ष शांताराम उदागे ने बताया कि इस दौरान शोभा यात्रा के लिए नासिक से विशेष ढोल पथक का आयोजन किया गया। ढोल नगाड़ों की गर्जना में महाराज की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। कार्यक्रम में महाराष्ट्र से आए हुए प्रसिद्ध शाहीर रमेश खाड़े ने अपनी बुलंद आवाज में महाराज का पोवडा प्रस्तुत किया।

दमदमा चौक जाम को लेकर ट्रैफिक पुलिस अधिकारी ने की नप से बत्ती लगवाने की मांग

ट्रैफिक पुलिस इंस्पेक्टर राजेश यादव और नप अधिकारी जाम को लेकर चर्चा करते हुए

एन. रोहिल्ला। सोहना

शहर के दमदमा चैक पर लगने वाले जाम से अब आम लोगों के अलावा टैऊफिक पुलिस भी परेशान होने लगी है। एलिवेटेड मार्ग पर यातायात व्यवस्था प्रभारी इंस्पेक्टर राजेश यादव ने परिषद में पहुंच कार्यकारी अधिकारी से मुलाकात कर लाल बत्ती जल्द से जल्द लगवाने का कहा है। परिषद अधिकारी ने जल्द से जल्द लाल बत्ती लगवाने आश्वासन दिया है। नगर परिषद अधिकारी की एक छोटी सी भूल के चलते शहर के दमदमा चैक को जाम का झाम बनाया हुआ है। जिससे गुरुग्राम-दिल्ली, नूंह, अलवर, पलवल, दमदमा झील को जाने वाल मार्ग पर चाहन चालक और स्कूल-कॉलेज तथा नौकरी-कारोबार पर जाने वाले लोग चैक पर लगने वाले जाम से परेशान आ चुके है। जिसको लेकर जाम में फंसने वाले लोगों का गुस्सा कई बार यहा तैनात पुलिस कर्मियों पर उतर जाता है। जिससे जाम में फंसने वाले लोग और पुलिस कर्मियों में नोक-झोंक आम बात हो चली है।

इसी विवाद को बढ़ावा मिलने से पहले बादशाहपुर के वाटिका चैक से सोहना अंबेडकर बाईपास चैक तक यातायात व्यवस्था को देखने वाले इंस्पेक्टर राजेश यादव ने सोमवार को नगर परिषद कार्यालय में पहुंच कार्यकारी अधिकारी सुमन लता से चैक पर लाल बत्ती लगाए जाने को लेकर चर्चा की।

> **नगर** परिषद प्रशासन ने 7 से 10 दिन में दमदमा चैक पर अधूरा पड़ा लाल बत्ती लगावने के कार्य को पूरा कराने का आश्वासन ईओ ने दिया है।
>
> **(राजेश यादव-इंस्पेक्टर ट्रैफिक पुलिस)**
>
> **चैक** पर लाल बत्ती लगाने वाला ठेका का टेंडर देते समय वर्क ऑडर लगत एजेंसी के नाम पर अलार्ट हो गया था। जबकि बत्ती लगाने का कार्य भिवानी की एजेंसी को दिया हुआ है। अब उस गलती में सुधार कर लिया है। चैक पर बत्ती लगाने वाली एजेंसी के नाम पर वर्कऑडर दे दिया है। सोमवार बाद से लाल बत्ती लगाने का कार्य पूरा कर दिया जाएगा।
>
> **(सुमन लता-कार्यकारी अधिकारी)**

स्थानीय लोगों में रोष : जाम से परेशान स्थानीय लोगों चैक पर धरना देने की चेतावनी दे दी है। जाम के कारण यहा बैठे दुकानदार और कारोबारियों का कारोबार प्रभावित हो रहा है। सतबीर पहलवान ने बताया कि एनएचएआई अधिकारी भी जाम को कई बार निरीक्षण कर चुके है। लेकिन कोई समाधान नहीं निकाल रहे है। न ही नगर परिषद प्रशासन पिछले 6 माह से अधर में लटका लाल बत्ती लगाने के कार्य को गंभीरता से ले रहा हैं। उन्होने कहा कि जिस दिन भी लोगों के सब्र का बांध टूट जाएगा।

गुरुग्राम मैराथन 2024 बनेगा देश का सबसे बड़ा स्पोर्ट्स इवेंट :निशांत यादव

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में 25 फरवरी को आयोजित होने जा रही गुरुग्राम मैराथन-2024 के लिए अभी तक करीब 27 हजार से अधिक नागरिकों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया है। जल्द ही यह संख्या बढक़र 40 हजार के करीब होने का अनुमान है। हरियाणा सरकार गुरुग्राम शहर में होने जा रहे इस मेगा इवेंट के सफल व सुरक्षित आयोजन को लेकर पूर्णत: प्रतिबद्ध है। यह जानकारी डीसी निशांत कुमार यादव ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता में दी।

डीसी निशांत कुमार यादव ने कहा कि जिस रफ्तार से इस इवेंट को लेकर लोगों की संख्या में दिन प्रतिदिन बढ़ोतरी हो रही है। इससे यह पूरे भारत का सबसे बड़ा मेगा मैराथन इवेंट होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि आयोजन में लोगों की ज्यादा से ज्यादा सहभागिता हो इसके लिए जिला में स्थित सभी यूनिवर्सिटी, स्कूल एसोसिएशन, रनर्स कम्युनिटी सहित प्रमुख आरडब्ल्यूए के साथ बैठकें की गई है। जिसमें लोगों का सकारात्मक सहयोग मिल रहा है।

उन्होंने कहा कि गुरुग्राम एमएनसी का हब है, ऐसे में जिला प्रशासन की ओर से जिला में स्थित सभी प्रमुख कॉरपोरेट्स को भी अप्रोच किया गया है। यह इवेंट गुरुग्राम की वैश्विक छवि को ओर मजबूत करेगा। ऐसे में मैराथन में बाहर से आने वाले रनर्स शहर की अच्छी छवि मन मे लेकर जाएं। इसके लिए मैराथन रूट पर रनर्स को प्रोत्साहित करने के लिए सभी संबंधित आरडब्ल्यूए से संपर्क किया जा रहा है। जिसमें प्ले काड्र्स व अन्य कार्यक्रमों से रनर्स का उत्साहवर्धन करेंगी। इसमें सहभागी बनने वाले प्रमुख पांच आरडब्ल्यूए को मुख्यातिथि द्वारा सम्मानित किया जाएगा।

गुरुग्राम में मैराथन को लेकर पत्रकारों से बात करते डीसी निशांत यादव।

कॉरपोरेट्स संस्थानों ने भी दोहराई अपनी प्रतिबद्धता : गुरुग्राम की एक नई ब्रांड इमेज बनाने, युवा शक्ति को नशे से दूर रखने व आमजन में मतदान की भावना को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित की जा रही इस मेगा मैराथन में जिला के प्रमुख कॉरपोरेट संस्थान भी आगे आकर सहयोग कर रहे है।

डीसी ने मैराथन को लेकर पत्रकार वार्ता में दी जानकारी

पत्रकार वार्ता में हुंडई के प्रतिनिधि पुनीत, रेडिसन होटल के प्रतिनिधि नमित, फोर्टिस हॉस्पिटल से डॉ. अमित वधवा, आरवी अस्पताल से विनीत बहल, बिसलेरी से सोनिया दोहे ने भी हरियाणा सरकार के इस प्रयास की सराहना करते हुए इस आयोजन को सफल बनाने में अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। इस दौरान प्रेस वार्ता में हरियाणा राज्य सीएसआर ट्रस्ट के अतिरिक्त सीईओ गौरव सिंह भी मौजूद रहे।

यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने ग्रामीणों के साथ की कानून पर चर्चा

मंगलवार को जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी नगर परिषद के गांव खाईका के राजकीय स्कूल में पहुंचे कानून पर चर्चा करने।

सोहना। जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी के तत्वाधान में नगर परिषद के गांव खाईका के निवासियों को कानून की समानता का पाठ पढ़ाया गया। यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ लॉ के विद्यार्थियों ने ऑनलाइन प्रक्रिया के प्रति जागरुक किया। मंगलवार को जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ लॉ के विद्यार्थियों ने न्याय की आवाज कार्यक्रम के तहत ग्रामीणों के बीच में बैठकर कानून पर चर्चा की।

इस अवसर पर छात्रों की रचनात्मकता को उजागर किया बल्कि समाज के प्रति प्रतिबद्धता के उनके बौद्धिक विचारों को भी दर्शाया। उन्होंने भविष्य के नेताओं को बढ़ावा देने के विश्वविद्यालय के लोकाचार के एक सकारात्मक कदम के रूप में कानून, ऑनलाइन एफआईआर, आरटीआई दाखिल करने और ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से मामले की स्थिति की जांच करने के बारे में जागरूकता किया। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर डॉ. अजीमखान बी.पठान और कानूनी सहायता समिति के सदस्य - डॉ. दिवांशु श्रीवास्तव, डॉ. दक्षिता सांगवान, श्रद्धा ओबेरॉय, विभा बंधु, पंकज छुट्टानी, संदीप सी., उतकृष अमृत , यशपाल के कुशल नेतृत्व में छात्रों ने ग्रामीणों को उनके अधिकारों और कानून के बारे में पढ़ाने का एक अच्छा तरीका दिखाया। जिससे उन्हें काफी प्रशंसा मिली।

स्वास्थ्य जांच में वरदान साबित हुई जन संवाद संकल्प यात्रा : सुंदर लाल यादव

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

शहीद सूबेदार पार्थ सिंह राजकीय उच्च विद्यालय सिकन्दरपुर बढ़ा में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का अयोजन किया गया। इस दौरान अलग-अलग विभागों के कैंप लगाए गए। इस दौरान आधार कार्ड, फैमिली आईडी, स्वास्थ्य विभाग, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान कार्ड बनाने के साथ बिजली बोर्ड से संबंधित जानकारी दी गई।

भाजपा पंचायती राज प्रकोष्ठ हरियाणा प्रदेश सह-संयोजक सरपंच सुंदर लाल यादव ने यात्रा का गांव में पहुंचने पर स्वागत और अभिनंदन किया। यात्रा के दूसरे फेज के लिए शहरी परियोजना अधिकारी महेंद्र ड्क्षसह को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। ओवरऑल इंचार्ज नगर निगम मानेसर के उप-निगमायुक्त विनोद नेहरा को बनाया गया है। सरपंच सुंदर लाल यादव ने इस अवसर पर सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि 30 नवम्बर 2023 से विकसित भारत जन-संवाद संकल्प यात्रा चलाई जा रही है।

इस यात्रा के तहत अब तक जिला में 65 हजार से अधिक लोगों के स्वास्थ्य जांच की गई, जिसमें 11 हजार से अधिक लोगों की टीबी की भी जांच भी शामिल है। यात्रा के दौरान आयुष्मान चिरायु योजना के तहत जिला में आमजन को 47 हजार 675 कार्ड भी वितरित किए गए। इससे आने वाले समय में उनकी स्वास्थ्य जांच व उपचार में एक मजबूत आधार बनेंगे। सरपंच सुंदर लाल यादव ने कहा कि जिला के 157 गांवों व निकाय वार्डो में यह यात्रा पहुंची है। इस दौरान 2 लाख 30 हजार से अधिक लोगों की इसमें भागीदारी रही है। विकसित भारत संकल्प यात्रा ऐसे लोगों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बनी है, जो अब तक सरकार की योजनाओं से नहीं जुड़ पाए।

सूबेदार पार्थ सिंह राजकीय उच्च विद्यालय सिकन्दरपुर बढ़ा में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों के साथ मौजूद सरपंच सुंदर लाल यादव।

वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की संकल्प यात्रा में सभी नागरिक एक बेहतर स्वास्थ्य के साथ आगे बढ़ें, इन्हीं उद्देश्यों के तहत यात्रा के ठहराव के सभी स्थानों पर लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कराकर मौके पर उपचार तथा दवाईयां भी दी गयी। सरपंच सुंदर लाल यादव ने कहा कि देश के लोगों को हर तरह की सुविधाएं देने के लिए भाजपा सरकार ने काम किया है।

केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने जलमार्गों के विकास के लिए कई बड़ी परियोजनाएं लॉन्च की, पूर्वोत्तर भारत के लिए 308 करोड़ मूल्य की परियोजनाओं का किया अनावरण

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग तथा आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में आज 308 करोड़ मूल्य की परियोजनाओं का अनावरण कर जलमार्गों के विकास पर जोर दिया है। इस सिलसिले में डिब्रूगढ़ के नजदीक बोगीबील, करीमगंज में बदरपुर, और ढुबरी में आईडब्ल्यूएआई बंदरगाह तथा त्रिपुरा में सोनामुरा में समारोह आयोजित किए गए।

श्री सर्बानंद सोनोवाल ने डिब्रूगढ़ के नजदीक बोगीबील पर पैसेंजर-एवं-कार्गो टर्मिनल, त्रिपुरा में सोनामुरा में अंतर्देशीय जल परिवहन टर्मिनल और असम स्थित करीमगंज एवं बदरपुर में उन्नत टर्मिनलों का किया उद्घाटन किया। यह टर्मिनल इस क्षेत्र में कार्गो और यात्रियों के आवागमन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा जिससे व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देने में भी मदद मिलेगी।

आज मंत्री महोदय ने ढुबरी में एक सीमा-शुल्क आप्रवासन कार्यालय तथा आईडब्ल्यूएआई जोगीघोपा टर्मिनल के लिए परिसर की दीवार के निर्माण की भी आधारशिला रखी। नव-निर्मित बागीबील टर्मिनल का निर्माण कार्य लगभग 50 करोड़ मूल्य के निवेश से किया जा रहा है। इस अवसर पर, केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा, ''प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सक्षम नेतृत्व में, हमारे देश के जलमार्गों के समृद्ध एवं जटिल नेटवर्क का विकास किया जा रहा है और इस सिलसिले में आज कई प्रमुख परियोजनाओं का उद्घाटन किया गया। मोदी की गारंटी से पूर्वोत्तर क्षेत्र के जलमार्गों को सक्षम बनाकर उन्हें विकसित भारत की दिशा में बढ़ावा दिया जा रहा है। बागीबील स्थित टर्मिनल क्षेत्र के आर्थिक विकास में उत्प्रेरक की भूमिका निभाएंगे और ऊपरी असम तथा अरुणाचल प्रदेश में व्यापार के अवसरों को और मजबूत बनाएंगे। इसी तरह, त्रिपुरा स्थित सोनामुरा टर्मिनल से भारत एवं बांग्लादेश के बीच सीमा-परीय वाणित्य को बढ़ावा मिलेगा।

करीमगंज और बदरपुर टर्मिनलों से भी वाणिज्य के अवसरों को बल मिलेगा। ये सभी परियोजनाएं पूर्वोत्तर को विकसित भारत के निर्माण के लिए भारत के विकास के इंजन के तौर पर स्थापित करने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की दृष्टि को साकार करने में अहम् साबित होंगी।'' केंद्रीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने ढुबरी में रु 7.5 करोड़ की लागत से सीमा शुल्क आप्रवासन कार्यालय के निर्माण की आधारशिला भी रखी।

राइट टू सर्विस के दायरे में आने वाली सेवाओं में विलंब होने पर होगी ऑटो अपील

यमुनानगर। डीसी आयुष सिन्हा ने कहा कि प्रदेश सरकार ने नई पहल करते हुए आस-ऑटो अपील सॉफ्टवेयर शुरू किया है, जिसके अंतर्गत सेवा के अधिकार में सरकारी सेवाओं की समयबद्धता अनुरूप कार्य करने के लिए बाध्यता सुनिश्चित की गई है। आमजन को राइट टू सर्विस एक्ट की जानकारी भी प्रभावी रूप से दी जा रही है और लोगों को जागरूक भी किया जा रहा है।

डीसी ने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा शुरू किया गया आस पोर्टल आमजन के लिए काफी लाभकारी है। अगर किसी व्यक्ति का कार्य राइट टू सर्विस एक्ट के तहत निर्धारित समय सीमा में नहीं होने पर ऑटो अपील सॉफ्टवेयर के तहत आवेदन अपीलेट अथॉरिटी में चला जाएगा। अपीलेट अथॉरिटी के दायरे में भी काम नहीं होने पर आवेदन आगे वरिष्ठ अधिकारी के पास चला जाएगा।

जमीन अधिग्रहण और किसान आंदोलन के समर्थन में दिल्ली जा रहे किसान हिरासत में

गुरुग्राम के मानेसर में किसानों के आंदोलन के दौरान तैनात पुलिस फोर्स।

गुरुग्राम के मानेसर में आंदोलन के दौरान बैठक करते किसान।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

किसान आंदोलन को समर्थन देने और अपनी 1810 एकड़ जमीन अधिग्रहण का मुआवजा कम देने के विरोध में मंगलवार को दिल्ली के जंतर-मंतर जा रहे किसानों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया।

मानेसर क्षेत्र के कई गांवों की 1810 एकड़ जमीन का अधिग्रहण सरकार ने किया है। इस जमीन की कीमत बहुत ही कम दी जा रही है। किसान सरकार के इस कदम से नाराज हैं। किसान आंदोलन और जमीन अधिग्रहण के विरोध में मंगलवार को मानेसर क्षेत्र के किसान दिल्ली के जंतर-मंतर पर जाने को तैयार थे। जैसे ही पुलिस को इसकी भनक लगी तो पुलिस सक्रिय हो गई। मानेसर के किसान उमेश यादव, कैलाश जग्गा, ओमप्रकाश व गजराज को नोटिस थमाकर पुलिस ने कहा है कि जंतर-मंतर पर ना जाएं। इस मामले में किसान नेताओं ने कहा कि सरकार किसानों के साथ ठीक व्यवहार नहीं कर रही। वे आगे की रणनीति बनाएंगे। वे पिछले एक साल से लगातार धरना दे रहे हैं, लेकिन सरकार किसानों की मांग पर कोई ठोस निर्णय नहीं ले रही।

पुलिस ने किसानों को नोटिस भी दिए

बता दें कि गुरुग्राम के मानेसर आईएमटी (इंडस्ट्रीयल मॉडल टाउनशिप) मानेसर का दायरा बढ़ाने के प्लान के साथ वर्ष 2012 में मानेसर के साथ लगते कुकड़ोला, कुफरपुर, बांस लांबी, खरखड़ी व कासन गांवों के एक हजार से अधिक छोटे-बड़े किसानों की जमीन को प्रदेश सरकार ने अधिग्रहण के नोटिस जारी किए थे। किसानों की इस उपजाऊ जमीन का रेट प्रदेश सरकार ने केवल 55 लाख प्रति एकड़ तय कर मुआवजा देने की तैयारी की। लेकिन किसान इस मुआवजे को लेने को तैयार नहीं हैं।

यही वजह है कि किसान व प्रदेश सरकार पीछे हटने को तैयार नहीं है। अभी यह 1810 एकड़ जमीन पर किसानों का ही कब्जा है। इनमें से 30 फीसदी किसान जिनकी थोड़ी जमीन थी, वे कम रेट का ही मुआवजा ले चुके हैं।

तिगांव रोड सहित मोहना रोड व चावला कॉलोनी रोड की सुधरेगी हालत

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

एफएमडीए ने लगाया पौने आठ करोड़ का टेंडर

बल्लभगढ़ शहर के तीन प्रमुख रोड पर जल्द ही चौड़े और खूबसूरत नजर आएंगे। रोड से पानी निकासी, रोड की वाइडिंग व अन्य प्रकार का काम किया जाएगा। इसके लिए एफएमडीए ने पौने आठ करोड़ रुपये का टेंडर लगा दिया है।

अधिकारियों का दावा है कि यदि चुनाव आचार संहिता लग गई तो कार्य अधर में लटक जाएगा, अन्यथा काम को समय रहते कराया जाएगा। एफएमडीए शहर के तिगांव रोड, मोहना रोड व चावला कॉलोनी के 100 फुट रोड की दशा को सुधारेगा। अधिकारियों की मानें तो तीनों प्रमुख रोड पर वाइडिंग, तिगांव रोड व मोहना रोड पर पैदल चलने वाली दोनों साइड को 11 मीटर की बजाय 15 मीटर का कर दिया जाएगा। इसके अलावा तीनों रोड की पानी निकासी की व्यवस्था की जाएगी।

अधिकारियों ने बताया कि पानी निकासी की व्यवस्था केवल रोड की होगी। इसके अलावा जहां भी स्लैब टूटी होगी उसे दुरुस्त किया जाएगा। इसके अलावा जहां भी डिवाइडर टूटा होगा उसे पूरी तरह दुरुस्त किया जाएगा।

तीनों रोड की मौजूदा हालत : मोहना रोड आरएमसी का बनाया हुआ है, लेकिन ऊंचा गांव के आसपास रोड का बेहद बुरा हाल है। इसके अलावा मोहना रोड पर एक तरफ पैदल चलने वालों के लिए टाइल नहीं लगी है। इसके अतिरिक्त मोहना रोड जगह-जगह से टूटा हुआ है। इसके अलावा मोहना रोड पर डिवाइडर का भी बुरा हाल है, कहीं ग्रिल टूटी पड़ी है तो कहीं पत्थर टूटे हुए हैं। तिगांव रोड पर डिवाइडर का ज्यादा बुरा हाल है। सेक्टर-3 के आसपास रोड जगह-जगह से टूटी हुई है। इसके अलावा सड़क के दोनों ओर पैदल चलने वालों के लिए भी जगह की काफी कमी है। चावला कॉलोनी, 100 फुट रोड के डिवाइडर बुरा हाल है। सड़क जगह-जगह से टूटी हुई है। इसके अलावा स्लैब भी कई जगह से टूटी हुई है।

> **बल्लभगढ़** की तीन सड़कों की वाइडिंग सहित अन्य कार्य के लिए टेंडर तो लगाए हैं। यदि चुनाव आचार संहिता लग गई तो काम शुरू नहीं होगा।
> -**आरके बागरी, चीफ इंजीनियर, एफएमडीए**

सरस्वती महिला कॉलेज में सेमिनार आयोजित

पलवल। सरस्वती महिला महाविद्यालय में कंप्यूटर साइंस व मैनेजमेंट विभाग के अंतर्गत आत्मनिर्भर भारत स्टार्टअप एंड इंटरप्रेन्योशिप के विषय में सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या डॉ. वंदना त्यागी की देखरेख में किया गया।

इसके बाद डॉ. श्वेता छाबड़ा कंप्यूटर विभागाध्यक्ष व डॉली भारद्वाज मैनेजमेंट विभागाध्यक्ष ने फूलों का गुलदस्ता देकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अमन कुमार गुप्ता फाउंडर, लाइफ चेंजिंग पाथ व सुधा अहिवार, मोटिवेशनल स्पीकर रहे। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को करियर को बेहतर बनाने के लिए विकल्पों से अवगत कराना था। छात्राओं को बताया गया कि रोजगार पाने के लिए किस प्रकार की कौशलता आवश्यक होती है तथा इन्हें कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। कार्यक्रम में मंच का संचालन छात्रा पायल ने किया। सभी स्टाफ सदस्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कोड बदलकर महिला के खाते से उड़ाए 50 हजार

पलवल। एटीएम कार्ड से पैसे निकालने के लिए मदद मांगना एक महिला को महंगा पड़ गया। युवक ने महिला का कार्ड बदल लिया और उसके खाते से 50 हजार निकाल लिए। महिला को जब इसका पता चला तो वह पुलिस के पास पहुंची और अज्ञात ठगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया। शहर थाना पुलिस एटीएम मशीन में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

दहेज हत्या केस में पति बरी

2020 में पलवल में विवाहिता की संदिग्ध हालात में हुई थी मौत

सास-ससुर भी जांच में निर्दोष

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

जज चंद्रकांत की कोर्ट ने विवाहिता की दहेज के लिए हुई हत्या के मामले में आरोप साबित न होने पर पति को बरी कर दिया। जबकि इस मामले में मृतका के सास-ससुर को पुलिस पहले ही जांच में निर्दोष मानते हुए केस से बाहर कर चुकी थी। पति राजकुमार ने कहा कि उसे आज न्याय मिला है, उसने कुछ किया ही नहीं था। वकील राजेंद्र खत्री ने बताया की दुर्गापुर निवासी चंद्रपाल ने वर्ष 2020 में गदपुरी थाने में दी शिकायत में कहा था की उसने अपनी लड़की की शादी वर्ष-2013 में कलवाका निवासी राजकुमार के साथ अपनी हैसियत और हिंदू रीति-रिवाज अनुसार की थी। लेकिन उसकी बेटी के ससुराल वाले इससे खुश नहीं थे, जिसके चलते उसकी बेटी का पति वा उसके परिजन शादी के बाद से ही उसे दहेज के लिए प्रताड़ित करने लगे।

कई बार सामाजिक तौर पर उन्हें समझाने का भी प्रयास किया गया। लेकिन दो-चार दिन चुप रहने के बाद उनका फिर वही रवैया शुरू हो जाता। इस दौरान उनकी बेटी सुधा पर दो लड़कियां भी हुई, जिसके बाद ससुरालजनों ने लड़का न होने और दहेज की मांग पूरी न होने के चलते लडकी को और ज्यादा प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। पिता ने आरोप लगाया कि 30 अक्टूबर 2020 को सुधा के पति राजकुमार, ससुर पालाराम व सास दुलारी ने सुधा की मारपीट कर हत्या करने के बाद उसे फांसी पर लटका दिया।

आरोपित पक्ष के वकील राजेंद्र खत्री ने बताया कि इस संबंध में मृतक सुधा के पिता की शिकायत पर गदपुरी थाने में पति राजकुमार, ससुर पालाराम व सास दुलारी के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज हुआ। पुलिस ने सास-ससुर को पहले ही पुलिस जांच में निर्दोष मानते हुए केस से निकाल दिया गया था, जबकि पति राजकुमार का करीब तीन साल तक अदालत में ट्रायल चला। जिसका मंगलवार को फैसला आया।

कार का शीशा तोड़कर बैग चुराया, ऑटो भी ले उड़े चोर

फरीदाबाद। शादियों के सीजन में चोरों के गैंग भी शहर में पूरी तरह से सक्रिय हैं। एक ही दिन में पुलिस ने दो मामले दर्ज किए हैं। चोरों ने शादी समारोह में आई एक महिला की गाड़ी के शीशे तोड़कर बैग चोरी कर लिया। एक अन्य मैरिज हॉल के सामने से चोर ऑटो चुराकर ले गए। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पहले मामले में एनएचपीसी चौक स्थित एक मैरिज हॉल के बाहर खड़ी कार का शीशा तोड़कर चोर बैग चुराकर ले गए। नई दिल्ली स्थित छतरपुर निवासी मोनिका सिंह ने सेक्टर-31 थाने में दी शिकायत में बताया कि 15 फरवरी को एक दोस्त की शादी में एनएचपीसी आई थी। मैरिज हॉल के बाहर कार खड़ी कर वह समारोह शामिल होने चली गई। समारोह समाप्त होने के बाद वापस लौटने पर उन्होंने देखा कि किसी ने उनकी कार का शीशा तोड़कर अंदर रखा बैग चुरा लिया है। बैग में लैपटॉप व अन्य कागजात थे।

दूसरे मामले में ग्रेटर फरीदाबाद की मास्टर रोड स्थित एक मैरिज हॉल के बाहर से चोर ऑटो चुराकर ले गए। पीड़ित कफील सलमानी ने थाना खेड़ी पुल में दी शिकायत में बताया कि वह जीवन नगर पार्ट-दो में परिवार के साथ रहता है। 17 फरवरी की रात वह अपने ऑटो में सवार होकर परिवार के साथ शादी समारोह में गया था।

हर घर परिवार सूर्य नमस्कार कार्यक्रम का समापन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

आयुष महानिदेशक हरियाणा सरकार एवं हरियाणा योग आयोग के मार्गदर्शन तथा जिला आयुष अधिकारी डॉ. संजीव कुमार के नेतृत्व में जिला पलवल में हर घर सूर्य नमस्कार कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

जिला आयुष विभाग द्वारा एक फरवरी से 20 फरवरी तक मनाए जाने वाले हर घर परिवार सूर्य नमस्कार कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन जिला पलवल के विभिन्न महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में संपन्न हुआ। गोस्वामी गणेश दत्त महाविद्यालय पलवल में प्राचार्य डॉ. नरेश कुमार, डॉ. प्रतिभा सिंगला की उपस्थिति में आयुष विभाग की टीम, जिसमें डॉ. कुलदीप प्रसाद, ज्ञानचंद एवं शशि सहरावत आयुष योग सहायक शामिल थे, ने सभी विद्यार्थियों को सूर्य नमस्कार का अभ्यास कराया। सरस्वती महाविद्यालय पलवल में डॉ. हेमलता, नेहा कौशिक, वीणा ने डॉ. बीआर अंबेडकर महाविद्यालय पलवल में डॉ. राजकुमार, कृष्ण कुमार, वर्षा ने, श्री विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी दुधौला में डॉ. सुनील सवाना, नीरज, रोहित ने, एमवीएन ह्यविश्वविद्यालय औरंगाबाद में डॉक्टर प्रशांत वशिष्ठ, नेहा रानी रानी, योगेश ने प्रोटोकॉल के अनुसार सूर्य नमस्कार का अभ्यास सभी विद्यार्थियों को कराया। जिसमें सभी ने बड़े हर्ष के साथ भाग लिया।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है की मेरा पक्षकार सुमन मकान नं.607, भूतल, बिना छत का दाहिना क्षेत्र 125.41 वर्ग। ... के मालिक है तथा सुमन के पास से निम्नलिखित दस्तावेज खो गए हैं ... बंधक बनाया जा रहा है और अन्य मंजिलों को एबीएचएफएल के साथ पंजीकृत बंधक के माध्यम से बंधक बनाया जा रहा है। तथा,यह सूचित किया जाता है की उक्त विलेख के आधार पर किसी प्रकार की कोई भी इकरार, बिक्री,बंधक आदि सिवाय हुकम सिंह के बीच,मान्या नही होगा.तथा अगर किसी व्यक्ति को उक्त संपत्ति मे किसी प्रकार का अधिकार या दावा करना चाहता है तो वह नीचे लिखेन. पर इस प्रकाशन के 08 दिन के अंदर संपर्क कर अपने अधिकार या आपत्ति का की जानकारी दे दे. तथा उक्त कॉगजो को वापस कर दे

एडरेम लिगल सल्यूशन
चैंबर न. ७६०, द्वारका कोर्ट, सेक्टर-१०,द्वारका, नई देल्ही.- ७५. म. ९८९९०१३९१८

PUBLIC NOTICE

"The public at large is informed that my clients **Smt. Sharda Devi** W/o **Sh. Radhey Shyam** and **Mr. Radhey Shyam** S/o **Late Ram Chander** Both R/o House No.-56, Gali No-2, C-Block, Ambikar Vihar, Gokalpur, Delhi -110094, have disowned and debarred their Son **Deepak @ Kalu**, from their all movable & immovable properties, as he is disobedient. The conduct of their said son is indolent and harsh towards the entire family members. Due to his disobedient attitude, misconduct & cruel behavior, my clients have severed their all social relations from him. He is started living separately from my clients, if anybody , deals with **Deepak @ Kalu**, will do so at their own risk, Peril, Cost and consequences, that my clients as well his other family members shall not be responsible in any manner".

SAMARTH BHUTANI, ADVOCATE

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है की मेरा पक्षकार हुकमसिंह,बिना छत के भूतल के,संपत्ति क्रमांक नं.-3123, क्षेत्रफल 60 वर्ग। YDS-प्लाट नंबर। 52-मुस्तातिल नं.28, किला नं. 13, गांव, शकूर बस्ती, दिल्ली, के मालिक है तथा हुकम सिंह के पास से निम्नलिखित दस्तावेज खो गए हैं1. एटीएस और वसीयत सोहन लाल और ओम प्रकाश के पक्ष में,2.कौशल्या देवी के पक्ष में वसीयत,3.चंद्रवती का उत्तर जीवी प्रमाण पत्र तथा,यह सूचित किया जाता है की उक्त विलेख के आधार पर किसी प्रकार की कोई भी इकरार, बिक्री,बंधक आदि सिवाय हुकम सिंह के बीच,मान्या नही होगा.तथा अगर किसी व्यक्ति को उक्त संपत्ति मे किसी प्रकार का अधिकार या दावा करना चाहता है तो वह नीचे लिखेन. पर इस प्रकाशन के 08 दिन के अंदर संपर्क कर अपने अधिकार या आपत्ति का की जानकारी दे दे. तथा उक्त कॉगजो को वापस कर दे

एडरेम लिगल सल्यूशन
चैंबर न. ७६०, द्वारका कोर्ट, सेक्टर-१०,द्वारका, नई देल्ही.- ७५. म. ९८९९०१३९१८

PUBLIC NOTICE

This is to notify the public at large that our client, Mr. Ramchander Prop. Mahindra Seeds having its Registered office at Shop No.20, Ramdwara Mandir, Main Bazar, Opp. Indra Market, Old Subzi Mandi, Delhi-110007 declare that he and his product namely Mahindra Seeds has no concern with MAHINDRA and MAHINDRA. It is further notified that he is not associated with any manner with MAHINDRA and MAHINDRA. Our client had used Mahindra Seeds name for starting his business and through this public notice he withdraw his product name with immediate effect.

ROHIT YADAV (Advocate)
Ch. no. 402, Civil Wings, Tis hazari Courts, Delhi-54

आवश्यक सूचना

मैं नवदीप सिंह होड़ा पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह होड़ा निवासी मकान नं. 430/14, जीन्द रोड, हांसी जिला हिसार, इस तहरीर के माध्यम से अपनी पत्नी जसविन्द्र कौर उर्फ नैन्सी पुत्री श्री सुरेन्द्र सिंह अरोड़ा निवासीया टी-6/1207, पिरामिड अर्बन होम्स-1, सैक्टर-70ए, गुरूग्राम हाल निवासीया केयर ऑफ नवनीत अरोड़ा पत्नी श्री सुरेन्द्र सिंह अरोड़ा मकान नं. ए-29, फर्स्ट फलोर, नजदीक मिश्रा वैल्डिंग, गली नं. 34, सडे बाजार वाली गली, चन्द्र विहार, दिल्ली को सूचित करना चाहता हू कि मैनें आपके विरूद्ध एक मुकद्मा सैक्शन 9 हिन्दू मैरिज एक्ट के तहत फैमिली कोर्ट, हांसी जिला हिसार, हरियाणा में दायर किया हुआ था, क्योकि आप दिनांक 15 मई, 2021 को बिना किसी कारण से मेरी सोसाईटी को छोड कर चली गई थी, अब उपरोक्त मुकद्मा का फैसला करते हुऐं माननीय फैमिली कोर्ट, हांसी ने दिनांक 21-12-2023 को मेरा उपरोक्त मुकदमा मंजूर फरमाते हुऐ आपको दिनांक 21-12-2023 से 2 माह के अन्दर-अन्दर मेरी सोसाईटी ज्वाईन करने का आपके विरूद्ध हुक्म फरमाया है। मैं आपको उपरोक्त हुकम के बारे अवगत करवाने के लिए बजरिये रजिस्टर्ड पोस्ट दिनांक 15.01.2024 को उपरोक्त फैसला कि प्रमाणित प्रति भेज चुका हूं, किन्तु आपने जानबूझ कर उपरोक्त फैसले का ज्ञान होते हुऐं भी उपरोक्त रजिस्टर्ड लैटर नं. EH3238394051N दिनांक 15.01.2024 हासिल ना करके डाक विभाग के कर्मचारियों से साजबाज होकर झूठी रिर्पोट उपरोक्त राजिस्टर्ड लैटर पर दर्ज करवा दी है, जो कि उपरोक्त लैटर पर मुझे वापिस प्राप्त हो चुका है। उपरोक्त सभी तथ्यों की जानकारी देने बारे मुझे मौजूदा आवश्यक सूचना मजबूरन समाचार पत्र में प्रकाशित करवानी पड़ रही है। आप सूचित रहें। दिनांक 19.02.2024

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि श्रीमती किरण सिब्बल पत्नी श्री पुनित ज्योति सिब्बल 'सोसाइटी बिल्ट अप फ्रीहोल्ड संपत्ति फ्लैट नंबर 205, भूतल, दिल्ली प्रशासन अधिकारी सी.जी.एच.एस लिमिटेड, प्लॉट नंबर 28, मैत्री अपार्टमेंट, आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, नई दिल्ली-110092, एरिया परिमाप 71.44 वर्ग मीटर' बिक्री विलेख दिनांक 06.08.2012 के माध्यम से कब्जा के 'स्वामित्व धारक' है। जिसे इसके बाद 'अनुसूची संपत्ति' के रूप में जाना जाएगा। पंजीकरण संख्या 15865, पुस्तक सं.1, खंड सं. 6619, पृष्ठ 30-37, 07.08.2012 को उप रजिस्ट्रार-VIII, गीता कॉलोनी, नई दिल्ली के कार्यालय में विधिवत पंजीकृत है। अनुसूची संपत्ति से संबंधित मूल दस्तावेज (i) श्री आर.डी. बीर के पक्ष में फ्लैट का कब्ज़ा पत्र दिनांक 05.08.1989 और (ii) अनुसूची संपत्ति के लिए श्री आर.डी.बीर के द्वारा श्री अनुज कुमार के पक्ष निष्पादित पंजीकृत बिक्री विलेख दिनांक 19.06.2008 का पंजीकरण संबंधी विवरण पृष्ठ सभी खो गई हैं/गुम हो गए है और आज की तारीख में अप्राप्य है। जिसके एवज में सूचना रिपोर्ट दिनांक 20.02.2024 को दिल्ली पुलिस को दिया गया है जिसका एलआर नंबर 1463484/2024 है। इसलिए, यह आम जनता को बड़े पैमाने पर सूचित किया जाता है, यानी किसी भी व्यक्ति, कंपनी, प्राधिकरण, सोसायटी, संगठन, वित्तीय संस्थान, बैंक, एचयूएफ आदि, उपर्युक्त खोए हुए/गुम हुए मूल दस्तावेजों के बारे में कोई जानकारी, अभिरक्षा या कब्ज़ा होना या अन्यथा अनुसूची संपत्ति में स्वामित्व, उत्तराधिकार, विरासत, बिक्री, बंधक के माध्यम से कोई दावा, अधिकार, शीर्षक, हित, कब्ज़ा आदि। विनिमय, शुल्क, उपहार, ट्रस्ट, ऋणभार इत्यादि। सहायक दस्तावेजों के साथ आगे आ सकते हैं, जिन्हें इस प्रकाशन की दिनांक से 7 दिनों के भीतर अधोहस्ताक्षरी को सौंप दिया जाना चाहिए, जिसकी समाप्ति के बाद, कोई भी दावा या आपत्ति, यदि उठाया या प्राप्त किया जाता है, तो उसे अमान्य शून्य माना जाएगा और माफ कर दिया जाएगा। और स्वामित्व धारक आगे बढ़ेगा अनुसूची संपत्ति को बेचने के लिए, जैसा कि वर्तमान में इरादा है।

प्रवेश कुमार (अधिवक्ता)
कार्यालय का पता: 27, बेसमेंट, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-92
चैंबर का पता: 363, साकेत कैंट, नई दिल्ली
मोबाइल नंबर: 9999228185

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given that **Karamjeet Kaur & Shilpi Batra** claims to be owner and in possession of **Ground Floor of Prop. No. 14, Pocket-8, sector-23, Rohini, Delhi (hereinafter called the said property)** by virtue of Sale Deed **Doc. No. 3466 dated 26.07.2022 having purchased from** Mahender Singh a legal heir of Late Parkash Kaur & Said **Karamjeet Kaur & Shilpi Batra** has agreed to sell the said Property to **Braj Singh** & Said **Braj Singh** has agreed to create a mortgage in favour of our clients, **IDFC FIRST BANK LTD, Rajendra Place Branch, New Delhi** All person/s having any claim against or in respect of the said Property, or any part thereof, by way of sale, exchange, mortgage (equitable/registered or otherwise), gift, trust, inheritance, lien or otherwise howsoever, are hereby requested to notify the same in writing to us with supporting documentary evidence at the address mentioned below within **10 days** from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person or persons will be considered to have been waived and/or abandoned and our client shall proceed with the disbursement of loan against the said property and subsequent creation of mortgage in respect thereof.

Vishal Diwan (Advocate)
For Diwan and Company LLP
H. No.2 (LGF), NRI Complex New Delhi-19
Mobile No. 9818399999

SALE NOTICE

The under mentioned Assets will be sold through auction on **"AS IS WHERE IS BASIS"** and **"AS IS WHAT IS BASIS"** for recovery of dues as per court orders, in the following cases:-

Case Details	Asset Details
ICICI Bank Ltd. Vs. Kuldeep, CS (Comm) 267/20	Vehicle No. HR51BW0444, Make and Model- TATA SAFARI, Manu Year- 2017
ICICI Bank Ltd. Vs. Mohit, CS (Comm) No.1418/2020	Vehicle No. DL8CAY6543, Make and Model- MARUTI SUZUKI Vitara Brezza, Manu Year- 2019

Auction Date: March 02, 2024 From 11:00 am to 2:00 pm.
Place of Auction: Godara Yard, Khewat No. 166/1, Near Atul Kataria Chowk, Behind Gyan Devi, School, Sec - 17, Sukhrali, Gurugram - 122022
Contact Person: Swapnil Upadhyay (8126013708)/ Manu Anand (8928935040)

Case Details	Asset Details
ICICI Bank Vs. Jitendara Bhati and Others CS (Comm) 2690/21	Vehicle No. UP16FT8014, Make and Model- ASHOK LEYLAND LTD PARTNER, Manu Year- 2018

Auction Date: March 02, 2024 From 11:00 am to 2:00 pm.
Place of Auction: Mahakal Parking yard, Khasra No 527 Village Banthla Near Indane Gas Plant Loni Ghaziabad- UP, 201102
Contact Person: Swapnil Upadhyay (8126013708)/ Manu Anand (8928935040)

Terms of Sale

The particulars of the said asset specified herein above have been stated to the best of the information and knowledge of the undersigned, who shall however not be responsible for any error, misstatement or omission in the said particulars. The interested participant/s are therefore requested, in their own interest, to satisfy himself / themselves/ itself with regard to the said asset and other relevant details pertaining to it before submitting the bids. All bidders are required to come at auction site with original KYC documents to participate in the auction.
Successful bidder shall have to deposit sale amount within 5 days from the approval date by the way of pay order/demand draft/RTGS/NEFT.
The intending bidders may visit at **ICICI Bank Ltd, Shal Tower Plot No. 23, New Rohtak Road Karol Bagh, Delhi- 110005** for details and inspection of the said hypothecated vehicles.

SALE NOTICE

The under mentioned Assets will be sold through auction on **"AS IS WHERE IS BASIS"** and **"AS IS WHAT IS BASIS"** for recovery of dues as per court orders, in the following cases:-

ICICI Bank Vs Jalan Transport Pvt Ltd, TRC/1879/2022 OA/389/2019 (DELHI DRT 3)	Vehicle No. UP13AT7301, Make and Model- TATA MOTORS 4923, Manu Year- 2017
ICICI Bank Vs Sandeep Kumar, RC NO. 90/2019, IN OA/ 43/2017	Vehicle No. UP16BE5195, Make and Model -Renault Fluence, Manf. Year- 2015
ICICI Bank Vs Sanjay Kumar, CS (COMM) 2884/19	Vehicle No.UP14HT5870, Make & Model- Ashok Leyland Partner, Manu Year- 2019
ICICI Bank Limited vs. Prem Mohan Sharma, CS (Comm.) - 298/2018	Vehicle No.- UP14DJ5151, Make and Model- Maruti Udyog Baleno, Manf. Year- 2017

&

CASE DETAILS	Asset Details	Reserve Price	EMD
ICICI BANK VS Deepak Malhotra, RC/31/2020	Vehicle No. HR26BR8200, Make and Model- BMW 530 D, Manu Year- 2011	Rs. 380000/-	Rs. 38000/-

Auction Date: March 02, 2024 From 11:00 AM to 02:00 PM.
Auction Type: Online Auction
Auction Portal Name & URL Link: Car Dekho and https://auctions.cardekho.com/#/
Contact Person- Swapnil Upadhyay (8126013708)/ Manu Anand (8928935040)
Note: DD/PO of EMD amount is to be made in favour of ICICI BANK LIMITED payable at Delhi and all bidders need to submit original DD/PO along with self-attested KYC at the **ICICI Bank Ltd, Shal Tower Plot no. 23, New Rohtak Road, Karol Bagh, Delhi-110005 on or before March 01, 2024 by 05:00 pm.**

Terms of Sale

The particulars of the said asset specified herein above have been stated to the best of the information and knowledge of the undersigned, who shall however not be responsible for any error, misstatement or omission in the said particulars. The interested participant/s are therefore requested, in their own interest, to satisfy himself / themselves/ itself with regard to the said asset and other relevant details pertaining to it before submitting the bids.
Successful bidder shall have to deposit sale amount within 5 days from the auction date by the way of pay order/demand draft/RTGS/NEFT. In case if you fail to make the payment of remaining sale amount within 5 days, your EMD amount will be forfeited (Where applicable).
The intending bidders may visit at ICICI Bank Ltd, Shal Tower Plot no. 23, New Rohtak Road, Karol Bagh, Delhi-110005 for details and inspection of the said hypothecated vehicles.

सांकेतिक कब्ज़े की सूचना

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, प्लॉट नंबर- 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005

जबकि

अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में तथा प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए नीचे वर्णित कर्ज़दारों को माँग सूचनाएँ निर्गमित की थीं, जिसमें उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर सूचना में वर्णित राशि का प्रतिभुगतान करने को कहा गया था।
कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार/ज़मानतदार राशि का प्रतिभुगतान करने में विफल रहे हैं, अतएव एतद् द्वारा कर्ज़दार तथा जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरदाता द्वारा सांकेतिक अधिग्रहण किया गया है जो कि उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत नियम 8 में दर्शाया गया है। संपत्ति तथा अधिग्रहण की तिथि नीचे दर्शाई गई है। एतद् द्वारा विशेष रूप से कर्ज़दार एवं जनसाधारण को संपत्ति के संव्यवहार नहीं करने के लिए सचेत किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभार के अधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार/ सह-कर्ज़दार का नाम/ ऋण खाता क्र.	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्ज़े की तिथि	डिमांड नोटिस की तिथि/ डिमांड नोटिस में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	उमेश कुमार/ आशु/ LBNOD00002885329	फ्लैट नंबर 408, चौथी मंज़िल (बिना छत अधिकार के), टॉवर सी, स्टार रामेश्वरम, एनएच 58, राज नगर एक्सटेंशन, ग्राम नूर नगर, गाजियाबाद/ फरवरी 19, 2024	अगस्त 28, 2023 रु. 18,99,953/-	दिल्ली/ एनसीआर और मुरादाबाद
2.	राजेंद्र नारायण दलाई/ दीपक नारायण दलाई/ LBPUN00003210803	फ्लैट नंबर 812, 8वीं मंज़िल, वेव सिटी, ड्रीम होम्स- टॉवर 7, एनएच 24 गाजियाबाद/ फरवरी 19, 2024	मई 26, 2023 रु. 14,72,202/-	दिल्ली/ एनसीआर और पुणे
3.	फरहत हाशमी/ नाजिम खान/ LBGHZ00001200397	फ्लैट नंबर 10/11, दूसरी मंज़िल, जी.डी.ए. और शिप्रा एस्टेट लिमिटेड, शिप्रा सन सिटी-2, इंदिरापुरम, गाजियाबाद/ फरवरी 19, 2024	अक्टूबर 10, 2023 रु. 1,18,376/-	दिल्ली/ एनसीआर
4.	फरहत हाशमी/ नाजिम खान/ इनबिसात अहमद अल्वी/ LBGHZ00000946904	फ्लैट नंबर 10/11, दूसरी मंज़िल, जी.डी.ए. और शिप्रा एस्टेट लिमिटेड, शिप्रा सन सिटी-2, इंदिरापुरम, गाजियाबाद/ फरवरी 19, 2024	अक्टूबर 10, 2023 रु. 5,11,137/-	दिल्ली/ एनसीआर
5.	ओमप्रकाश आर्य/ राजेन्द्री आर्य/ LBDEL00001384871	फ्लैट नंबर एस 1, प्लॉट नंबर 48, दूसरी मंज़िल (एचआईजी), सेक्टर 5, राजेंद्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश/ फरवरी 19, 2024	अक्टूबर 16, 2023 रु. 1,90,301/-	दिल्ली/ एनसीआर

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णत: नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : फरवरी 21, 2024
स्थान : दिल्ली/ एनसीआर

प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लि.

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, शाल टॉवर, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005

सार्वजनिक सूचना - प्रत्याभूत आस्ति की बिक्री हेतु निविदा-सह-ई-नीलामी
[नियम 8(6) का परंतुक देखें]
अचल संपत्तियों की बिक्री हेतु सूचना

अचल संपत्तियों के विक्रय के लिए ई-नीलामी विक्रय सूचना वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुन: निर्माण तथा प्रतिभूति हित अधिनियम, 2002 के अन्तर्गत सहपठित प्रतिभूति ब्याज प्रवर्तन नियमावली, 2002 की धारा 8(6) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए जारी की गई है।
सर्वजन तथा व्यक्तिगत रूप से कर्ज़दार एवं ज़मानतदार को इस सूचना द्वारा सूचित किया जाता है कि नीचे दर्शाई गई अचल संपत्ति के संरक्षित ऋणदाता के पास बंधक/ अधिभारित है। उनका भौतिक अधिग्रहण आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड (संरक्षित ऋणदाता) द्वारा प्राधिकृत अधिकारी के रूप में कर लिया गया है एवं दर्शाए विवरण अनुसार उनके द्वारा "जहाँ है जैसी है", "जैसी है वैसी है" एवं "जिस भी स्थिति में है" के आधार पर अचल संपत्ति के विक्रय के लिए प्रस्ताव आमंत्रित किए जा रहे हैं :-

क्र. सं.	कर्ज़दार (रों)/ सह-कर्ज़दारों/ ज़मानतदारों के नाम/ ऋण खाता संख्या	प्रत्याभूत आस्ति का विवरण, ऋणभारों सहित, यदि कोई है	बकाया राशि (रु. में)	सुरक्षित मूल्य (रु. में) / धरोहर राशि जमा (रु. में)	संपत्तियों निरीक्षण की तिथि एवं समय	ई-नीलामी की तिथि एवं समय
(ए)	(बी)	(सी)	(डी)	(ई)	(एफ)	(जी)
1.	कनेक्शन इंडिया डॉटकॉम प्राइवेट लिमिटेड (कर्ज़दार), कनेक्शन इंडिया डॉटकॉम प्राइवेट लिमिटेड, नितिन कंबोज, अमन साहनी (ज़मानतदारो/ बंधककर्ता) ऋण खाता संख्या 002105014346/ 002160000714/ 002160000752	यूनिट नंबर 524 5वीं मंज़िल, सिल्वरटन टॉवर सेक्टर 50, ग्राम बादशाहपुर, गुड़गाँव 122001; क्षेत्रफल : 725 वर्ग फुट	रु. 1,18,00,544/- (फरवरी 13, 2024 तक)	रु. 45,00,000/- / रु. 4,50,000/-	मार्च 02, 2024 को दोप. 12:00 बजे से दोप. 02:00 बजे तक	मार्च 19, 2024 को सु. 11:00 बजे से

ऑनलाइन नीलामी हमारी ई-नीलामी संस्था **मेसर्स नेक्सजेन सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड** की वेबसाइट **(URL Link- https://disposalhub.com)** पर संचालित होगी। बंधककर्ताओं/ सूचना प्रेषितकर्ताओं को **मार्च 18, 2024** को **शाम 05:00** बजे से पूर्व तक कुल बकाया राशि उस पर आगे ब्याज सहित भुगतान करने का अंतिम अवसर दिया जाता है, जिसमें विफल रहने पर इस/ इन संरक्षित संपत्ति/यों की बिक्री निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार की जाएगी।
संभावित बोलीकर्ता (बोलीकर्ताओं) को बयाना राशि (ईएमडी) डिमाण्ड ड्राफ्ट (डीडी) (सारणी **ई** संदर्भ) जो **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, शाल टॉवर, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005** में **मार्च 18, 2024** तक **शाम 05:00** बजे से पूर्व जमा करना अनिवार्य है एवं इसके पश्चात् वे अपना प्रस्ताव उपरोक्त वर्णित वेबसाइट के माध्यम से ईएमडी के भुगतान साक्ष्य अर्थात बैंक डीडी पावती की स्कैन इमेज, **मार्च 18, 2024** तक **शाम 05:00** बजे से पूर्व जमा करें। कृपया नोट करें कि संभावित बोलीकर्ता (बोलीकर्ताओं) वेबसाइट के माध्यम से उनके प्रस्ताव को जमा कराने में विफल रहने पर वे **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, शाल टॉवर, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005** में निविदा प्रलेखों की हस्ताक्षरित प्रति को **मार्च 18, 2024** को **शाम 05:00** बजे से पूर्व तक जमा करवा सकते हैं। बयाना राशि का डिमाण्ड ड्राफ्ट/ पे ऑर्डर किसी भी राष्ट्रीयकृत/ शैड्यूल्ड बैंक द्वारा **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड** की **दिल्ली** शाखा के पक्ष में भुगतान हेतु होना चाहिए।
संपत्ति अवलोकन, ई-नीलामी के नियम एवं शर्तों तथा निविदा प्रक्रिया के संदर्भ में स्पष्टीकरण हेतु कृपया **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड** को फोन नंबर **8126013708/ 8584874809** पर संपर्क करें।
कृपया नोट करें कि मार्केटिंग एजेंसियाँ **1. मेसर्स नेक्सजेन सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, 2. ओजीओ असेट मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड व 3. हेक्टा प्रॉपटेक प्राइवेट लिमिटेड** इस संपत्ति की बिक्री में सुगमता हेतु सलंग्न हैं।
प्राधिकृत अधिकारी बिना किसी कारण दर्शाए किसी एक अथवा अधिक निविदा व बोली को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं।
बिक्री के विस्तृत नियमों एवं शर्तों हेतु कृपया वेबसाइट **www.icicibank.com/n4p4s** पर संपर्क करें।

तिथि : फरवरी 21, 2024
स्थान : गुड़गाँव

प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड

सांकेतिक कब्ज़े की सूचना

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, प्लॉट नंबर- 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005

जबकि

अधोहस्ताक्षरी ने आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के तहत और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित अधिनियम की धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कर्ज़दार और डीएचएफएल के बीच हुए ऋण अनुबंध के अनुसरण में मंज़ूर की गई आवास ऋण सुविधा के संबंध और प्रतिभूति के प्रवर्तन के संबंध में निम्न वर्णित कर्ज़दारों को (बुनियादी समूह दीवान हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड द्वारा आईसीआईसीआई बैंक को समनुदेशित किए जाने पर) माँग सूचनाएँ जारी की थीं, जिसमें उनसे सूचना में वर्णितानुसार बकाया राशि का भुगतान, उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर करने की माँग की गई थी।
कर्ज़दार उपरोक्त राशि चुकाने में असफल रहे हैं, एतद् द्वारा कर्ज़दार और जनसाधारण को सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरी ने उक्त नियमावली के नियम 8 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यहाँ नीचे वर्णित संपत्ति का कब्ज़ा निम्न वर्णित तिथि को प्राप्त कर लिया है।
कर्ज़दार को विशेष रूप से तथा जनसाधारण को एतद्द्वारा उक्त संपत्ति के संबंध में संव्यवहार नहीं करने हेतु सावधान किया जाता है तथा उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभाराधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार का नाम/ (ऋण खाता नंबर) (डीएचएफएल पुराना ऋण खाता नंबर एवं आईसीआईसीआई नया ऋण खाता नंबर)	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्ज़े की तिथि	माँग सूचना की तिथि/ माँग सूचना में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	सुभाष कुमार/विकास कुमार/ (19700042207 एवं QZGUR00005040240)	फ्लैट नंबर- 218, दूसरी मंजिल, वेम्बली एस्टेट ईडब्ल्यूएस, रोज़वुड सिटी, सेक्टर 49-50, गुड़गाँव/ फरवरी 19, 2024	अगस्त 31, 2022 रु. 8,55,448/-	दिल्ली/एनसीआर एवं डबवाली (सिरसा)

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णत: नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : फरवरी 21, 2024
स्थान : दिल्ली/एनसीआर

प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लि.

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, शाल टॉवर, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली -110005

सार्वजनिक सूचना - प्रत्याभूत आस्ति की बिक्री हेतु निविदा-सह-ई-नीलामी
[नियम 8(6) का परंतुक देखें]
अचल संपत्तियों की बिक्री हेतु सूचना

अचल संपत्तियों के विक्रय के लिए ई-नीलामी विक्रय सूचना वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुन: निर्माण तथा प्रतिभूति हित अधिनियम, 2002 के अन्तर्गत सहपठित प्रतिभूति ब्याज प्रवर्तन नियमावली, 2002 की धारा 8(6) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए जारी की गई है।
सर्वजन तथा व्यक्तिगत रूप से कर्ज़दार एवं ज़मानतदार को इस सूचना द्वारा सूचित किया जाता है कि नीचे दर्शाई गई अचल संपत्ति के संरक्षित ऋणदाता के पास बंधक/ अधिभारित है। उनका भौतिक अधिग्रहण आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड (संरक्षित ऋणदाता) द्वारा प्राधिकृत अधिकारी के रूप में कर लिया गया है एवं दर्शाए विवरण अनुसार उनके द्वारा "जहाँ है जैसी है", "जैसी है वैसी है" एवं "जिस भी स्थिति में है" के आधार पर अचल संपत्ति के विक्रय के लिए प्रस्ताव आमंत्रित किए जा रहे हैं :-

क्र. सं.	कर्ज़दार (रों)/ सह-कर्ज़दारों/ ज़मानतदारों के नाम/ ऋण खाता संख्या	प्रत्याभूत आस्ति का विवरण, ऋणभारों सहित, यदि कोई है	बकाया राशि (रु. में)	सुरक्षित मूल्य (रु. में) / धरोहर राशि जमा (रु. में)	संपत्तियों निरीक्षण की तिथि एवं समय	ई-नीलामी की तिथि एवं समय
(ए)	(बी)	(सी)	(डी)	(ई)	(एफ)	(जी)
1.	ट्रैवोनेशन हॉलीडेज प्राइवेट लिमिटेड- (कर्ज़दार), मोहम्मद फैजल (सह-आवेदक/बंधककर्ता/ ज़मानतदार), रीना (ज़मानतदार, मोहम्मद अब्बास (बंधककर्ता/ सह-आवेदक एवं ज़मानतदार), शीबा नकवी (ज़मानतदार), मोहम्मद फैजल (ज़मानतदार) 629705015540	दुकान प्राइवेट नंबर जी-11, ग्राउंड फ्लोर पर छत के अधिकार के बिना छत के स्तर तक, संपत्ति नंबर ए-1/बी का एक हिस्सा, खसरा नंबर 63 के बाहर, मयूर विहार, चरण 1, आचार्य निकेतन की आबादी में स्थित, गांव कोटला दिल्ली- 110091/ क्षेत्रफल- 166.34 वर्ग फुट	रु. 1,13,76,625/- (फरवरी 15, 2024 तक)	रु. 37,43,000/- / रु. 3,74,300/-	मार्च 02, 2024 को सु. 11:00 बजे से दोप. 01:00 बजे तक	मार्च 19, 2024 को दोप. 01:00 बजे से
		दुकान प्राइवेट नंबर जी-12, ग्राउंड फ्लोर पर छत के अधिकार के बिना छत के स्तर तक, संपत्ति नंबर ए-1/बी का एक हिस्सा, खसरा नंबर 63 के बाहर, मयूर विहार, चरण 1, आचार्य निकेतन की आबादी में स्थित, गांव कोटला, इलाका शाहदरा, दिल्ली- 110091/ क्षेत्रफल- 147.68 वर्ग फुट		रु. 33,23,000/- / रु. 3,32,300/-		

ऑनलाइन नीलामी हमारी ई-नीलामी संस्था **मेसर्स नेक्सजेन सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड** की वेबसाइट **(URL Link- https://disposalhub.com)** पर संचालित होगी। बंधकदाताओं/ सूचना प्रेषितकर्ताओं को **मार्च 18, 2024** को **शाम 05:00** बजे से पूर्व तक कुल बकाया राशि उस पर आगे ब्याज सहित भुगतान करने का अंतिम अवसर दिया जाता है, जिसमें विफल रहने पर इस/ इन संरक्षित संपत्ति/यों की बिक्री निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार की जाएगी।
संभावित बोलीकर्ता (बोलीकर्ताओं) को बयाना राशि (ईएमडी) डिमाण्ड ड्राफ्ट (डीडी) (सारणी **ई** संदर्भ) जो **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, शाल टॉवर, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली -110005** में **मार्च 18, 2024** तक **शाम 05:00** बजे से पूर्व जमा करना अनिवार्य है एवं इसके पश्चात् वे अपना प्रस्ताव उपरोक्त वर्णित वेबसाइट के माध्यम से ईएमडी के भुगतान साक्ष्य अर्थात बैंक डीडी पावती की स्कैन इमेज, **मार्च 18, 2024** तक **शाम 05:00** बजे से पूर्व जमा करें। कृपया नोट करें कि संभावित बोलीकर्ता (बोलीकर्ताओं) वेबसाइट के माध्यम से उनके प्रस्ताव को जमा कराने में विफल रहने पर वे **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, शाल टॉवर, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005** में निविदा प्रलेखों की हस्ताक्षरित प्रति को **मार्च 18, 2024** को **शाम 05:00** बजे से पूर्व तक जमा करवा सकते हैं। बयाना राशि का डिमाण्ड ड्राफ्ट/ पे ऑर्डर किसी भी राष्ट्रीयकृत/ शैडूल्ड बैंक द्वारा **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड** की **दिल्ली** शाखा के पक्ष में भुगतान हेतु होना चाहिए।
संपत्ति अवलोकन, ई-नीलामी के नियम एवं शर्तों तथा निविदा प्रक्रिया के संदर्भ में स्पष्टीकरण हेतु कृपया **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड** को फोन नंबर **8928935040/ 8584874809** पर संपर्क करें।
कृपया नोट करें कि मार्केटिंग एजेंसियाँ **1. मेसर्स नेक्सजेन सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, 2. ओजीओ असेट मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड व 3. हेक्टा प्रॉपटेक प्राइवेट लिमिटेड** इस संपत्ति की बिक्री में सुगमता हेतु सलंग्न हैं।
प्राधिकृत अधिकारी बिना किसी कारण दर्शाए किसी एक अथवा अधिक निविदा व बोली को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं।
बिक्री के विस्तृत नियमों एवं शर्तों हेतु कृपया वेबसाइट **www.icicibank.com/n4p4s** पर संपर्क करें।

तिथि : फरवरी 21, 2024
स्थान : दिल्ली/एनसीआर

प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड

चुनाव संघर्ष
विकास बनाम वंशवाद

गृह मंत्री अमित शाह के अनुसार, लोकसभा चुनाव में संघर्ष मोदी के विकास एजेंडे तथा 'इंडिया' समूह के भ्रष्टाचार के बीच है और आम चुनाव की ओर बढ़ते देश में प्राचीन महाभारत की प्रतिध्वनि सुनाई देने लगी है। भाजपा के मुख्य चुनाव रणनीतिकार गृह मंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री मोदी के विकास दृष्टिकोण तथा विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच विरोधी विमर्शों को रेखांकित किया है। शाह ने हाल ही में वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को प्राचीन ग्रंथ महाभारत जैसा बताया जहां योग्यता का दुष्टता तथा ईमानदारी का धोखाधड़ी से मुकाबला था। उन्होंने मोदी को आधुनिक अर्जुन की तरह पेश किया जो प्रगति व राष्ट्रीय एकता के लिए अभियान छेड़े हैं, जबकि इसके विरोध में 'इंडिया' समूह सात वंशवादी पार्टियों व अन्य दलों का गठजोड़ है जो भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। शाह के विमर्श में केन्द्रीय स्थान मोदी को मिला जो देश को सुनिश्चित भविष्य की ओर ले जा रहे हैं। भाजपा ने पहले ही आर्थिक प्रगति, ढांचागत विकास तथा सामाजिक कल्याण को महत्व देकर भारत को विश्व शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। शाह ने विपक्ष को इसके बिल्कुल उलट रूप में प्रस्तुत किया है जिस पर भ्रष्टाचार, पक्षपात और प्रशासनिक विफलता के आरोप हैं। इससे उन्होंने इन दलों की विश्वसनीयता और निष्ठा पर सवाल उठाए हैं। शाह के विमर्श में मोदी के सही नेतृत्व तथा विपक्ष के नैतिक दीवालियेपन के बीच नैतिक अंतर रेखांकित किया गया है। मोदी के विकास एजेंडे तथा 'इंडिया' समूह की कमियों को एक दूसरे के खिलाफ रखने से अत्यधिक तीक्ष्ण राजनीतिक प्रदर्शन का मंच तैयार हुआ है।

हालांकि, इस सरल विमर्श की तुलना में भारतीय लोकतंत्र का यथार्थ बहुत जटिल है जिसमें सत्ता संघर्ष, सामाजिक-आर्थिक असमानतायें व क्षेत्रीय पहचानें चुनावी परिदृश्य बनाती हैं। लेकिन 'इंडिया' समूह अपनी ही करनी से भ्रमित है और हर गुजरते दिन के साथ बिखरता जा रहा है। महाराष्ट्र में रांकापा में विभाजन हुआ, पंजाब में 'आप' और कांग्रेस के बीच कोई तालमेल नहीं है तथा उसने दिल्ली में केवल एक सीट का प्रस्ताव कर 'देश की सबसे पुरानी पार्टी' का मजाक उड़ाया है। सत्तारूढ़ टीएमसी और कांग्रेस के बीच उठापटक जारी है। संदेशखाली की शर्मनाक घटना सुर्खियों में आने के बाद ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल में कांग्रेस को स्थान नहीं देने वाली हैं, लेकिन राहुल गांधी कुछ और कह रहे हैं। विडंबना है कि विपक्षी पार्टियां अपने खिलाफ उठने वाले सवालों को खारिज करने के जितने प्रयास करती हैं, वे उतने ही तीखे होते जाते हैं। अमित शाह ने स्पष्ट रूप से विपक्षी नेताओं का नाम लेकर कहा कि वे अपने-अपने परिवारी सदस्यों को स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। विपक्ष के कई नेता प्रवर्तन निदेशालय-ईडी द्वारा भ्रष्टाचार के मामलों में बार-बार समन भेजने पर भी नहीं पेश होते हैं और समय काट रहे हैं, जबकि उनके पास पैसे या अच्छे वकीलों की कोई कमी नहीं है। देश की जनता इस पूरी परिघटना को बहुत गौर से देख रही है। मीडिया व खासकर एलेक्ट्रानिक मीडिया तथा सोशल मीडिया की जमीन पर व्यापक पहुंच के चलते भारत के युवा गंभीर राजनीतिक-आर्थिक विश्लेषण करने में सक्षम हैं और उनको केवल विभाजनकारी या पहचान के मुद्दों से भ्रमित नहीं किया जा सकता है। मोदी सरकार के दस साल में विकास सभी जगह दिख रहा है। देश की जनता का मोदी सरकार की नीतियों तथा उनके नेतृत्व में देश के भविष्य पर विश्वास अभूतपूर्व रूप से बढ़ा है। बकौल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, अब तो विदेशी भी मान चुके हैं कि 'आएंगे तो मोदी ही।'

संत शिरोमणि विद्यासागर जी को श्रद्धांजलि

आचार्य विद्यासागर जी महाराज सम्यकज्ञान, सम्यकदर्शन और सम्यक चरित्र की त्रिवेणी थे। उनके व्यक्तित्व की सबसे विशेष बात ये थी कि उनका सम्यक दर्शन जितना आत्मबोध के लिए था, उतना ही सशक्त उनका लोक बोध भी था।

नरेंद्र मोदी
(लेखक, भारत के प्रधानमंत्री हैं)

जीवन में हम बहुत कम ऐसे लोगों से मिलते हैं, जिनके निकट जाते ही मन-मस्तिष्क एक सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है। ऐसे व्यक्तियों का स्नेह, उनका आशीर्वाद, हमारी बहुत बड़ी पूंजी होता है। संत शिरोमणि आचार्य श्री108 विद्यासागर जी महाराज मेरे लिए ऐसे ही थे। उनके समीप अलौकिक आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता था। आचार्य विद्यासागर जी जैसे संतों को देखकर ये अनुभव होता था कैसे भारत में आध्यात्म किसी अमर और अजस्र जलधारा के समान अविरल प्रवाहित होकर समाज का मंगल करता रहता है।

आज मुझे, उनसे हुई मुलाकातें, उनसे हुआ संवाद, सब बार-बार याद आ रहा है। पिछले साल नवंबर में छत्तीसगढ़ में डोंगरगढ़ के चंद्रगिरी जैन मंदिर में उनके दर्शन करने जाना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात थी। तब मुझे जरा भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि आचार्य जी से मेरी यह आखिरी मुलाकात होगी। वह पल मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया है। इस दौरान उन्होंने काफी देर तक मुझसे बातें कीं।उन्होंने पिता तुल्य भाव से मेरा ख्याल रखा और देश सेवा में किए जा रहे प्रयासों के लिए मुझे आशीर्वाद भी दिया। देश के विकास और विश्व मंच पर भारत को मिल रहे सम्मान पर उन्होंने प्रसन्नता भी व्यक्त की थी। अपने कार्यों की चर्चा करते हुए वह काफी उत्साहित थे। इस दौरान उनकी सौम्य दृष्टि और दिव्य मुस्कान प्रेरित करने वाली थी।उनका आशीर्वाद आनंद से भर देने वाला था, जो हमारे अंतर्मन के साथ-साथ पूरे वातावरण में उनकी दिव्य उपस्थिति का अहसास करा रहा था। उनका जाना उस अद्भुत मार्ग दर्शक को खोने के समान है, जिन्होंने मेरा और अनगिनत लोगों का मार्ग निरंतर प्रशस्त किया है।

भारतवर्ष की ये विशेषता रही है कि यहां की पावन धरती ने निरंतर ऐसी महान विभूतियों को जन्म दिया है, जिन्होंने लोगों को दिशा दिखाने के साथ-साथ समाज को भी बेहतर बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संतों और समाज सुधार की इसी महान परंपरा में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का प्रमुख स्थान है। उन्होंने वर्तमान के साथ ही भविष्य के लिए भी एक नई राह दिखाई है। उनका संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक प्रेरणा से भरा रहा। उनके जीवन का हर अध्याय, अद्भुतज्ञान, असीम करुणा और मानवता के उत्थान के लिए अटूट प्रतिबद्धता से सुशोभित है।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी सम्यकज्ञान, सम्यकदर्शन और सम्यक चरित्र की त्रिवेणी थे। उनके व्यक्तित्व की सबसे विशेष बात ये थी कि उनका सम्यक दर्शन जितना आत्मबोध के लिए था, उतना ही सशक्त उनका लोक बोध भी था। उनका सम्यक ज्ञान जितना धर्म को लेकर था, उतना ही उनका चिंतन लोक विज्ञान के लिए भी रहता था।

करुणा, सेवा और तपस्या से परिपूर्ण आचार्य जी का जीवन भगवान महावीर के आदर्शों का प्रतीक रहा, उनका जीवन, जैन धर्म की मूल भावना का सबसे बड़ा उदाहरण रहा। उन्होंने जीवन भर अपने काम और अपनी दीक्षा से इन सिद्धांतों का संरक्षण किया। हर व्यक्ति के लिए उनका प्रेम, ये बताता है कि जैन धर्म में 'जीवन' का महत्व क्या है। उन्होंने सत्यनिष्ठा के साथ अपनी पूरी आयु तक ये सीख दी कि विचारों, शब्दों और कर्मों की पवित्रता कितनी बड़ी होती है। उन्होंने हमेशा जीवन के सरल होने पर जोर दिया। आचार्य जी जैसे व्यक्तित्वों के कारण ही, आज पूरी दुनिया को जैन धर्म और भगवान महावीर के जीवन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

वो जैन समुदाय के साथ ही अन्य विभिन्न समुदायों के भी बड़े प्रेरणा स्रोत रहे। विभिन्नपंथों, परंपराओं और क्षेत्रों के लोगों को उनका सानिध्य मिला, विशेष रूप से युवाओं में आध्यात्मिक जागृति के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। शिक्षा का क्षेत्र उनके हृदय के बहुत करीब रहा है। बचपन में सामान्य विद्याधर से लेकर आचार्य विद्यासागर जी बनने तक की उनकी यात्रा ज्ञान प्राप्ति और उस ज्ञान से पूरे समाज को प्रकाशित करने की उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दिखाती है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही एक न्यायपूर्ण और प्रबुद्ध समाज का आधार है। उन्होंने लोगों को सशक्त बनाने और जीवन के लक्ष्यों को पाने के लिए ज्ञान को सर्वोपरि बताया। सच्चे ज्ञान के मार्ग के रूप में स्वाध्याय और आत्म-जागरूकता के महत्त्व पर उनका विशेष जोर था। इसके साथ ही उन्होंने अपने अनुयायियों से निरंतर सीखने और आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर प्रयास करने का भी आग्रह किया था।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज की इच्छा थी कि हमारे युवाओं को ऐसी शिक्षा मिले, जो हमारे सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित हो। वह अक्सर कहा करते थे कि चूंकि हम अपने अतीत के ज्ञान से दूर हो गए हैं, इसलिए वर्तमान में हम अनेक बड़ी चुनौतियों से जूझ रहे हैं।अतीत के ज्ञान में वो आज की अनेक चुनौतियों का समाधान देखते थे। जैसे जल संकट को लेकर वो भारत के प्राचीन ज्ञान से अनेक समाधान सुझाते थे। उनका यह भी विश्वास था कि शिक्षा वही है, जो स्किल डवलपमेंट और इनोवेशन पर अपना ध्यान केंद्रित करे।

आचार्य जीने कैदियों की भलाई के लिए भी विभिन्न जेलों में काफी कार्य किया था। कितने ही कैदियों ने आचार्य जी के सहयोग से हथकरघा का प्रशिक्षण लिया। कैदियों में उनका इतना सम्मान था कि कई कैदी रिहाई के बाद अपने परिवार से भी पहले आचार्य विद्यासागर जी से मिलने जाते थे।

संत शिरोमणि आचार्य जी को भारत देश की भाषायी विविधता पर बहुत गर्व था। इसलिए वह हमेशा युवाओं को स्थानीय भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने स्वयं भी संस्कृत, प्राकृत और हिंदी में कई सारी रचनाएं की हैं। एक संत के रूप में वे शिखर तक पहुंचने के बाद भी जिस प्रकार जमीन से जुड़े रहे, ये उनकी महान रचना 'मूकमाटी' में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इतना ही नहीं, वे अपने कार्यों से वंचितों की आवाज भी बने।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी के योगदान से स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी बड़े परिवर्तन हुए हैं। उन्होंने उन क्षेत्रों में विशेष प्रयास किया, जहां उन्हें ज्यादा कमी दिखाई पड़ी। स्वास्थ्य को लेकर उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिक चेतना के साथ जोड़ने पर बल दिया, ताकि लोग शारीरिक और मानसिक रूप, दोनों से स्वस्थ रह सकें।

मैं विशेष रूप से आने वाली पीढ़ियों से यह आग्रह करूंगा कि वे राष्ट्र निर्माण के प्रति संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रतिबद्धता के बारे में व्यापक अध्ययन करें। वे हमेशा लोगों से किसी भी पक्षपातपूर्ण विचार से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया करते थे।वे मतदान के प्रबल समर्थकों में से एक थे और मानते थे कि यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है। उन्होंने हमेशा स्वस्थ और स्वच्छ राजनीति की पैरवी की। उनका कहना था -'लोकनीति लोभ संग्रह नहीं, बल्कि लोकसंग्रह है।', इसलिए नीतियों का निर्माण निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि लोगों के कल्याण के लिए होना चाहिए।

आचार्य जी का गहरा विश्वास था कि एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिकों के कर्तव्य भाव के साथ ही अपने परिवार, अपने समाज और देश के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की नींव पर होता है। उन्होंने लोगों को सदैव ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। ये गुण एक न्यायपूर्ण, करुणामयी और समृद्ध समाज के लिए आवश्यक हैं। आज जब हम विकसित भारत के निर्माण की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं कर्तव्यों की भावना और ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है।

ऐसे कालखंड में जब दुनिया भर में पर्यावरण पर कई तरह के संकट मंडरा रहे हैं, तब संत शिरोमणि आचार्य जी का मार्गदर्शन हमारे बहुत काम आने वाला है। उन्होंने एक ऐसी जीवन शैली अपनाने का आह्वान किया, जो प्रकृति को होने वाले नुकसान को कम करने में सहायक हो। यहीतो 'मिशनलाइफ' है जिसका आह्वान आज भारत ने वैश्विक मंच पर किया है। इसी तरह उन्होंने हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि को सर्वोच्च महत्त्व दिया। उन्होंने कृषि में आधुनिक टेक्नोलॉजी अपनाने पर भी बल दिया। मुझे विश्वास है कि वो नमो ड्रोन दीदी अभियान की सफलता से बहुत खुश होते। संत शिरोमणि आचार्य श्री108 विद्यासागर जी महाराज जी, देशवासियों के हृदय और मन-मस्तिष्क में सदैव जीवंत रहेंगे। आचार्य जी के संदेश उन्हें सदैव प्रेरित और आलोकित करते रहेंगे। उनकी अविस्मरणीय स्मृति का सम्मान करते हुए हम उनके मूल्यों को मूर्त रूप देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह ना सिर्फ उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि होगी, बल्कि उनके बताए रास्ते पर चलकर राष्ट्रनिर्माण और राष्ट्र कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

एजेंटों द्वारा वीजा लेने वालों का शोषण

"यदि इटली सरकार फोन या ईमेल के बजाय इंटरनेट साइट पर नियुक्तियां करने की प्रक्रिया जारी रखना चाहती है तो उसे आम लोगों को भी नियुक्त करना चाहिए।"

जसविंद सिंह कैनूर
(लेखक, ब्राडकास्टर हैं)

20वीं सदी में जब दुनिया में इंटरनेट युग की शुरुआत हुई तो दुनिया के लोग बहुत खुश थे कि इंटरनेट युग के आने से विकास तेज होगा क्योंकि कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा से काम तेजी से होंगे। यह समझा गया कि इंटरनेट पूरी दुनिया के लिए वरदान साबित होगा। मालूम हो कि हर चीज़ के दो पहलू होते हैं (एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक)। इस तथ्य को सामने रखें तो इंटरनेट सुविधा के भी दो पहलू हैं।

पहली बात तो यह है कि ये सभी सांसारिक लोग अभी तक इंटरनेट के बारे में पूरी तरह से शिक्षित नहीं हैं। इसीलिए उन्हें दूसरे सलाहकारों और एजेंटों पर निर्भर रहना पड़ता है। फिर वो एजेंट काम करवाने के लिए बहुत ज्यादा पैसे वसूलते हैं। दूसरी बात यह है कि संबंधित कंपनी/विभाग के कर्मचारी इंटरनेट की आड़ में एजेंटों के माध्यम से लोगों से मनमाने ढंग से हजारों रुपये वसूल रहे हैं। सरकार द्वारा दी गई इस मुफ्त सुविधा में भी एजेंट सेंध लगाने में सफल हो गए। जब सरकारें ऐसी सुविधाएं चलाती भी हैं तो बाद में उनकी पूरी जांच नहीं की जाती।

इस लेख के माध्यम से, मैं भारत और इटली की सरकारों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि यदि भारतीय किसी भी प्रकार के इतालवी वीजा (पर्यटक वीजा, कार्य वीजा, या पारिवारिक वीजा आदि) के साथ इटली जाना चाहते हैं, तो प्रायोजक कागजात जारी करने के बाद, इतालवी सरकार, इतालवी दूतावास में कागजात जमा करने और वीज़ा शुल्क आदि का भुगतान करने के लिए अपॉइंटमेंट लेना होगा। पहले अपॉइंटमेंट मुंबई सेंटर से फोन पर मिल रहा था। इसके बाद इसे ईमेल पर शिफ्ट कर दिया गया। लेकिन आजकल इसे वेबसाइट से लिया जा रहा है।

वीज़ा पेपर कलेक्शन और शुल्क आदि का काम वीएफएस ग्लोबल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को दिया गया है। इतालवी दूतावास द्वारा लिमिटेड कंपनी। इस वेबसाइट को बार-बार चेक करने पर पता चलता है कि इस समय कोई स्लॉट उपलब्ध नहीं है; कृपया साइट को नियमित रूप से जांचते रहें। अतः हमारे जैसे शिक्षित व्यक्ति भी इस साइट के माध्यम से नियुक्ति नहीं पा सकते हैं और प्रायोजक कागजात की वैधता समाप्त हो जाती है। यदि कोई कागजात की वैधता के दौरान किसी एजेंट/सलाहकार से संपर्क करता है, तो वे मोटी रकम (पच्चीस हजार से अस्सी हजार रुपये) लेते हैं और नियुक्ति प्रदान करते हैं। एलांते मॉल चंडीगढ़ और शिवाजी स्टेडियम नई दिल्ली स्थित वीएफएस सेंटरों के आसपास कई एजेंट घूम रहे हैं, जो लोगों से अपॉइंटमेंट देने के लिए मोटी रकम की मांग करते हैं। ऐसे एजेंटों ने भारत के सभी शहरों में अपनी दुकानें खोल ली हैं। यह विचार करने योग्य है कि एक कंप्यूटर और इंटरनेट-साक्षर व्यक्ति उपरोक्त वेबसाइट पर बार-बार जाने पर पाता है कि कोई स्लॉट (नियुक्ति का समय) उपलब्ध नहीं है, और वह साइट को लगातार जांचता रहता है। लेकिन, एजेंट सफल हो रहे हैं. यहां यह बताना जरूरी है कि इटली के नियमों के तहत यह भी सुविधा है कि अगर किसी के प्रायोजक कागजात की वैधता 15 दिनों में समाप्त होने वाली है, तो दिल्ली में (वीएफएस इटली) केंद्र पर। आप बिना किसी अपॉइंटमेंट के सीधे जाकर अपने कागजात और वीज़ा फीस आदि जमा कर सकते हैं। लेकिन, यह इतना आसान नहीं है क्योंकि अन्य दस्तावेज़ों के साथ वीज़ा आवेदन पत्र भी भरा जाता है, जिसे हर कोई नहीं भर सकता। उस फॉर्म को भरने के लिए एजेंट की मदद भी लेनी पड़ती है. सिर्फ एक पेज का फॉर्म भरने के लिए एजेंट 5000 से 9000 रुपये तक की मांग करते हैं।

अगर कोई पिछले 15 दिनों में अपने पूरे दस्तावेज लेकर दिल्ली स्थित उनके सेंटर पर जाता है तो वे उनसे अन्य दस्तावेज मांगते हैं जिनकी नियमानुसार जरूरत नहीं होती। इस तरह पिछले 15 दिनों में सीधे जमा किए गए कागजात पर वीजा नहीं मिलता है. जवाबी पत्र में लिखा है कि जरूरी दस्तावेज संलग्न नहीं होने के कारण वीजा देने से इनकार कर दिया गया है. फिर किसी एजेंट से सलाह लेनी पड़ती है और फिर वे कहते हैं कि अगर उनके जरिए अप्वाइंटमेंट नहीं मिलेगा तो ही वीजा देने से इनकार किया जाएगा।

अंत में, मैं यह लिखना चाहूंगा कि यदि इटली सरकार फोन या ईमेल के बजाय इंटरनेट साइट पर नियुक्तियां करने की प्रक्रिया जारी रखना चाहती है, तो उसे आम लोगों को भी नियुक्तियां देनी चाहिए ताकि एजेंटों के पैसे का अतिरिक्त बोझ न पड़े। लोगों पर न पड़ें. भारत और इटली की सरकारों को इस मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत है।

आप की बात

राहुल की चुनौती

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा जनता को जोड़ने, उसे न्याय दिलाने और सीधे-सीधे सत्ता पाने के लिए है। लेकिन इस दौरान वरिष्ठ और कनिष्ठ कांग्रेसी नेता और कार्यकर्ता पार्टी छोड़-छोड़ कर जा रहे हैं, बरसों से विश्वासपात्र रहे नेता एकदम नाराज हो कर दल बदल रहे हैं। राहुल गांधी तथा कांग्रेस के वरिष्ठ लोगों को इस स्थिति का विश्लेषण करना चाहिए। यदि पार्टी की नीति या उसके नेताओं के व्यवहार में बदलाव से पार्टी के सदस्य नाराज हैं तो उनकी सुनें और समझाएं। इक्के-दुक्के सदस्य दल बदलते हैं तो समझ में आता है किन्तु समूह के समूह कांग्रेस को या तो छोड़ रहे हैं या फिर दूसरे दल में शामिल हो रहे हैं। कहीं परिवारवाद, निजी स्वार्थ, राममंदिर मुद्दा, तुष्टिकरण की बढ़ती अपेक्षा, मान-सम्मान में कमी, संभावित अज्ञात भय, आदि तो सदस्यों को सबसे प्राचीन पार्टी छोड़ने को मजबूर नहीं कर रहे हैं? राहुल गांधी को अपने विश्वसनीय अनुभवी पार्टीजनों और पार्टी अध्यक्ष के साथ गहन विचार-विमर्श करके रूठों को मनाने का अभियान चलाकर पहले टूटती-बिखरती पार्टी को मजबूत करना चाहिए। राहुल गांधी के समक्ष चुनौती इसलिए और गंभीर हो गई है कि लोकसभा चुनाव सिर पर हैं, क्षेत्रीय दल नाराज हैं और सोनिया गांधी का स्वास्थ्य उनका साथ नहीं दे रहा है।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

चुनाव बांड

सुप्रीम कोर्ट द्वारा इलेक्ट्रॉल बांड को अवैधानिक घोषित किए जाने के बाद 2024 के आम चुनाव के ठीक पहले चंदे के जरिए चुनावी वैतरणी पार करने वाले लगभग सभी राजनीतिक दलों के लिए एक नई मुसीबत खड़ी हो गई है। लेकिन हमारे नेता जल्द ही नए रास्ते खोज लेंगे और उनसे होकर भरपूर पैसा उनके पास पहुंचता रहेगा। इस प्रकरण में सर्वाधिक उल्लेखनीय तत्व निर्वाचन आयोग का विरोध है। उसका मानना था कि चुनाव बांड से केन्द्र तथा राज्यों में सत्तारूढ़ दलों को दूसरों की तुलना में अधिक धन मिलता है और इससे सभी उम्मीदवारों के बीच समान आधार समाप्त होता है। सर्वोच्च न्यायालय के इस कदम के बाद सभी राजनीतिक दलों को चुनावों की फंडिंग के बारे में परस्पर विचार-विमर्श करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से विभिन्न देशों में प्रचलित पद्धतियों का विश्लेषण होना चाहिए। वैसे यह दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि लोकतंत्र पर धनतंत्र का प्रभुत्व सारी दुनिया में सिर चढ़ कर बोल रहा है। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों में तो बिना चुनाव लड़ाने वाले कार्टेलों या पार्टियों के समर्थन के कोई चुनाव लड़ने की सोच भी नहीं सकता है। इसलिए चुनाव बांड का विकल्प तलाशा जाना चाहिए।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

सार्वजनिक परिवहन

दुनिया भर में पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण वाहनों से निकलने वाला विषैला धुआं है। यदि सार्वजनिक परिवहर्न को बढ़ावा दिया जाए। शहरों की आबादी तथा उसकी जरूरतों को देखते हुए सार्वजनिक परिवहन उपलब्ध हो तो निजी वाहनों का उपयोग बहुत हद तक काम हो सकता है। सार्वजनिक उपयोग के दौरान नए-नए अनुभव प्राप्त होते हैं! यदि भारी भीड़ न हो तो हम अपने सहयात्री से बतिया सकते हैं। ट्रेन की यात्रा में तो अक्सर यात्री मित्र ही बन जाते हैं। जब एक कूपे में चर्चा चलती है तो घूम फिर कर वह देश की राजनीति पर आ ही जाती है! और सब अपने.अपने पसंद के दल के पक्ष में तर्क कुतर्क करने लगते हैं। सार्वजनिक परिवहन में यात्री अपनी वस्तुओं को सुरक्षित रखना और परेशानी में भी आनंद उठाने का प्रयास करता है। किसी बुजुर्ग या महिला को अपनी सीट देकर खड़े हो जाने पर जो सुख मिलता है उसके क्या कहने। टैक्सी, आटो, ई-रिक्शा, आदि सार्वजनिक परिवहन बड़ी संख्या में लोगों के रोजगार का साधन भी बनते हैं। नगर-नियोजकों को नगरवासियों तथा अपने काम से शहर आने वालों के लिए समुचित सार्वजनिक वाहनों, यात्रियों की सुरक्षा तथा सुविधा की विस्तृत योजनायें बना कर उनको लागू करना चाहिए।

– **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

महिला-विरोधी अपराध

आज देश में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ और नारी सशक्तिकरण की बात हो रही है। ऐसे में महिलाओं के प्रति अपराधों में वृद्धि चिन्ता का विषय है। आश्चर्य है कि जिस देश में यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता की अवधारणा पुष्ट हुई हो, जहां कोई भी धार्मिक कार्यक्रम बिना नारी के अधूरे रहते हों, जहां नारी को शक्ति स्वरूपा माना जाता हो, जहां वर्ष में 2 बार कन्याओं की पूजा की जाती हो उस धरा पर नारी के प्रति क्रूरता की खबरें पढ़ने पर मर्म आहत होता है। जब दुधमुंही बच्ची से लेकर सत्तर-अस्सी वर्ष की वृद्धा तक नर पिशाचों का शिकार बनती हैं तो सिर लज्जा से झुक जाता है। ऐसे अपराधियों के खिलाफ त्वरित व कठोर कार्रवाई का न होना जहां महिला-विरोधी अपराधों में वृद्धि का कारण है, वहीं कुछ युवतियों की अशोभनीय जीवनशैली और उन्मुक्तता की छटपटाहट भी कम जिम्मेदार नहीं है। महान भारतीय संस्कृति को हेय और पाश्चात्य अपसंस्कृति को श्रेष्ठ मानना भी नकारात्मक पक्ष है। भौतिकता और आध्यात्किमता तथा शालीनता और उन्मुक्तता के बीच संतुलन बनाना तथा महिलाओं का सम्मान सिखाना जरूरी है।

– **प्राची टोंक,** मेरठ

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

योगी की मौजूदगी में हुआ अशोक लीलेंड की इलेक्ट्रिक वाहन फैक्ट्री का भूमि पूजन

●प्रोडक्शन शुरू करें,यूपी के साथ पूरे उत्तर भारत के बाजार को है आपका इंतजार: मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को लखनऊ में अशोक लीलेंड की इलेक्ट्रिक वाहन फैक्ट्री के भूमिपूजन कार्यक्रम में हिस्सा लिया। यहां उन्होंने कहा कि हिंदुजा ग्रुप के प्रकाश और अशोक ने अभी मुझे डबल डेकर इलेक्ट्रिक बस की चाभी सौंपी है। चाहूंगा कि सिर्फ चाभी नहीं बल्कि जल्दी से जल्दी वो यहां अपना प्रोडक्शन शुरू करें। उत्तर प्रदेश का बाजार ही नहीं, बल्कि पूरे उत्तर भारत का बाजार उनका इंतजार कर रहा है। इससे पूर्व सीएम योगी को हिंदुजा ग्रुप की तरफ से डबल डेकर इलेक्ट्रिक बस की चाभी और मोमेंटो प्रदान किया गया। इस दौरान सीएम योगी ने प्लांट में इलेक्ट्रिक बसों का अवलोकन भी किया और उनके फीचर्स के बारे में भी जानकारी ली। हिंदुजा ग्रुप के अधिकारियों ने उन्हें ई व्हीकल्स की विशेषताओं से परिचित कराया। सीएम योगी ने हिंदुजा ग्रुप के प्रमुख लोगों और अधिकारियों के साथ मंत्रणा भी की।

सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश का पहला इलेक्ट्रिक व्हीकल प्लांट अशोका लीलेंड के माध्यम से स्थापित होने जा रहा है। इस कार्यक्रम के शुभारंभ के लिए हिंदुजा ग्रुप अशोका लीलेंड को शुभकामनाएं देता हूं। उत्तर प्रदेश में हम जैसे इन्वेस्टर फ्रेंडली पॉलिसी लेकर आते हैं। वैसे ही इन्वेस्टर्स को भी अपने निवेश को पब्लिक फ्रेंडली बनाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि एक लाख स्कूली बस हैं हमारे पास, ये सब रिप्लेस हो जाएंगी इलेक्ट्रिक बसों में बशर्ते इस दिशा में हम लोगों ने थोड़ा भी इनीशिएटिव लिया तो उत्तर प्रदेश में एक लाख 5 हजार से अधिक राजस्व गांव हैं और दो लाख से अधिक मजरे हैं। अगर इन एक लाख गांवों को हमें शहरों से जोड़ना होगा तो भी सस्ती सेवा के लिए इलेक्ट्रिक बस सेवा सस्ती और लोकप्रिय माध्यम बन सकती है। इसमें हम अपने तमाम युवाओं को इस सर्विस के साथ जोड़ सकते हैं। यहां पर भी हिंदुजा ग्रुप भी कुछ इनीशिएटिव ले और स्टेट गवर्नमेंट भी इसको आगे बढ़ाए।

सीएम योगी ने कहा कि एक.एक गांव को जोड़ने के लक्ष्य के साथ हमें आगे बढ़ना होगा। उत्तर प्रदेश के अंदर गांव को शहर से जोड़ने के लिए प्रयास करना होगा। गांव का प्रोडक्ट शहर में आए, इसके लिए माल ढोने वाले छोटे ट्रक का उपयोग किया जा सकता है। फि र चीनी प्लांट के रूप में हम लोग दूध को दुग्ध समितियों के साथ जोड़कर सिटी में लाने में योगदान दे सकेंगे तो यह बहुत बड़ा मार्केट आपको अकेले यूपी में मिलेगा। यूपी का मतलब यूपी नहीं है,यूपी का मतलब बिहार भी, मध्यप्रदेश भी और नेपाल भी, यूपी के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ है। ये सभी राज्य इस सुविधा का लाभ लेंगे।

यूपी के पास प्रकृति, परमात्मा और प्रतिभा से भरपूर युवा भी: योगी

●दिलाया विश्वास, अब शासन व विभागों के मकड़जाल में नहीं उलझती हैं फाइलें

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि छह-सात वर्षों में उत्तर प्रदेश ने अपनी छवि को बदला है। आज ये नए भारत का नया उत्तर प्रदेश है। विकसित भारत का विकसित उत्तर प्रदेश है। सात वर्ष पहले उत्तर प्रदेश बीमारू राज्य हुआ करता था। उत्तर प्रदेश देश के विकास का बैरियर माना जाता था लेकिन आज उत्तर प्रदेश ने खुद को बीमारू राज्य की श्रेणी से उबारकर देश के अनलिमिटेड पोटेंशियल स्टेट के रूप में स्थापित किया है। हमारे पास प्रकृति भी है, परमात्मा भी है और प्रतिभा से भरपूर युवा भी हैं। इस त्रिवेणी के माध्यम से पीएम के मार्गदर्शन व नेतृत्व में हम यूपी को आगे बढ़ा रहे हैं। सात वर्षों में यूपी की अर्थव्यस्था व प्रति व्यक्ति आय को दोगुना करने में सफलता प्राप्त हुई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में उत्तर प्रदेश-निवेश प्रदेश के तहत मेन हैंगर में आयोजित एफडीआई कॉन्क्लेव 'यूपी-इमर्जिंग डेस्टिनेशन फॉर फॉरेन इनवेस्टमेंट इन इंडिया' को संबोधित कर रहे थे। सीएम व केंद्रीय मंत्री समेत अन्य अतिथियों ने बुकलेट का विमोचन किया। लघु फिल्म के माध्यम से बदलते उत्तर प्रदेश की कहानी को भी लोगों ने देखा। सीएम ने विश्वास दिलाया कि पीएम द्वारा दिए गए लक्ष्यों को प्रदेश सरकार समयबद्ध तरीके से प्राप्त करेगी और पीएम के संकल्पों के अनुरूप यूपी भारत के ग्रोथ इंजन के रूप में स्थापित करने की प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ेगा।

सीएम ने कहा कि यूपी को बीमारू राज्य से उबारने में हमें सफलता प्राप्त हुई तो इसके पीछे पीएम का विजन था, जिसे हमने मिशन के रूप में लेकर प्रभावी ढंग से अलग-अलग सेक्टर की पॉलिसीज बनाई और कानून व्यवस्था की बेहतरीन स्थिति देकर माहौल बदला। उसका परिणाम है कि सुरक्षा के साथ बेहतर कानून व्यवस्था, 25 सेक्टोरेल पॉलिसीज के अलावा जीबीसी के चतुर्थ संस्करण के साथ उत्तर प्रदेश अब देश की छठवीं नहीं बल्कि दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।

राजधानी लखनऊ को एआई सिटी का बनाएंगे प्रमुख केंद्र

●डेस्टिनेशन यूपी-इमर्जिंग हब फॉर एआई इन इंडिया कॉन्क्लेव में शामिल हुए सीएम योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि उत्तर प्रदेश आज डाटा सेंटर का हब बनने जा रहा है। यहां पर तीन डाटा सेंटर स्थापित हो चुके हैं जबकि आठ नए डाटा सेंटर बन रहे हैं। पहले जहां प्रदेश में इस प्रकार की संभावनाएं नहीं थीं, वहीं आज यूपी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। आप सभी ने इसे बखूबी देखा भी होगा। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित डेस्टिनेशन यूपी-इमर्जिंग हब फॉर एआई इन इंडिया कॉन्क्लेव में कही।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के इंस्टीट्यूशन ने स्केल को स्किल में बदलने में अच्छा काम किया है लेकिन इस स्किल को स्पीड भी चाहिए। इसके लिए हमें डिजिटाइजेशन को अपनाना ही होगा। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बहुत बड़ी मदद कर सकता है। इसका यूज हम केवल एक फील्ड में ही नहीं बल्कि अलग-अलग फील्ड जैसे एग्रीकल्चर, मेडिकल और एजुकेशन में कर सकते हैं। यह उपयोग करने वाले पर निर्भर करता है कि वह किस रूप में इसका उपयोग करता है। राजधानी लखनऊ को एआई सिटी का प्रमुख केंद्र बनाने पर सरकार काम कर रही है। इसमें आईआईएम लखनऊ के युवा भागीदार बन रहे हैं। वहीं गौतमबुद्धनगर विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा में एआई का केंद्र बनाने की दिशा में काम प्रारंभ कर दिया गया है। इसके जरिए प्रदेश के लाखों नौजवानों को उनके घर और जनपद में नौकरी दे सकते हैं। इससे पहले सीएम योगी ने कॉन्क्लेव में आईलेट्स की मदद से डेस्टिनेशन यूपी अपॉर्च्युनिटीज एआई बुक की लॉन्चिंग की। इस दौरान सीएम योगी की मौजूदगी में तीन एमओयू का आदान प्रदान किया गया। इसमें माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन के अभिषेक बोसए एचसीएल साफ्टवेयर के ध्रुव कोहली ने एआई सेंटर स्थापित करने और वाधवानी एआई के शेखर ने सरकार से एमओयू का आदान प्रदान किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि युवा साथियों ने कल नए भारत के नए उत्तर प्रदेश की तस्वीर देखी है। आज जब भारत हर क्षेत्र में बुलंदियों की नई ऊंचाइयों को छू रहा है तो उन स्थितियों में उत्तर प्रदेश खुद को पीछे नहीं रख सकता है। ऐसे में 25 करोड़ आबादी की आशा और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हमें भी सर्वांगीण विकास के दौर में आगे बढ़ना पड़ेगा।

देश में दलित, पिछड़े, आदिवासी को दबाया जा रहा: राहुल गांधी

●घंटाघर चौराहे पर आयोजित जनसभा में पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, यूपी में लोग बेरोजगारी, महंगाई और पेपर लीक से त्रस्त

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

चौक के घंटाघर चौराहे पर जनसभा में पहुंचकर पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने हाथ हिलाकर सभी को अभिवादन किया। राहुल गांधी ने जनसभा को संबोधित करते हुए भागीदारी न्याय, जातिगत जनगणना, पेपर लीक और बेरोजगारी जैसे जनता से जुड़े मुद्दों को जोर-शोर से उठाया। भाजपा की नीतियों ने युवाओं के रोजगार छीन लिए, उत्तर प्रदेश के कोने कोने जाओ और पूछो तुम्हारा पेपर लीक हुआ जवाब आता है हां, उत्तर प्रदेश के युवा सालों तैयारी करते हैं मां बाप पैसा खर्चे करते हैं लेकिन पेपर लीक हो जाता हैए इससे पहले रायबरेली में राहुल गांधी ने हाथों में पोस्टर लिए हुए शिक्षक भर्ती से जुड़े अभ्यर्थी अमित मौर्य को बुलाकर बातचीत का जिक्रभी जनसभा में किया ।

मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि देश में दलित, पिछड़े, आदिवासी 24 घंटे दबाए जाते हैं, उन्हें धमकाया जाता है और उनके रास्ते बंद किए जाते हैं। हिंदुस्तान की 200 बड़ी कंपनियों के मालिकों और मैनेजमेंट में एक भी ओबीसी, दलित, आदिवासी वर्ग के लोग नहीं हैं। देश के 50 प्रतिशत पिछड़े, 20 प्रतिशत दलितए अल्पसंख्यकए आदिवासियों के लिए मोदी के हिंदुस्तान में कोई जगह नहीं। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने सरकारी नौकरी की भर्तियों में पेपर लीक का मुद्दा उठाते हुए कहा कि पढ़ाई में लाखों रुपए खर्च करने के बाद जब बच्चे परीक्षा देते हैं तो पेपर लीक हो जाता है। युवा पैसा खर्च कर पढ़ाई करते हैं, लेकिन जब परीक्षा का समय आता है तो एक प्रतिशत लोग पहले ही पेपर चोरी कर लेते हैं। उत्तर प्रदेश में हर जगह बेरोजगारीए महंगाई और पेपर लीक के पोस्टर मिलते हैं। हमारी सरकार आयेगी तो पेपरलीक वालों पर ऐसी कार्यवाही होगी कि याद करेंगें । राहुल ने कहा कि जातिगत जनगणना क्रांतिकारी कदम है। हमने अपने मेनिफेस्टो में जातिगत जनगणना को डाला है, हमारी सरकार आते ही जातीय जनगणना को लागू करेंगें, इससे पता लगेगा कि किसकी कितनी आबादी है और किसके हाथों में कितना धन है। जाति जनगणना नहीं होने तक ओबीसी, दलित और आदिवासियों को पोस्टर लेकर सड़कों पर भटकना पड़ेगा। देश के ओबीसी-दलितों और आदिवासियों को अपना हक़ लेना है। हक लेने का पहला कदम जाति जनगणना है। कांग्रेस पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में जाति जनगणना को पहले नंबर पर रखा है।

राजधानी पहुंची भारत जोड़ो न्याय यात्रा, जगह-जगह हुआ स्वागत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

'**भारत** जोड़ो न्याय यात्रा' मंगलवार को लखनऊ पहुंची। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को समर्थन देते हुए भारी संख्या में लोगों ने न्याय यात्रा का स्वागत किया। अपने बीच राहुल गांधी को पाकर स्थानीय लोगों का जोश सातवें आसमान पर था। जगह-जगह राहुल गांधी का फूलों की बारिश से भव्य स्वागत किया गया। लखनऊ में केकेसी चौराहे पर आम जनमानस, महिलाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, संगठनों, कांग्रेस नेताओं, कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी को पुष्पगुच्छ/फोटो चित्र देकर स्वागत किया। इसके बाद चारबाग में कार्यकर्ताओं और आम जनमानस ने स्वागत किया। चारबाग के बाद यात्रा नाका चौराहा पहुंची जहां सिख समाज और सामाजिक संगठनों ने राहुल गांधी का स्वागत किया। नाका के बाद रकाबगंज में स्वागत हुआ। मेडिकल कालेज चौराहे पर अधिवक्ताओं ने स्वागत किया और सेंट्रल बार उपाध्यक्ष प्रदीप सिंह ने स्वागत किया, मेडिकल कालेज चौराहा से चौक यात्रा पहुंची जहां स्थानीय निवासियों ने पुष्पों की वर्षा कर स्वागत किया और राहुल गांधी को उनके द्वारा देश की एकता अखंडता को मजबूत करने के लिए समर्पित भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकालने के लिए शुभकामना संदेश सौंपा।

12 शहीद सैनिकों के आश्रितों को सरकारी नौकरी के नियुक्ति आदेश जारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के 12 शहीद सैनिकों के आश्रितों को विभिन्न सरकारी विभागों में नौकरी देने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशों के क्रम में नियुक्ति आदेश जारी किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा है कि राज्य सरकार शहीद जवानों के परिवार के साथ पूरी संवेदनशीलता के साथ खड़ी है। प्रदेश सरकार द्वारा सैनिकों के कल्याण एवं सम्मान में अनेक कदम उठाये गए हैं। सरकारी प्रवक्ता ने मंगलवार को बताया कि उत्तर प्रदेश के इन वीर सैनिकों ने आतंकवादी घटनाओं में कर्तव्यपालन करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। उन्होंने बताया कि जनपद कानपुर देहात के शहीद सिपाही रोहित कुमार यादव की पत्नी वैष्णवी यादव, जनपद प्रयागराज के शहीद जवान नन्दलाल यादव की पत्नी पूजा यादव, जनपद उन्नाव के शहीद जवान श्याम सिंह यादव की पत्नी विनीता यादव, जनपद देवरिया के शहीद जवान संतोष यादव की पत्नी धर्मशीला देवी, जनपद कौशाम्बी के शहीद जवान नरेश कुमार मिश्रा की पत्नी प्रियंका मिश्रा तथा जनपद कौशाम्बी के शहीद जवान अजीत कुमार शुक्ला की पत्नी प्राची शुक्ला को शासकीय सेवा में योजित करने के लिए नियुक्ति आदेश निर्गत किए गए हैं।

हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा को लेकर यूपी बोर्ड तैयार, सोशल मीडिया पर भी नजर

● बोर्ड परीक्षा कल से उत्तरपुस्तिकाओं और कक्ष निरीक्षकों के प्रवेश पत्र पर क्यूआर कोड

● प्रयागराज, मथुरा आगरा, अलीगढ़, बलिया समेत 16 जिले अतिसंवदेनशील

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नकलविहीन एवं शुचितापूर्ण परीक्षा कराने के लिए एक बार फिर सीएम योगी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश ने वर्ष 2024 की हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट परीक्षा कराने के लिए कमर कस ली है। एशिया में सबसे बड़ा परीक्षा संचालित करने वाले बोर्ड ने इस बार सोशल मीडिया खासकर वाट्सएप, एक्स, फेसबुक, टेलीग्राम के साथ.साथ ऑनलाइन वेब पोर्टल,साइट पर 24 घंटे निगरानी रखने के लिए बोर्ड द्वारा क्विक रिस्पॉन्स टीम (क्यूआरटी) की व्यवस्था की गयी है। साथ ही उत्तरपुस्तिकाओं पर पहली बार क्यूर कोड क्रमांक अंकित किया गया है।

बोर्ड परीक्षा के मद्देनजर कक्ष निरीक्षकों के प्रवेश पत्र को भी क्यूआर कोड के दायरे में लाया गया है। बता दें कि कि 22 फरवरी से शुरू हो रही परीक्षा में कुल 55,25,308 परीक्षार्थी सम्मिलित होने जा रहे हैं। इसमें हाईस्कूल में 29,47,311 एवं इंटरमीडिएट में 25,77997 परीक्षार्थी शामिल हैं। परीक्षा को लेकर इस बार बोर्ड ने व्यवस्था को और भी बेहतर बनाया है। सोशल मीडिया को भी नकल अधिनियम के दायरे में लाया गया है। इसके तहत मोबाइल या अन्य उपकरण पर प्रश्न पत्र आऊट कराने की कोशिश को दंडनीय एवं गैर जमानती अपराध माना जाएगा। परीक्षा के लिहाजा से प्रयागराज, अलीगढ़, मथुरा, कौशाम्बी, आगरा, बलिया, मैनपुरी, बागपत, मऊ, हरदोई, आजमगढ़, चंदौली, देवरिया, गाजीपुर, गोंडा, एटा जिलों को अतिसंवदेनशील जिला माना गया है।

पूरे प्रदेश में कुल 8266 परीक्षा केंद्र

बोर्ड के सचिव दिव्यकांत शुक्ला ने बताया कि हाईस्कूल एवं इंटर की परीक्षा 22 फरवरी से 9 मार्च तक संचालित होगी। कुल 16 दिवसों में होने वाली परीक्षा में कुल 55 लाख से अधिक बालक बालिकाएं सम्मिलित होंगे। इसमें हाईस्कूल में 15,71,184 बालक एवं 13,76,127 बालिकाएं हैं। इंटर में 14,28,323 बालक एवं 11,49,674 बालिकाएं हैं। पूरे प्रदेश में कुल 8266 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं।

24 घंटे रहेगी ऑनलाइन निगरानी

यूपी बोर्ड मुख्यालय समेत सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में एक.एक कमांड कंट्रोल रूम बनाया गया है। जहां से सभी परीक्षा केंद्रों एवं वहां के स्ट्रांग रूमों की ऑन लाइन निगरानी 24 घंटे रहेगी। बोर्ड मुख्यालय ने पहली बार पांचों क्षेत्रीय कार्यालय प्रयागराज, वाराणसी, गोरखपुर, बरेली एवं मेरठ में कमांड एंड कंट्रोल रूम की स्थापना की है। यहां से परीक्षा केंद्रों पर नकल की घटनाओं एवं अन्य किसी प्रकार की आवंछनीय गतिविधियों के परिलक्षित होने पर तत्काल कार्रवाई की जागी। सचल दस्तों को तत्काल सूचित किया जाएगा। वह तुरंत मौके पर पहुंच कर कार्यवाही करेंगे।

उत्तर पुस्तिकाओं की अदला बदली रोकने के लिए क्यूआर कोड

यूपी बोर्ड ने उत्तर पुस्तिकाओं की अदलाबदली रोकने के लिए एक नया कदम उठाया है। कवर पृष्ठ के साथ.साथ आन्तरिक पृष्ठ पर भी लोगो लगाया गया है। कॉपियों के प्रत्येक पृष्ठ पर पृष्ठ संख्या अंकित है। साथ ही उत्तर पुस्तिकाओं के पृष्ठों को स्टेपल पिन के स्थान पर सिलाई कराकर अलग अलग रंगों से मुद्रित किया गया है।

सीएम धामी सहित उत्तराखंड कैबिनेट के सभी मंत्रियों ने किए रामलला के दर्शन

● प्रभु सभी पर कृपा करें, देश का विकास हो: पुष्कर सिंह धामी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

रामलला के दरबार में अपनी हाजिरी लगाने अयोध्या पहुंचे उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि यह सुखद पल हम लोगों को भगवान राम की कृपा से मिले हैं। रामलला को देख कर मेरे मन में भावुकता होती थी, किन्तु आज प्रभु श्री राम को देखकर प्रसन्नता हो रही है। हम गौरव की अनुभूति कर रहे हैं। हम मंत्रीमंडल सहयोगियों के साथ रामलला के दर्शन के लिए आए हैं। यह हम लोगों के लिए बहुत सौभाग्य की बात है।

धामी ने कहा कि रामलला अपने जन्म स्थान पर फिर से 500 वर्षों के बाद विराजमान हुए हैं। राम युग की फिर से शुरुआत हुई है। यह हम लोग के लिए बहुत शगुन की बात है कि आज हम भगवान राम लला के दर्शन करने आए हैं। भगवान राम सब पर कृपा करें और देश में सुख शांति रहे। हमारे प्रदेश व देश की हर प्रकार से उन्नति हो।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से हमने अनुरोध किया है कि जमीन हमें यहाँ अगर जल्दी जमीन दे देंगे तो हमारा एक सदन यहां पर बन जाएगा। आने जाने वाले लोगों का एक परस्पर संबंध बना रहेगा। उत्तराखंड देवभूमि है, हमारे यहां से मां सरयू निकलकर यहां पहुंचती हैं। रघुवर मंदिर देव प्रयाग में है, जहां श्रीराम ने पितृ यज्ञ किया था। हमारा श्रीराम से बहुत गहरा संबंध है। उत्तराखंड के लोग हमेशा यहां आएंगे।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मंगलवार को कैबिनेट मंत्रियों के साथ अयोध्या पहुंचे। उन्होंने रामलाल का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी लोग रामलला का दर्शन कर काफी खुश व उत्साहित दिखे। जय श्रीराम के नारों से मंदिर गूंज उठा। मंदिर ट्रस्ट की ओर से सभी लोगों को प्रसाद दिया गया।

अयोध्या एयरपोर्ट पर कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति से मुख्यमंत्री धामी का स्वागत किया। उन पर फूल बरसाए गए व तिलक किया गया। पुष्कर सिंह धामी प्रात: देहरादून एयरपोर्ट से स्टेट प्लेन से अयोध्या के लिए रवाना हुए थे। उनके साथ उत्तराखंड के कैबिनेट मंत्री रेखा आर्य, सुबोध उनियाल, धन सिंह रावत, सतपाल महाराज, प्रेम चन्द्र अग्रवाल व राज्य सभा सांसद नरेश बंसल सहित अन्य मंत्री भी आए थे। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर उत्तराखंड प्रदेश से आए अतिथियों की सुरक्षा व्यवस्था के चाक-चौबंद इंतजाम किए गए थे।

नौजवानों को छलने में भाजपा सरकार को कोई लाज नहीं: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि रोजगार देने के झूठे वादे करने में भाजपा ने हिटलर के बदनाम मंत्री गोएबल्स का भी रिकार्ड तोड़ दिया है। केन्द्र की सत्ता में आते ही 2 करोड़ नौकरियां देने का वादा बड़े जोरशोर से किया गया था। आज तक यह वादा पूरा करना तो दूरए अब उसकी चर्चा भी भाजपा नेतृत्व नहीं करता है। रोजगार के नाम पर कभी पकौड़ा तलने का सुझाव आता है तो प्रदेश के मुख्यमंत्री 45 में 56 का आंकड़ा पेश कर देते हैं। अखिलेश ने कहा कि नौजवानों को परीक्षा में बिठाने के साथ पेपरलीक होने से परीक्षार्थियों को नौकरी मिलने की संभावना पर पानी फिर जाता है। 69000 शिक्षक भर्ती का मसला अभी तक अनिर्णीत है। लखनऊ के इको गार्डेन में नौजवान धूप ठंड में परेशानियां झेल रहे हैं। कोई उनकी सुनने वाला नहीं है। जब वे अपनी आवाज सुनाने के लिए निकलते हैं तो पुलिस की लाठियां पड़ने लगती है।

अखिलेश ने कहा कि ताजा मामला यूपी पुलिस भर्ती परीक्षा 2024 का है जिसके सभी सत्रों का पेपर लीक होने की खबर सोशल मीडिया पर स्क्रीनशॉट के साथ चल रही है। जिससे लाखों बेरोजगार युवाओं में भारी आक्रोश है। पिछली अन्य परीक्षाओं की तरह इस बार भी नौजवानों को छलने में भाजपा सरकार को कोई लाज नहीं है। अखिलेश ने कहा कि लगता है कि भाजपाईयों ने परीक्षाओं को पैसा कमाने का कारोबार बना दिया है। तभी तो ऐसे राजनीतिक संरक्षण प्राप्त लोगों के खिलाफ कोई निर्णायक कार्रवाई नहीं होती है और हर परीक्षा में यही खेल चलता रहता है। अखिलेश ने कहा कि नौजवान तमाम दिक्कतों का सामना करते हुए किसी तरह परीक्षा की तैयारी करते हैं लेकिन भाजपा सरकार में हमेशा उनके साथ क्रूर मजाक होता है। भाजपा सरकार ने देश के लाखों, करोड़ों नौजवानों का विश्वास खो दिया है, उनके सब्र का बांध टूट गया है। अब लोकसभा चुनाव 2024 में युवा भाजपा को केन्द्र की सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाने को संकल्पित है। जब भाजपा सरकार बदलेगी तभी युवाओं को रोजगार मिलेगा।

सपा प्रदेश अध्यक्ष ने राजा भैया से की मुलाकात

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने मंगलवार को कुंडा से विधायक राजा भैया से मुलाकात की। दो दलों के नेताओं की इस मुलाकात को राजनीतिक जानकार राज्यसभा व लोकसभा चुनाव से जोड़ कर देख रहे हैं हलांकि अभी दोनों तरफ से कोई अधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। सामाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तर पटेल ने रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया से मुलाकात की है। राजा भैया और नरेश उत्तर पटेल की एक तस्वीर सामने आई है जिसमें दोनों लोग एक ही टेबल पर खाना खाते दिख रहे हैं। इस तस्वीर को सपा प्रवक्ता आईपी सिंह ने अपने सोशल मीडिया एक्स पर शेयर किया है। आईपी सिंह ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, समाजवादी पार्टी ने बहुत अच्छी पहल की है। आज राजा भैया से पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल मिले और उनके साथ भोजन किये। राज्यसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को वोट करने के अपील की। राजा भैया की पार्टी जनसत्ता दल लोकतांत्रिक पास 2 विधायक हैं। रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया कुंडा से विधायक हैं। विनोद सरोज बाबागंज (प्रतापगढ) से विधायक हैं। समाजवादी पार्टी ने दोनों विधायकों से राज्यसभा चुनाव में समर्थन मांगा। राजा भइया पूर्व में दो बार सपा सरकार में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं।

460 स्थानों में युवा मोर्चा लगायेगा युवा चौपालः अमित बाथम

फतेहपुर। भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा आगामी कार्यक्रम युवा चौपाल को लेकर जिला कार्यशाला का आयोजन पार्टी कार्यालय में किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में कानपुर बुन्देलखण्ड क्षेत्र के क्षेत्रीय महामंत्री अमित बाथम रहे तथा कार्यशाला की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष युवा मोर्चा मधुराज विश्वकर्मा ने की। बैठक का संचालन जिला महामंत्री ऐश्वर्य सिंह चंदेल ने किय। बैठक में युवा चौपाल हेतु आगामी 21 व 22 फरवरी को मण्डल कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा। चौपाल के बावत पत्रकार वार्ता 23 फरवरी को होगी तथा उद्घाटन 24 फरवरी से किया जायेगा। 25 फरवरी से 05 मार्च तक कार्यक्रम ग्राम पंचायत स्तर पर किया जायेगा। युवा चौपाल में कुल 460 स्थानों में 46 हजार युवाओं तक सीधे संवाद किया जायेगा। बताया कि

प्रत्येक मण्डल में बीस स्थानों पर युवा चौपाल का आयोजन किया जायेगा, जिसमें सौ की संख्या में युवा मौजूद रहें। मुख्य अतिथि की माने तो प्रत्येक विधानसभा में 05 चौपाल सांसद तथा प्रत्येक मण्डल 05 चौपाल विधायक तथा 10 स्थानों पर ब्लाक प्रमुख उपस्थिति रहेगें। साथ ही जिला पदाधिकारी तथा सभी मोर्चों के अध्यक्ष मुख्य अतिथि ने रूप में रहेगें। कार्यशाला में बताया गया कि आगामी लोकसभा चुनाव के बावत युवा मोर्चा युद्ध स्तर पर युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करेगा। जिलाध्यक्ष मधुराज विश्वकर्मा ने कहा कि प्रत्येक कार्यक्रमों की तरह युवा चौपाल कार्यक्रम भी सफल होगा तथा सभी युवा मोर्चा के पदाधिकारी अधिक से अधिक संख्या में प्रतिनिधित्व कर भागीदारी सुनिश्चित करेगें।

फातिमा फिर बनी कविता, अब्दुल्ला बने शिवप्रसाद ने अपनाया हिंदू धर्म

फतेहपुर। ढाई दशक पूर्व हिंदू धर्म से मुस्लिम मजहब कुबूल करने वाला परिवार फिर से सनातन हो गया। यह सब तब हुआ जब मजहबी तौर पर इस परिवार को प्रताड़ना का दंश झेलना पड़ा। धर्म परिवर्तन का हिस्सा बने इस परिवार को सहयोग देने के लिए रामदल संगठन आगे आया। जिसके बाद इस परिवार की छत पर न सिर्फ भगवा लहराने लगा बल्कि आंगन में सुंदरकांड की गूंज भी सुनाई दी। हवन की महक फिज़ा में फैल गई। हथगाम कस्बे के जाड़े का पुरवा गांव में रहने वाले शिव प्रसाद एवं उनकी धर्म पत्नी कविता, दुलाहीपुर वाराणसी के मूल निवासी थे। 25 वर्ष पहले कतिपय कारणों से इन दोनों ने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर स्वयं का नाम अब्दुल्ला तथा पत्नी का फातिमा रख लिया था परंतु वो अंतर्रात्मा से सनातनी रहे। कुछ वर्षों पूर्व उन्होंने पुनः धर्म के रीति रिवाजों के साथ अपने जीवन की शुरुआत करने की ठानी तो दूसरे संप्रदाय की ओर से उन पर दबाव बनाने की कोशिश की गई। यह परिवार मानसिक और शारीरिक रूप से अत्यंत शोषित किया गया ताकि वो सनातन धर्म में वापसी न कर सकें। आखिरकार इस परिवार ने रामदल संगठन अध्यक्ष आगेंद्र साहू से संपर्क किया। नतीजा, पीड़ित परिवार के निवास स्थान पर सुंदर कांड, श्री राम कीर्तन पाठ के बीच इस परिवार दोबारा सनातन धर्म कुबूल कर लिया। फिर से हिंदू धर्म कबूल करने वाले शिवप्रसाद और उनकी पत्नी कविता ने बताया कि उन्हें अपने धर्म में फिर से लौटने में जो खुशी हो रही है वह उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। यह सब बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अच्छी बात रही कि उन्हें सहयोग देने के लिए राम दल संगठन आगे आया। राम दल संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अगेंद्र साहू के वह शुक्रगुजार हैं। अब वह फिर से हिंदू हो चुके हैं, जिसका उन्हें नाज है।

अधिकारी प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण ससमय करें निस्तारणः जिलाधिकारी

● जिलास्तरीय संपूर्ण समाधान दिवस में डीएम ने मैथा तहसील में लोगों की सुनी समस्याएं, शिकायतों के निस्तारण के दिए निर्देश

कानपुर देहात। जिलास्तरीय संपूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी आलोक सिंह द्वारा ततहसील मैथा में लोगों की समस्याओं को सुनकर गुणवत्तापूर्ण, संतुष्टिपरक, त्वरित निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। जिलास्तरीय सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 107 शिकायतें प्राप्त हुई, यह शिकायतें मुख्यतः रराजस्व, पुलिस, विकास, विद्युत तथा अन्य से संबंधित रहीं। डीएम ने कहा कि समस्याओं/शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण पर सभी अधिकारी विशेष ध्यान दें, शिकायतों के निस्तारण में किसी प्रकार की लापरवाही पाए जाने पर कठोर कार्रवाही की जाएगी। भूमि विवाद से संबंधित मामलों में प्रशासन एवं पुलिस की संयुक्त टीम बनाकर, मौके पर जाकर निस्तारण सुनिश्चित कराया जाये, छोटे.छोटे मामलों को भी गंभीरता पूर्वक लेकर आवश्यक कार्रवाही की जाय। तहसील समाधान दिवस के अवसर पर विभिन्न अन्य विभागों की शिकायतें जिलाधिकारी के समक्ष लोगों द्वारा रखी गई, जिस पर डीएम ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित कराकर, निस्तारण आख्या से जिला प्रशासन को अवगत कराने के निर्देश दिये। तहसील दिवस में पुलिस अधीक्षक बीबी जीटीएस मूर्ति द्वारा भी पुलिस से संबंधित शिकायतों को सुना गया। डीएम द्वारा तहसील परिसर में लगाए गए विभिन्न विभागों के स्टालों का अवलोकन किया गया।

डा. अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर दिव्यांगजन में दिव्यांगों के प्रवेश प्रक्रिया शुरू

लखीमपुर खीरी। दिव्यांगजन को स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के लिए उप्र शासन के प्राविधिक शिक्षा विभाग के तहत कानपुर में एक स्वायत्तशासी संस्थान डा. अम्बेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर दिव्यांगजन, कानपुर में संचालित है। दिव्यांगों के प्रवेश के लिए प्रक्रिया शुरू हो गई है। प्रवेश लेने के लिए इच्छुक अभ्यार्थियों से आवेदन मांगे गए है। डीएम ने डीआईओएस एवं जिला दिव्यांग जनशक्तिकरण अधिकारी को जिले में हाईस्कूल एवं इण्टर में पढ़ने वाले दिव्यांग छात्र.छात्राओं को डा अम्बेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर दिव्यांगजन, उप्र संस्थान में प्रवेश लेने के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराने, जरूरी दिशा निर्देश दिए।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त एवं प्राविधिक शिक्षा परिषदए उप्र से सम्बद्धता प्राप्त डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंजीनियरिंग और आर्कीटेक्चरल असिस्टेण्टशिप पाठ्यक्रम के लिए हाईस्कूल उत्तीर्ण अर्हता है, जिसकी पाठ्यक्रम अवधि तीन.तीन वर्ष है। वही मार्डन आफिस मैनेजमेण्ट एण्ड सेक्रेटेरियल प्रेक्टिस (पाठ्यक्रम अवधि 2 वर्ष) के लिए इंटरमीडिएट उत्तीर्ण अहर्ता है। प्रवेश क्षमता 50.50 निश्चित है। डीएम ने बताया कि प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन पर करने की अन्तिम तिथि 29 फरवरी एवं प्रवेश परीक्षा की तिथि 16 मार्च से 22 मार्च है। संस्थान की वेबसाइट एवं दूरभाष संख्या 0512.2583221 पर सम्पर्क कर संस्थान द्वारा उपलब्ध करायी जा रही सुविधाओं का लाभ के बारे में और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। दिव्यांग छात्र.छात्राओं को पूरी तरह निःशुल्क शिक्षा के साथ निःशुल्क छात्रावास सुविधा तथा छात्रवृत्ति एवं रू0 1000 प्रतिमाह की भोजनवृत्ति के अतिरिक्त ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन वर्दी (युनिफार्म) भी निःशुल्क प्रदान की जाती है।

दुग्ध पदार्थ पर विशेष अभियान में की गयी कार्यवाही

कानपुर देहात। आयुक्त, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन उप्र लखनऊ एवं जिलाधिकारी आलोक सिंह कानपुर देहात के निर्देश के अनुपालन में दिनांक 19.02.2024 व दिनांक 20.02.2024 को खाद्य पदार्थ.दुग्ध/दुग्ध पदार्थ पर दो दिवसीय विशेष अभियान जनपद में कार्यरत खाद्य सुरक्षा अधिकारियों, द्वारा शैलेश दीक्षित, मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी के नृतत्व में जनपद के विभिन्न स्थानों में कार्यवाही करते हुए कुल 08 नमूने संग्रहीत किए गएए जिनका विवरण निम्न है, खाद्य सुरक्षा अधिकारी विनीता यादव द्वारा स्थान नगर पालिका रोड पुखरायों स्थित राम शिव डेयरी खाद्य कारोबारकर्ता अजीत सिंह से खाद्य पदार्थ मिश्रित दूध का नमूना संग्रहीत कर जाँच हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला प्रेषित किया गया।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी रूचि बाजपेयी द्वारा स्थान.बरौर में खाद्य कारोबारकर्ता माता प्रसाद से खाद्य पदार्थ.मिश्रित दूध एवं स्थान.धार से खाद्य कारोबारकर्ता टिंकू के प्रतिष्ठान से खाद्य पदार्थ अरहर दाल एवं मोहम्मद हसन से खाद्य पदार्थ.सरसों का तेल के नमूने संग्रहीत कर जाँच हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला प्रेषित किया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी दिनेश चन्द्र द्वारा स्थान.उलरापुर में खाद्य कारोबारकर्ता शिव बालक से खाद्य पदार्थ खोया का नमूना संग्रहीत कर जाँच हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला प्रेषित किया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी राम बिहारी द्वारा स्थान नेहरू नगर अकबरपुर से खाद्य कारोबारकर्ता रमाकांत से खाद्य पदार्थ.दही का नमूना संग्रहीत कर जाँच

हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला प्रेषित किया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी अनुराग द्वारा स्थान.धभारी से खाद्य कारोबारकर्ता विकास से खाद्य पदार्थ मिश्रित दूध का नमूना संग्रहीत कर जाँच हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला प्रेषित किया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुधा कनौजिया द्वारा स्थान डुबकी स्थित गगन डेयरी से खाद्य कारोबारकर्ता महेश से खाद्य पदार्थ.मिश्रित दूध का नमूना संग्रहीत कर जाँच हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला प्रेषित किया गया। सहायक आयुक्त (खाद्य)। के द्वारा बताया गया कि उक्त नमूनें जाँच हेतु प्रयोगशाला प्रेषित कर दिए गए है। कुल संग्रहीत नमूने.0 मिला। जाँच परिणाम प्राप्त होने के उपरान्त विधिक कार्यवाही की संस्तुति की जायेगी।

पांच साल में धन दोगुना करने के नाम पर ठगी का आरोप

फतेहपुर। सदर कोतवाली क्षेत्र के मुहल्ला भिखारीपुर के रहने वाले कुछ लोगों ने बीआरसी हसवा में तैनात एक अध्यापक समेत दो लोगों पर पांच साल में धन दोगुना करने का आरोप लगाते हुए जिलाधिकारी को शिकायती पत्र सौंपकर दोनों की आय से अधिक सम्पत्ति की जांच करवाकर जमा धन वापस कराए जाने की गुहार लगाई है। शिकायती पत्र में मुहल्लेवासियों ने बताया कि मुहल्ले के गंगाचरन निषाद व सरजू निषाद पुत्रगण रामस्वरूप निषाद अलग-अलग मकान बनाकर निवास करते हैं। गंगाचरन निषाद प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक हैं, जो इस समय बीआरसी हसवा के पद पर कार्यरत है। मुहल्लेवासियों ने अध्यापक होने के नाते सम्माननीय व अच्छे विचारों का व्यक्ति समझ रहे थे। गंगाचरन निषाद ने मुहल्लेवासियों में अपना विश्वास जमाया कुछ समय बाद उक्त गंगाचरन ने लोगों को गुमराह करके कहा कि कुछ धन जमा करो पांच वर्ष में दोगुना हो जाएगा।

क्विक न्यूज

शिक्षामित्र की हत्या में पूर्व जिलाध्यक्ष व चचेरे भाइयों को उम्रकैद

हमीरपुर। प्रेम प्रसंग के मामले में शिक्षामित्र का अपहरण कर उसकी हत्या करने वाले आरोपितों के खिलाफ दोष सिद्ध होने पर मंगलवार को अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश (एफ़टीसी द्वितीय) मनोज कुमार की अदालत ने सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष व मौजूदा में सपा के लोकसभा क्षेत्र के प्रभारी व दो चचेरे भाइयों को उम्रकैद के साथ साथ 60-60 हजार रुपये प्रत्येक को अर्थदंड लगाया है। वहीं तीनों आरोपितों को कड़ी सुरक्षा के बीच जिला कारागार ले जाया गया। जुर्माना अदा न करने पर सभी को एक वर्ष का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा और जुर्माने की धनराशि से पचास हजार रुपये पीड़ित को देने के भी आदेश किए गए हैं। सहायक अधिवक्ता जगदीश अनुरागी ने बताया कि वादी रामसेवक (मृतक का पिता) ने कुरारा थाने में तहरीर दी थी कि उसका बेटा प्रमोद जो कि शिक्षामित्र के पद पर कार्यरत था। वह 29 जून 2007 की रात अपने घर के बाहर खलिहान में सो रहा था। तभी दिनेश आया और उसे जगाकर अपने घर ले गया। बगल में सो रहे महेंद्र और धर्मेंद्र भी सो रहे थे। दिनेश प्रमोद को लेकर अपने घर में चला गया। तभी प्रमोद की मां दिनेश के घर पहुंची। जहां पर दिनेश और प्रह्लाद बाइक में बैठाकर उसके बेटे को कुरारा की तरफले जा रहे थे। पीछे से तत्कालीन ग्राम प्रधान व मौजूदा समय में सपा लोकसभा क्षेत्र के प्रभारी व पूर्व सपा जिलाध्यक्ष राजबहादुर पाल और रमेश भी बाइक से पीछे गए और उसकी हत्या कर शव पेड़ में लटका दिया। बीती 30 जून 2007 को झलोखर गांव के चौकीदार शिवकुमार के द्वारा झलोखर हार में प्रमोद का शव पेड़ पर लटका मिलने की सूचना मिली। पिता की तहरीर पर कुरारा पुलिस ने दिनेश, प्रह्लाद, रमेश और राजबहादुर पाल के खिलाफ अपहरण कर हत्या करने का मुकदमा दर्ज कर चार्जशीट कोर्ट में दाखिल की थी। विवेचना के दौरान रमेश की मौत हो गई।

लारवाही से नहीं निर्मित हो हो पा रहे परिषदीय विद्यालय

हमीरपुर। निर्धारित तिथि से चार माह बाद भी प्राइमरी विद्यालयों का निर्माण न होने से कार्यदायी संस्था लोनिवि के एविशयन पर सीडीओ ने नाराजगी जाहिर करते हुये ठेकेदार को काली सूची में डालने के लिखित आदेश किये है। जिले के 53 जर्जर परिषदीय विद्यालयों को तोड़कर उनके स्थान पर नये विद्यायों का निर्माण होना था यह काम कार्यदायी संस्था लोनिवि को सौपा गया था शासन ने कहा था हर हाल में विद्यालय अक्टूबर 23 तक निर्मित हो जाना चाहिये था शासन से समय से बजट उपलब्ध होने के बाद भी लोनिवि की बराबर लापरवाही सामने आती रही।बताया जाता है कि तीस विद्यालयों में काम पूरा हो गया है मगर 23 विद्यालय में काम बहुत ही पीछे है। विद्यालय न बन पाने के कारण बच्चों को बैठने में बहुत ही दिक्कते आ रही है अध्ययन कार्य पूरी तरह प्रभावित हो रहा है। डीएम की अध्यक्षता में कई मर्तवा बैठके हुई मगर लोनिवि के अधिशासी अभियंता एमएल वर्मा प्रशासन को बराबर गुमराह करते रहे।श्री वर्मा के ज्यादातर काम लंबित है। अक्सर कार्यालय से गायब रहते है। जनता से कभी भी नही मिलते है। सीडीओ चंद्रशेखर शुक्ला ने बताया कि लोनिवि के एविशयन को कड़ा पत्र लिख कर ठेकेदार को काली सूची में डालने को कहा गया है। उनका कहना है कि इस मामले में वह फिर से बैठक कर समीक्षा करेगे।

बाइकों की भिड़ंत में पिता-पुत्र समेत तीन की मौत

फतेहपुर। ललौली थाना क्षेत्र के कस्बा बहुआ मुहल्ला जवाहरनगर निवासी शिव प्रसाद का 27 वर्षीय पुत्र रोहित अपने मित्र आशु सिंह पुत्र चंद्रभान के साथ बाइक से लकड़ी कटान कर ललौली जा रहा था। वहीं गाजीपुर कस्बा निवासी स्व. प्रहलाद का 52 वर्षीय पुत्र रामशरन अपने 23 वर्षीय पुत्र हितेंद्र के साथ दतौली से रिश्तेदारी से घर वापस जा रहे थे। जैसे ही यह लोग करसवां गांव के पास पहुंचे तभी बाइकों की भिड़ंत हो गई। जिससे रामशरन, जितेंद्र व दूसरी बाइक सवार रोहित की घटनास्थल पर मौत हो गई। वहीं आशु गंभीर रूप से घायल हो गया। हालत चिंताजनक देखते हुए कानपुर मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया। पुलिस ने तीनों शवों को विच्छेदन गृह भेज दिया।

वृद्ध ने लगाई फांसी

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के ग्राम दिमंगलपुर में बीमारी से तंग 60 वर्षीय वृद्ध ने घर के अंदर फांसी लगाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। दिमंगलपुर गांव निवासी सुंदर लोधी का पुत्र शिवदास काफी दिनों से मानसिक तनाव में था। बीती शाम उसने घर के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया।

कुत्तों के हमले से युवक हुआ घायल

गुरसहायगंज (कन्नौज)। खेतों की ओर खेल रहे युवक पर अचानक आबारा कुत्तों ने हमला बोलकर लहूलुहान कर दिया। चीख पुकार पर दौडे लोगों ने किसी तरह युवक को बचाया। मंगलवार दोपहर रजलामऊ रोड पर खेतों की ओर खेल रहे कस्बा समधन के मोहल्ला काजीमहल निवासी 15 वर्षीय अनमोल पुत्र गुड्डू पर अचानक आवारा कुत्तों ने हमला बोलते हुये नोच डाला। चीख पुकार की आवाज सुन आसपास के लोगों ने दौड़कर कुत्तों के चंगुल से छुड़ाया।

किसान दिवस 22 को होगा आयोजितः उप निदेशक कृषि

कानपुर देहात। उप निदेशक कृषि राम बचन राम द्वारा अवगत कराया गया है कि शासन के निर्देशानुसार कृषकों की समस्याओं के निराकरण हेतु जनपद स्तर पर प्रत्येक माह के तृतीय बुधवार को किसान दिवस का आयोजन विकास भवन सभागार माती में पूर्वाहन 12.00 बजे से किया जाता है। आयोजित कार्यक्रम में कृषि एवं कृषि सभी विभागों यथा उद्यान विभागए पशु पालन विभाग, मत्स्य पालन विभाग सहकारिता विभाग मण्डी समिति लघु सिचाई विभाग, सिचाई विभाग, विद्युत विभाग, जल निगमए कृषि विज्ञान केन्द्र, अग्रणी बैंक मैनेजर नेडा एवं फसल बीमा कम्पनी के जनपदस्तरीय अधिकारियों द्वारा जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में किसान दिवस का आयोजित कर कृषको की समस्याओं को निस्तारित करने के साथ-साथ उपस्थित कृक्षको की विभागीय योजनाओं कार्यकमों एवं नवीनतम उन्नत कृषि तकनीकी के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने का कार्य भी किया जाता है।

डीएम ने प्रभारी कानूनगो को प्रतिकूल प्रविष्टि देने के दिए निर्देश

संवाददाता। फर्रुखाबाद

जिलाधिकारी डॉ. वी.के. सिंह ने सदर तहसील के लापरवाह प्रभारी कानूनगो महेश्वर सिंह को प्रतिकूल प्रविष्टि देने का निर्देश दिया। डीएम की सख्ती से कर्मचारियों में हड़कंप मच गया। डीएम की अध्यक्षता में तहसील सदर में संपूर्ण समाधान दिवस का संपन्न हुआ। इस दौरान शिकायत मिलने पर डीएम ने लापरवाह लेखपाल सौरभ पांडे को डांट लगाई ग्राम वीरपुर गांधी निवासी अरशद ने चकरोड की पैमाइश के लिए आईजीआरएस पर शिकायत की थी।

लेखपाल ने पहले रिपोर्ट लगा दी और बाद में खाना पूर्ति के लिए मौके पर गये थे। इसी बात की अरशद ने आज शिकायत की थी। भू माफिया से शॉर्टकट होने के कारण दिलवाल क्षेत्र का लेखपाल अनिल वर्मा ने आईजीआरएस पर कई झूठी रिपोर्ट लगाई है। इस दौरान डीएम ने तहसील के विभिन्न पटलों का निरीक्षण भी किया।

तहसील में साफ सफाई का अभाव पाया गया जगह जगह सीलन पाई गई। अलमारियों में रिकॉर्ड अव्यवस्थित तरीके से रखे हुये पाये गये। यह दशा देखकर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताई जिलाधिकारी द्वारा तहसील दिवस शिकायत रजिस्टर में सही निस्तारण दर्ज न होने पर प्रभारी कानूनगो जहानगंज महेश्वर सिंह को परनिन्दा प्रवष्टि देने के निर्देश दिए। समाधान दिवस में मुख्य विकास अधिकारी, अपर पुलिस अधीक्षक, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक व संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। मालूम हो कि लेखपाल महेश्वर सिंह तहसील सदर लेखपाल संघ के अध्यक्ष है जिसके कारण वह मनमाने ढंग से काम करने के लिए चर्चित है।

लोकसभा चुनाव में सफलता के लिए संगठित होकर करें कार्य

संडीला (हरदोई)। भाजपा द्वारा चलाए जा रहे लाभार्थी जनसंपर्क अभियान के अंतर्गत नगर मण्डल की कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें भाजपा के जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं को बूथों पर जाकर जनसंपर्क अभियान चलाने का आह्वान किया गया। क्षेत्रीय मंत्री तथा मण्डल प्रभारी संजय गुप्ता की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यशाला में नगर मण्डल अध्यक्ष रमन नीतीश जायसवाल ने कहा कि भाजपा के सांसद, विधायक, विधान परिषद सदस्य, प्रदेश से लेकर मण्डल तक के वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारी कम से कम 50 बूथों पर जाकर लाभार्थियों से संपर्क करें और केन्द्र और प्रदेश सरकारों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के विषय में विस्तार से चर्चा करें। साथ ही चर्चा के फोटो लेकर उन्हें सरल ऐप के माध्यम से अपलोड करें। लोकसभा मिश्रिख के सासंयोजक अतुल तिवारी ने उपस्थित

कार्यशाला में उपस्थित भाजपा नेतागण

लोगों का आह्वान किया कि प्रधानमंत्री के मिशन 400 को सफल बनाने के लिए एक एक बूथ पर भाजपा की विजयश्री सुनिश्चित करना आवश्यक है। ओबीसी मोर्चा के कोषाध्यक्ष प्रदीप जायसवाल, जिला उपाध्यक्ष जीतेन्द्र राठौर, महामंत्री रिषभ खन्ना, मण्डल उपाध्यक्ष नरेश अर्कवंशी, सौरभ गुप्ता, शिवम सिंह, दीपक गुप्ता, अल्पना अस्थाना के अलावा शक्तिकेन्द्र संयोजक सुनील अस्थाना, अमरेन्द्र अर्कवंशी, नामिक सभासद ब्रजेश पाण्डेय समेत कई लोगों ने अपने विचार प्रकट किए और भाजपा को आगामी चुनाव में विजयी बनाने का संकल्प व्यक्त किया।

जल्द से जल्द निपुण विद्यालय बनायें शिक्षकः मलिखान सिंह

● एआरपी नें शिक्षकों की मासिक बैठक कार्यों को पूर्ण करने के लिये प्रेरित किया

संवाददाता। गुरसहायगंज (कन्नौज)

संकुल की बैठक में मौजूद शिक्षक व एआरपी।

न्याय पंचायत समधन देहात की मासिक संकुल स्तरीय बैठक प्राथमिक विद्यालय अनीभोज में संपन्न हुई। मासिक बैठक में मुख्य अतिथि एआरपी मलिखान सिंह रहे। बैठक का संचालन नोडल संकुल शिक्षक संजीव राजपूत ने किया। इस दौरान मुख्य अतिथि एआरपी मलिखान सिंह ने बताया कि निपुण ऐप से नियमित बच्चों का आंकलन करते रहे तथा सभी शिक्षक जल्द से जल्द निपुण विद्यालय बनाएं। नोडल शिक्षक संकुल संजीव राजपूत ने कहा निपुण लक्ष्य एप से बच्चों का स्पॉट असेसमेंट प्रतिदिन करते रहे जिससे उनको निपुण करने में आसानी हो सके। प्रिंट रिच वातावरण बनाया जाए। संकुल शिक्षक अभिषेक कुमार ने बताया कि किस तरह से बार्षिक परीक्षा की बेहतर तरह से तैयारी की जाए।

शिक्षक संकुल रजनी राजपूत ने मैथ किट को कैसे बेहतर उपयोग कर सकते हैं तथा दीक्षा ऐप के माध्यम से किस तरह लर्निंग को रोचक बनाया जा सकता है। संकुल शिक्षक अनीता सुधाकर तथा शशांक ने समूह बनाकर गुणा व भाग की प्रक्रिया के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। बैठक में न्याय पंचायत समधन देहात के शिक्षक प्रमोद कुमार यादव, मो. इमरान, तौकीर फत्मा रिजवी, ज्योति मिश्रा, अमन, जोगेंद्र सिंह, राजन गौतम, प्रदीप कुमार, दिनेश चंद्र शर्मा, आशीष पाण्डेय, आशीष शँखबार, नम्रता सिंह सहित समस्त अध्यापक मौजूद रहे।

सपा महानगर ने नवमनोनीत प्रदेश सचिव मनदीप यादव का किया स्वागत, बूथो की समीक्षा की

फर्रुखाबाद। समाजवादी पार्टी महानगर फर्रुखाबाद की महानगर के बूथों की समीक्षा हेतु एक बैठक समाजवादी पार्टी के आवास विकास स्थित जिला कार्यालय पर संपन्न हुई। अध्यक्षता महानगर के अध्यक्ष राघव दत्त मिश्रा एवं महानगर के बूथों की समीक्षा हेतु नवनियुक्त प्रदेश सचिव मनदीप यादव एवं फर्रुखाबाद लोकसभा के प्रभारी छात्र सभा के प्रदेश अध्यक्ष विनीत कुशवाहा ने की, बैठक का संचालन महानगर के महासचिव रजत क्रांतिकारी ने किया। सर्वप्रथम नवनियुक्त प्रदेश सचिव मनदीप यादव का सभी महानगर साथियों ने माल्यार्पण कर उन्हें प्रदेश सचिव बनने की बधाई दी। महानगर के बूथों की समीक्षा करते हुए प्रदेश सचिव मनदीप यादव ने कहा कि जब तक हमारा बूथ मजबूत नही होगा तब तक हमारी लड़ाई अधूरी है। हमारी लड़ाई इस देश की सबसे मक्कार पार्टी भारतीय जनता पार्टी से है।

डीएम ने फरियादें सुनकर समस्या निस्तारण को भेजी पुलिस व राजस्व टीमें

● मोहम्मदी में डीएम की अध्यक्षता में हुआ सम्पूर्ण समाधान दिवस

लखीमपुर खीरी। आमजन की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए प्रत्येक माह के प्रथम एवं तृतीय शनिवार को आयोजित होने वाले सम्पूर्ण समाधान दिवसों की कड़ी में जिले की सभी तहसीलों में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन हुआ। तहसील मोहम्मदी के सभागार में डीएम महेंद्र बहादुर सिंह, एसपी गणेश प्रसाद साहा, सीडीओ अनिल कुमार सिंह, एसडीएम डॉ अवनीश कुमार व अन्य अधिकारियों ने आये हुए फरियादियों के समस्याओं की गम्भीरतापूर्वक सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को समयबद्धता के साथ गुणवत्तापरक निस्तारण के निर्देश दिए।

डीएम ने समाधान दिवस में आए फरियादियों से समस्याओं की सुनवाई की। डीएम ने कई मामलों में समस्या निस्तारण को पुलिस व राजस्व टीमें भेजी। डीएम ने मामलों के समाधान को संबंधित अफसरों को जरूरी हिदायतें दीं। जनसमस्याओं का निस्तारण मुख्यमंत्री व शासन की प्राथमिकता है। सभी अधिकारी जनसमस्याओं के निस्तारण की गुणवत्ता व समयबद्धता पर विशेष ध्यान दें। आने वाले फरियादियों के समस्याओं की गम्भीरतापूर्वक सुनवायी कर उसका समयबद्धता से निस्तारण सुनिश्चित कराये ताकि फरियादी को अनावश्यक रूप से भाग.दौड़ न करनी पड़े। समस्याओं के निस्तारण की कार्यवाही पर इस बात पर विशेष ध्यान रखा जाय कि निस्तारण की कार्यवाही से फरियादी भी संतुष्ट दिखे। डीएम की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में कुल 33 शिकायती प्रार्थना पत्र पंजीकृत कियेए जिसमें 04 शिकायत का मौके पर निस्तारण हुआ। सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व 12, पुलिस 08, विकास 04, आपूर्ति 06 गन्ना के 01 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिन्हें पृष्ठांकित कर संबंधित अधिकारियों को शीघ्र निस्तारण हेतु उपलब्ध करा दिया। मुख्य रूप से एसीएमओ डॉ अनिल गुप्ता, डीडीओ दिनकर विद्यार्थी, एसडीएम डॉ अवनीश कुमार, तहसीलदार प्रीति सिंह सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे। तहसील मोहम्मदी में संपूर्ण समाधान दिवस में राशन कार्ड बनवाने की फरियाद लेकर आए दिव्यांग की दीनहीन दशा देख डीएम भावुक हो उठे। उन्होंने डीएसओ अंजनी कुमार सिंह को आवाज लगाई और राशन कार्ड निर्गत करने के निर्देश दिए। डीएम के निर्देश मिलते ही आपूर्ति महकमें ने फरियादी दिव्यांग से जरूरी दस्तावेज लेकर राशन कार्ड बनवाने की प्रक्रिया पूरी की। डीएम ने फरियादी दिव्यांग को राशन कार्ड की प्रति प्रदान की। संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने एसपी गणेश प्रसाद साहा सीडीओ अनिल कुमार सिंह के साथ स्वयं श्रेणी के शिशु को सुपोषण किट प्रदान की। वही 6 माह के एक शिशु को खीर खिलाकर अन्नप्राशन संस्कार कराया।

कांग्रेस परिवारवादी पार्टी, विकास नहीं कर सकती: शाह

भाषा। जयपुर

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उसे परिवारवादी व दिशाहीन पार्टी करार दिया तथा कहा कि वह देश का विकास नहीं कर सकती। शाह ने उदयपुर में पार्टी के कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, कांग्रेस पार्टी परिवारवाद पार्टी है, इतना ही नहीं यह दिशाविहीन पार्टी है। उन्होंने कहा, भारत का विकास कांग्रेस पार्टी नहीं कर सकती। गरीबों का कल्याण कांग्रेस पार्टी नहीं कर सकती। भारत को सुरक्षित यह कांग्रेस पार्टी नहीं कर सकती। भारत का गौरव कांग्रेस पार्टी नहीं बढ़ा सकती। शाह ने कहा कि कांग्रेस वाले एफिडेविट देते हैं कि राम का अस्तित्व भी नहीं है। उन्होंने कहा, कांग्रेस देश का विभाजन करने पर तुली है। उनके नेता उत्तर भारत और दक्षिण भारत दो हिस्सों में बांटने की मांग करते हैं। लेकिन अब किसी की हिम्मत नहीं है कि राजस्थान या देश में दंगे कर सके। हम भारत को आत्मनिर्भर बनाएंगे, ए भारतीय जनता पार्टी सरकार का वादा है। भाजपा नेता ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने राम मंदिर के मुद्दे को अटकाकर रखा। शाह ने कहा, हमने वादा किया था कि हम मंदिर बनाएंगे। करोड़ों लोगों के आराध्य भगवान राम एक टेंट में अपमानित होकर, अपना स्थान गंवाकर बैठे थे।...कांग्रेस ने प्रभु श्रीराम के मंदिर के मुद्दे को अटकाकर, लटकाकर व भटकाकर रखा। कहीं पर भी इनकी मंशा नहीं थी कि अयोध्या में राम मंदिर बने।

मोदी सरकार की उपलब्धि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने दस साल में देश के पच्चीस करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर लाने का काम किया। गरीबों को घर दिया, गैस सिलेंडर दिया, बिजली दी, प्रति व्यक्ति प्रति माह पांच किलो अनाज मुफ्त दिया, पांच लाख तक की दवा का खर्च आज मोदी सरकार उठा रही है।

शाह ने कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार ने देश को सुरक्षित करने का काम किया है। जब देश में मनमोहन की सरकार थी, कांग्रेस की सरकार थी तो पाकिस्तान से आए दिन बम धमाके होते थे लेकिन मोदी सरकार ने घर में घुसकर बदला लेने का काम किया। शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने सुशासन देने का काम किया है और भ्रष्टाचार को लेकर मोदी के विरोधी भी कोई आरोप नहीं लगा सकते। उन्होंने राजस्थान में पूर्ववर्ती अशोक गहलोत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि उसके समय में राज्य की महिलाएं और दलित सुरक्षित नहीं थे और कोई भी जिला ऐसा नहीं था जहां दंगे न हुए हों। लेकिन अब आपने डबल इंजन सरकार बनाई है अब कोई भी राजस्थान की माताओं बहनों की ओर आंख उठाकर देख नहीं पाएगा। राज्य को दंगों से मुक्ति मिलेगी।

भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा, मोदी जी के नेतृत्व में राजग एक विकास करने वाला एलायंस है जबकि यह घमंडिया, इंडी गठबंधन यह सात परिवारों का परिवारवादी पार्टियों का स्वार्थी मेलजोल है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने आदिवासी समुदाय को सम्मान देने का काम किया है और द्रौपदी मुर्मू को भारत का राष्ट्रपति बनाया है। शाह ने लोगों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के विकास के लिए लोकसभा चुनाव में भाजपा को वोट देने की भी अपील की। इससे पहले शाह राजस्थान के एक दिवसीय दौरे पर मंगलवार दोपहर बीकानेर पहुंचे। उन्होंने वहां आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की बीकानेर क्लस्टर में लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति की बैठक को संबोधित किया।

पीडीपी के मुजफ्फर हुसैन बेग ने प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ की

जम्मू। हाल में, फिर से पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) में शामिल हुए पूर्व उपमुख्यमंत्री मुजफ्फर हुसैन बेग ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तारीफ करते हुए कहा कि उनके शासन काल में लोगों की जिंदगी बदल गई है। बेग ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान पर उन्हें पूरा यकीन है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) आगामी लोकसभा चुनाव में 370 सीट जीतेगी। पीडीपी नेता ने जम्मू में एक जनसभा में, प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए भाषण को ऐतिहासिक करार दिया। बेग ने यहां मोदी की रैली से इतर संवाददाताओं से कहा, यदि आप (लोकसभा चुनाव में 370 सीट जीतने) के उनके (मोदी के) दावे पर भरोसा नहीं कर सकते हैं तो आप मेरे शब्दों पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? यह (लोकसभा चुनाव में भाजपा को 370 और राजग को 400 सीट पर जीत मिलना)होकर रहेगा। प्रधानमंत्री की रैली में हिस्सा लेने वाले बेग ने कहा, उनका भाषण शानदार था।

विपक्षी गठबंधन यूडीएफ ने वायनाड में सर्वदलीय बैठक का बहिष्कार किया

वायनाड। केरल में कांग्रेस नीत विपक्षी गठबंधन यूडीएफ ने मंगलवार को इस जिले में लगातार होने वाले मानव-पशु टकराव मुद्दे पर चर्चा के लिए राज्य सरकार द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक का बहिष्कार किया। वन मंत्री एके ससींद्रन को पद से हटाने की मांग करते हुए कांग्रेस विधायकों टी सिद्दीकी और आई सी बालाकृष्णन के नेतृत्व में विपक्षी प्रतिनिधि बैठक से बाहर चले गए। विपक्ष का आरोप है कि वन मंत्री ने जिले का दौरा नहीं किया जबकि जंगली हाथियों के हमलों में दो लोग मारे जा चुके हैं। विपक्षी सदस्यों ने जोर दिया कि इस समय की जरूरत कार्वाई है न कि चर्चा। इसके साथ ही वे चाहते थे कि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन भी पशुओं के लगातार हमलों से प्रभावित लोगों की पीड़ा को समझने के लिए जिले का दौरा करें।

सिद्दीकी ने कहा कि बैठक पीड़ितों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए शुरू की जानी चाहिए थी। उन्होंने बैठक कक्ष के बाहर संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा, "हम ऐसे वन मंत्री के साथ बैठक में कैसे भाग ले सकते हैं जिन्होंने अभी तक पीड़ितों के घरों का दौरा तक नहीं किया? इसलिए, हमने बैठक में साफ कहा कि यह मंत्रिस्तरीय प्रतिनिधिमंडल नहीं है और यहां सर्वदलीय बैठक बुलाने के लिए राज्य के मुख्यमंत्री को खुद आना चाहिए। उन्होंने कहा कि पीड़ितों को शीघ्र मुआवजा, वित्तीय सहायता में वृद्धि, कर्ज माफ करना और मननथावाडी मेडिकल कॉलेज में सुविधाओं में सुधार सहित प्रमुख मांगों और मुद्दों पर पहले ही यहां आयोजित विभिन्न बैठकों में चर्चा की गई थी।

सिद्दीकी ने कहा, इसलिए अब चर्चा नहीं बल्कि कार्वाई समय की मांग है। लेकिन, सरकार अब भी और चर्चा करने एवं वायनाड के लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रही है। इससे पहले दिन में युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के एक समूह ने जिले के सुल्तान बाथरी में मंत्रिस्तरीय प्रतिनिधिमंडल को काले झंडे दिखाए।

प्रदर्शनकारियों ने जिले का दौरा करने में कथित देरी के विरोध में मंत्रियों के काफिले के सामने काले झंडे लहराए। मंत्रियों में के राजन, एके ससींद्रन और एमबी राजेश शामिल थे। पुलिस ने आंदोलनकारियों को पीछे धकेल दिया। राज्य सरकार को व्यापक आलोचना का सामना करना पड़ा है क्योंकि हाल की घटनाओं के मद्देनजर निवासियों को सांत्वना दिलाने के लिए किसी भी मंत्री ने वायनाड का दौरा नहीं किया। कांग्रेस नीत यूडीएफ ने पहले ही जिले में बढ़ते मानव-पशु संघर्ष के स्थाई समाधान की मांग को लेकर आज जिलाधिकारी कार्यालय परिसर के सामने दिन-रात प्रदर्शन करने की घोषणा की है।

जेल में बंद न्यूजक्लिक के संस्थापक प्रबीर की मेडिकल रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली पुलिस को समाचार पोर्टल न्यूजक्लिक के संस्थापक प्रबीर पुरकायस्थ की मेडिकल रिपोर्ट सौंपने का मंगलवार को निर्देश दिया। पुरकायस्थ अभी गैर कानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत दर्ज एक मामले में तिहाड़ जेल में बंद हैं। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस वी राजू को एक सप्ताह के अंदर जेल के चिकित्सा अधिकारी की रिपोर्ट सौंपने को कहा।

पुरकायस्थ की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा कि उनके मुवक्किल की तबियत ठीक नहीं है और न्यायालय को जेल अधिकारियों से एक रिपोर्ट मांगनी चाहिए, जिसके बाद शीर्ष अदालत का यह निर्देश आया। सिब्बल ने कहा, समय तेजी से बीत रहा है लेकिन मुझे कोई खबर नहीं मिल रही है। हम अभी केवल यही चाहते हैं कि न्यायालय जेल अधीक्षक से उनकी मेडिकल रिपोर्ट मांगे। वह 74 साल के हैं और बहुत मुश्किल में है।

जेल के चिकित्सा अधिकारी से रिपोर्ट मांगे जाने के सिब्बल के अनुरोध का विरोध करते हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) राजू ने कहा कि वह एम्स से उपयुक्त रिपोर्ट लेंगे। न्यायालय ने राजू की आपत्ति पर नाराजगी जताते हुए कहा, आपकी ओर से ऐसा बयान आना आश्चर्यजनक है। अगर आपको अपने अधिकारी पर ही भरोसा नहीं है, तो उन्हें हटा दें या उनके खिलाफ कार्वाई करें। अगर आप इतने साहसी हैं तो कार्वाई करें। अपने अधिकारियों के खिलाफ कार्वाई करें। यह आपकी और प्रशासन की अक्षमता को दर्शाता है। राजू ने कहा कि वह किसी अधिकारी विशेष पर आक्षेप नहीं लगा रहे हैं। न्यायालय ने एएसजी को एक सप्ताह के अंदर रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया।

एक्ट ईस्ट नीति के क्रियान्वयन से पूर्वोत्तर को भरपूर लाभ मिल रहा है: धनखड़

ईटानगर। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को कहा कि एक्ट ईस्ट नीति के क्रियान्वयन से पूर्वोत्तर क्षेत्र में भरपूर लाभ मिल रहा है। अरुणाचल प्रदेश राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर राज्य का दौरा कर रहे धनखड़ ने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों की सांस्कृतिक विविधता के बिना भारत की समग्र संस्कृति अधूरी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी अरुणाचल प्रदेश के लोगों को उनके राज्य दिवस पर शुभकामनाएं दीं। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, "अरुणाचल प्रदेश के स्थापना दिवस पर, वहां के निवासियों को मेरी शुभकामनाएं। अरुणाचल प्रदेश ने देश के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया हैं। अरूणाचल प्रदेश की जीवंत जनजातीय परंपराएं, जैव विविधता तथा संस्कृति बहुत प्रशंसनीय है। अरुणाचल प्रदेश आगामी वर्षों में समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर रहे।

शाह ने अरुणाचल प्रदेश के स्थापना दिवस पर राज्य के लोगों को बधाई दी और कामना की कि मुख्यमंत्री पेमा खांडू के नेतृत्व में राज्य विकास की

नई उंचाई को छुएगा। शाह ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, अरुणाचल प्रदेश के भाइयों और बहनों को राज्य के स्थापना दिवस की बधाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सर्वसमावेशी विकास की नीति ने प्राकृतिक सुंदरता और जीवंत सांस्कृतिक विविधता से समृद्ध राज्य की आर्थिक क्षमता को नया आयाम देने में बहुत योगदान दिया है। उन्होंने कहा, मैं कामना करता हूं कि आने वाले समय में अरुणाचल प्रदेश के लोग पेमा खांडू के नेतृत्व में विकास की नई उंचाई को छुए।

अरूणाचल प्रदेश और मिजोरम को 1987 में आज ही के दिन राज्य का दर्जा दिया गया था। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि सरकार की एक्ट ईस्ट नीति के क्रियान्वयन से पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में बुनियादी ढांचे और संपर्क का अभूतपूर्व विकास हुआ है। एक्ट ईस्ट नीति को लागू करने में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का दृष्टिकोण क्षेत्र में समृद्ध लाभ पहुंचा रहा है। उन्होंने कहा, मैं 2047 तक विकसित भारत के हमारे दृष्टिकोण में पूर्वोत्तर को एक सक्रिय भागीदार बनाने के लिए इस क्षेत्र तक पहुंचने को लेकर केंद्र के सफल प्रयासों, नीतियों और पहल की सराहना करता हूं।

क्षेत्र के आठ राज्यों को अष्ट लक्ष्मी (धन की देवी के आठ रूप) बताते हुए उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कामना की कि पूर्वोत्तर हमेशा उगते सूरज की तरह चमकता रहे और देश को शांति और प्रगति के पथ पर ले जाए। अरुणाचल प्रदेश को भारत में उगते सूरज की भूमि के रूप में जाना जाता है क्योंकि राज्य के पूर्वी हिस्से में स्थित एक गांव में देश के किसी भी अन्य स्थान से पहले सूर्योदय होता है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि पूर्वोत्तर को शांति का लाभ मिल रहा है, एक दृढ़ सरकार सभी हितधारकों के बीच सद्भाव पर ध्यान केंद्रित कर रही है। राजनीतिक माहौल शांतिपूर्ण और स्थिर है, विकास संबंधी नीतियां उम्मीद के मुताबिक हैं। उन्होंने कहा कि यह इस क्षेत्र के भविष्य और लोगों की भलाई के लिए महत्वपूर्ण है।

पिछले 10 वर्षों में, हमने केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शानदार तालमेल देखा है, जिससे बड़े पैमाने पर विकास हुआ है। इस क्षेत्र की आकांक्षाएं अब फलीभूत हो रही हैं। हाल ही में राष्ट्रीय एकता यात्रा के दौरान अरुणाचल प्रदेश की मेनचुका घाटी से युवा छात्रों का एक प्रतिनिधिमंडल दिल्ली स्थित धनखड़ के आधिकारिक आवास आया था। धनखड़ ने उनके दौरे को याद करते हुए कहा कि युवा लड़के और लड़कियों ने अपनी प्रतिभा और सच्चाई का प्रदर्शन करके गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने कहा कि केंद्र की नई राष्ट्रीय ड्रोन नीति से अरुणाचल प्रदेश के दूरदराज के इलाकों को जोड़ा जा सकता है और आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकती है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि पिछले सात वर्षों में, अरुणाचल प्रदेश में सड़क की लंबाई में 64 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और लगभग 20,000 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया गया है।

क्विक न्यूज

उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक पर जम्मू में देश की सबसे लंबी परिवहन सुरंग शुरू

श्रीनगर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल) पर देश की सबसे लंबी परिवहन सुरंग का उद्घाटन किया और कश्मीर घाटी की पहली विद्युतीकृत रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखाई। एक रेलवे अधिकारी ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी जम्मू में मौजूद थे और उन्होंने डिजिटल तरीके से एक साथ दो विद्युतीकृत रेलगाड़ियों को हरी झंडी दिखाई - जिनमें एक श्रीनगर से संगलदान तक और दूसरी संगलदान से श्रीनगर तक चलेगी। प्रधानमंत्री ने 48.1 किलोमीटर लंबे बनिहाल-खारी-सुम्बर-संगलदान खंड का भी उद्घाटन किया। अधिकारी ने कहा, इस खंड पर यह सबसे लंबी सुरंग है, जो 12.77 किलोमीटर लंबी है और टी-50 के नाम से जानी जाती है। उत्तर रेलवे के अनुसार, अब ट्रेन बारामूला से बनिहाल होते हुए संगलदान तक चल सकती हैं, जो पहले अंतिम गंतव्य स्टेशन या शुरुआती स्टेशन हुआ करता था। टी-50 को बनिहाल-खारी-सुम्बर-संगलदान खंड पर पड़ने वाली 11 सुरंगों में से सबसे चुनौतीपूर्ण माना जाता है। परियोजना से जुड़े रेलवे अधिकारियों के अनुसार, सुरंग का काम 2010 के आसपास शुरू हुआ था और इसे चालू करने में लगभग 14 साल लग गए। एक अधिकारी ने कहा, आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए सुरंग के अंदर सभी सुरक्षा उपाय किए गए हैं। किसी भी आपात स्थिति में यात्रियों को निकालने के लिए टी-50 के समानांतर बचाव सुरंग का निर्माण किया गया है। अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया कि आग लगने की घटना से निपटने के लिए सुरंग के दोनों किनारों पर पानी के पाइप बिछाए गए हैं और हर 375 मीटर पर एक वाल्व लगाया गया है ताकि आग की लपटों को बुझाने के लिए ट्रेन पर दोनों तरफ से पानी का छिड़काव किया जा सके। उन्होंने कहा, अन्य लंबी सुरंगों के लिए भी बचाव सुरंगें बनाई गई हैं।

भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष 22 फरवरी से 18 मार्च तक किए जाएंगे थाईलैंड में प्रदर्शित

नई दिल्ली। दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में संजोकर रखे गए भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों में कुछ 22 फरवरी से 18 मार्च तक थाईलैंड में प्रदर्शित किए जाएंगे। संस्कृति मंत्रालय ने मंगलवार को यह बात कही। मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि इन अवशेषों को भारतीय वायुसेना के विशेष विमान से ले जाया जाएगा। दुनिया भर में बौद्ध धर्मावलंबी बहुत आदर भाव से इन अवशेषों को देखते हैं। संस्कृति मंत्रालय के सचिव गोविंद मोहन ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय में संजोकर रखे गए भगवान बुद्ध के 20 अवशेषों में चार थाईलैंड में प्रदर्शित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि ए अवशेष 22 फरवरी को थाईलैंड पहुंचेंगे तथा उन्हें 22 फरवरी से तीन मार्च तक बैंकाक में विशेष मंडप में प्रदर्शित किया जाएगा। मोहन ने कहा कि बाद में चार मार्च से 18 मार्च तक थाईलैंड में अन्य तीन स्थानों पर इन अवशेषों को प्रदर्शित किया जाएगा। उनके अनुसार 19 मार्च को इन अवशेषों को वापस ले आया जाएगा। सचिव ने कहा कि ए अवशेष थाई सरकार के अनुरोध पर भेजे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि उसके अनुरोध पर भगवान बुद्ध के दो शिष्यों के अवसर भी प्रदर्शित किए जाने के लिए थाईलैंड भेजे जा रहे हैं जिन्हें मध्य प्रदेश के सांची में संजोकर रखा गया है।

पूर्व डीआईपीपी सचिव के परिसर पर सीबीआई छापा

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) पूर्व डीआईपीपी सचिव रमेश अभिषेक से जुड़े भ्रष्टाचार के एक मामले में उनके परिसर पर तलाशी अभियान चला रहा है। एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के 1982 बैच के बिहार कैडर के अधिकारी अभिषेक 2019 में सेवानिवृत हुए और इसके बाद एक निजी कंपनी में शामिल हो गए। उन्होंने कहा कि एजेंसी भ्रष्टाचार के मामले में दिल्ली में अभिषेक के एक परिसर की तलाशी ले रही है। अभिषेक औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) में सचिव पद पर तैनात रह चुके हैं।

ब्रह्मांड में सर्वाधिक तेजी से बढ़ रहे ब्लैक होल की खोज की गई

नई दिल्ली। खगोलविदों ने अब तक के सबसे तेजी से बढ़ने वाले ब्लैक होल की खोज की है जो ब्रह्मांड में सबसे चमकदार ज्ञात वस्तु है और यह हर दिन एक सूर्य के बराबर के आकार को निगल रहा है। ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी (एएनयू) के अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि सूर्य से लगभग 17 अरब गुना अधिक द्रव्यमान वाले ब्लैक होल ने एक ऐसा रिकॉर्ड बनाया है जिसे शायद कभी नहीं तोड़ा जा सकेगा। एएनयू में एसोसिएट प्रोफेसर और अनुसंधान रिपोर्ट के प्रमुख लेखक क्रिश्चियन वुल्फ ने कहा, इसकी वृद्धि की अविश्वसनीय दर का मतलब भारी मात्रा में प्रकाश और गर्मी निकलना भी है। वुल्फ ने एक बयान में कहा, "तो, यह ब्रह्मांड में सबसे चमकदार ज्ञात वस्तु भी है। यह हमारे सूर्य से 500 लाख करोड़ गुना अधिक चमकीला है। ब्लैक होल अंतरिक्ष का एक ऐसा क्षेत्र होता है जहां गुरुत्वाकर्षण इतना मजबूत होता है कि प्रकाश सहित कुछ भी इससे बच नहीं सकता है।

भारत-इंग्लैंड क्रिकेट मैच रद्द करने की धमकी देने पर पन्नू के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

रांची। भारत और इंग्लैंड के बीच चौथे टेस्ट क्रिकेट मैच को रद्द करने की धमकी देने के आरोप में झारखंड पुलिस ने अमेरिका में रह रहे खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू के खिलाफ मंगलवार को प्राथमिकी दर्ज की। अधिकारियों ने बताया कि गृह मंत्रालय द्वारा आतंकवादी के रूप में सूचीबद्ध किए गए पन्नू ने प्रतिबंधित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) (माओवादी) से सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक वीडियो के माध्यम से क्रिकेट मैच को बाधित करने की अपील की है। भारत और इंग्लैंड के बीच चौथा टेस्ट मैच 23 फरवरी से रांची के जेएससीए इंटरनेशनल स्टेडियम कॉम्प्लेक्स में शुरू होगा।

हटिया के पुलिस उपाधीक्षक पी के मिश्रा ने संवाददाताओं से कहा, गुरुपतवंत सिंह पन्नू ने भारत और इंग्लैंड की टीम को रांची में मैच रद्द करने की धमकी दी है। उसने भाकपा (माओवादी) से भी मैच में बाधा पहुंचाने की अपील की है ताकि उसे रद्द किया जा सके। उन्होंने कहा, उसके खिलाफ आईटी (सूचना प्रौद्योगिकी) अधिनियम के तहत धुर्वा पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है और जांच शुरू कर दी गई है।

मिश्रा ने कहा कि सुरक्षा बढ़ाने के लिए भी कदम उठाए गए हैं। पन्नू 2019 में उस समय से राष्ट्रीय जांच एजेंसी की रडार पर है, जब आतंकवाद विरोधी संघीय एजेंसी ने इस सूचीबद्ध आतंकवादी के खिलाफ अपना पहला मामला दर्ज किया था। वह धमकियों और डराने-धमकाने की रणनीति के जरिए पंजाब और देश में अन्य जगहों पर भय और आतंक फैलाने की कोशिश कर रहा है। विशेष एनआईए (राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण) अदालत ने तीन फरवरी, 2021 को पन्नू के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किए गए थे और उसे बाद में घोषित अपराधी करार दिया गया था।

तेजस्वी ने अपनी जन विश्वास यात्रा पर रवाना होने से पहले नीतीश पर साधा निशाना

भाषा। पटना

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव जनता का भरोसा जीतने के खातिर अपनी जन विश्वास यात्रा की शुरुआत करने मंगलवार को पटना से मुजफ्फरपुर के लिए रवाना होने से पहले प्रदेश मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के महागठबंधन से अलग होकर पुराने सहयोगी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के साथ राज्य में नई सरकार बनाने के कारण सत्ता से बाहर हो चुके यादव अपनी इस यात्रा के जरिए 11 दिन में सभी 38 जिलों को कवर करने की कोशिश करेंगे।

यादव पूर्ववर्ती महागठबंधन की सरकार में उप मुख्यमंत्री थे। अपनी 11 दिन की इस यात्रा पर रवाना होने से पहले उन्होंने पूर्जा-अर्चना की और गाय को रोटी खिलाई। इसके अलावा, यहां अपने पिता एवं राजद प्रमुख लालू प्रसाद और माता एवं पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी का आशीर्वाद लिया। अपनी पुत्री कात्यायनी को गोद में लेकर प्यार किया तथा उसके पैर को अपने माथे पर रखा। अपनी इस यात्रा पर रवाना होने के पहले यादव ने संवाददाताओं से कहा, नीतीश कुमार जी के पास राज्य के लोगों के लिए कोई दृष्टिकोण नहीं है और न ही उनके पास गठबंधन बदलने का कोई कारण था।

पूर्व उप मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी जनता के मत को अपने पैर की जूती समझते हैं, जनता उन्हें जवाब देगी। उन्होंने कहा कि आज उन्हें माता की ममता, पिता की क्षमता और अपनी पत्नी (राजश्री) के समर्थन से ताकत मिल रही है। यादव ने कहा, बिहार के लोग राजद पर अपना प्यार लुटा रहे हैं, यही कारण है कि यह लंबे समय से विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी रही है। मैं उनसे आग्रह करने जा रहा हूं कि वे हमें और भी मजबूती से समर्थन दें ताकि हम उनके लिए काम कर सकें।

इस अवसर पर राजद प्रमुख लालू प्रसाद ने तेजस्वी को आशीर्वाद देते हुए उनके बारे में कहा, पूरा आशीर्वाद है। बहुत काम किया है आगे भी करेगा। जनता जनार्दन से मेरी अपील है इसके मनोबल को बढ़ाएं ताकि वह अपना लक्ष्य हासिल कर ले। पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने कहा, नीतीश कुमार ने हमारे साथ जो किया वह अनुचित था। वह हमेशा भागते हैं। हम कभी साझेदारी नहीं तोड़ते। मुजफ्फरपुर के बाद यादव का आज ही सीतामढ़ी और शिवहर में दो और जनसभाओं को संबोधित करने का कार्यक्रम है। उनका रात्रि विश्राम मोतिहारी में होगा। यादव की इस जन विश्वास यात्रा का समापन एक मार्च को होगा।

पेज 1 का शेष

आम आदमी...

ने कहा कि 'संस्थागत तोड़फोड़' लोकतंत्र को कुचलने की कुटिल साजिश का एक सिरा मात्र है। दिल्ली के मुख्यमंत्री और आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इस 'मुश्किल समय' में लोकतंत्र को बचाया है। फैसले को ऐतिहासिक बताते हुए केजरीवाल ने कहा कि यह भारतीय राष्ट्रीय विकासात्मक समावेशी गठबंधन (इंडिया) के लिए एक बड़ी जीत है। भाजपा ने 30 जनवरी को चंडीगढ़ मेयर चुनाव में आसानी से आगे चल रहे आप-कांग्रेस गठबंधन के उम्मीदवार को हराकर जीत हासिल की थी, जब रिटर्निंग अधिकारी ने गठबंधन सहयोगियों के आठ वोटों को अवैध घोषित कर दिया था, जिसमें मतपत्रों के साथ छेड़छाड़ का आरोप लगाया गया था। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मनोज सोनकर ने मेयर पद पर अपने प्रतिद्वंद्वी के 12 वोटों के मुकाबले 16 वोट पाकर कुलदीप कुमार को हरा दिया। हालाँकि, सोनकर ने बाद में इस्तीफा दे दिया, जबकि आप के तीन पार्षद भाजपा में शामिल हो गए। शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में कहा कि 30 जनवरी को घोषित परिणाम के अनुसार, कुमार को 12 वोट मिले थे और अमान्य किए गए आठ वोटों को जोड़ने के बाद अब उनके वोटों की संख्या 20 हो गई है। पीठ ने कहा कि मसीह ने स्पष्ट रूप से इन आठ मतपत्रों पर अपना निशान लगाया था ताकि उन्हें अवैध रूप से डाला गया मानने का आधार तैयार किया जा सके। इसमें कहा गया, 'इसके अलावा, यह स्पष्ट है कि पीठासीन अधिकारी (मसीह) ने पीठासीन अधिकारी के रूप में अपनी भूमिका और क्षमता में जो किया वह गंभीर कदाचार का दोषी है।' पीठ ने कहा कि मसीह ने कुमार के पक्ष में डाले गए आठ मतपत्रों को विरूपित करने का जानबूझकर प्रयास किया था ताकि ऐसा परिणाम सुनिश्चित किया जा सके जिसमें सोनकर को निर्वाचित घोषित किया जा सके।

किसानों के...

निवेश बढ़ेगा, ग्रामीण भारत में मांग बढ़ेगी और किसानों को विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने का विश्वास भी मिलेगा, जो देश की समृद्धि की गारंटी है। पूर्व कांग्रेस प्रमुख ने कहा, जो लोग एमएसपी पर भ्रम फैला रहे हैं, वे डॉ. स्वामीनाथन और उनके सपनों का अपमान कर रहे हैं। मंगलवार को पंजाब और हरियाणा के बीच शंभू सीमा बिंदु पर पत्रकारों से बात करते हुए, किसान मजदूर मोर्चा का प्रतिनिधित्व करने वाले पंढेर ने कहा कि किसानों की तीन बड़ी मांगें हैं सभी फसलों के लिए एमएसपी पर कानूनी गारंटी, स्वामीनाथन आयोग द्वारा अनुशंसित सी2 प्लस 50 प्रतिशत फॉर्मूले का कार्यान्वयन और ऋण माफी। एक सवाल का जवाब देते हुए पंधेर ने कहा कि केंद्रीय मंत्रियों के साथ बैठक में किसानों ने प्रस्ताव दिया कि संसद का विशेष सत्र बुलाकर एमएसपी पर कानून बनाया जाए। पंधेर ने कहा, भाजपा का दावा है कि वर्तमान प्रधानमंत्री एक मजबूत प्रधानमंत्री हैं। अगर वह 80 करोड़ किसानों और खेत मजदूरों का कर्ज माफ करने की घोषणा करते हैं, तो इससे भाजपा के दावे पर मुहर लग जाएगी कि वह वास्तव में एक मजबूत प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने केंद्रीय मंत्रियों से किसानों की विभिन्न मांगों पर अपनी प्रतिक्रिया देने को कहा। 'दिल्ली चलो' मार्च पर एक सवाल का जवाब देते हुए, किसान नेता ने कहा, हमारी घोषणा (बुधवार को दिल्ली जाने की) कायम है। एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि केंद्र ने किसानों की कोई भी मांग नहीं मानी है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, पीयूष गोयल और नित्यानंद राय के साथ बैठक में किसानों ने प्रस्ताव दिया कि संसद का विशेष सत्र बुलाकर एमएसपी पर कानून बनाया जाए। पंजाब के कुछ इलाकों में इंटरनेट निलंबन के मुद्दे पर पंधेर ने कहा कि राज्य सरकार को इस पर अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए. एक अन्य किसान नेता अशोक बुलारा ने कहा कि या तो हमारी मांगें स्वीकार करें या हमें शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के लिए दिल्ली की ओर जाने की अनुमति दी जाए। सोमवार शाम को एसकेएम (गैर-राजनीतिक) नेता जगजीत सिंह दल्लेवाल ने कहा था, हमारे दो मंचों पर चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया है कि केंद्र का प्रस्ताव किसानों के हित में नहीं है और हम इसे अस्वीकार करते हैं।

महाराष्ट्र....

धनगर 3.5 प्रतिशत और घुमंतू जनजाति (डी) वंजारी 2 प्रतिशत के लिए पात्र हैं। सदन में विधेयक पेश करने के बाद मुख्यमंत्री शिंदे ने कहा कि देश के 22 राज्य 50 प्रतिशत आरक्षण का आंकड़ा पार कर चुके हैं। उन्होंने कहा, उदाहरण के लिए, तमिलनाडु राज्य में 69 प्रतिशत, हरियाणा में 67 प्रतिशत, राजस्थान में 64 प्रतिशत, बिहार में 69 प्रतिशत, गुजरात में 59 प्रतिशत और पश्चिम बंगाल में 55 प्रतिशत आरक्षण है। मैं अन्य राज्यों का भी उल्लेख कर सकता हूं। इस सत्र का उद्देश्य (मराठा) समुदाय की मदद करना है। उन्होंने कहा, हम राज्य में ओबीसी के मौजूदा कोटा को छुए बिना मराठा समुदाय को आरक्षण देना चाहते हैं। मराठा आरक्षण लाभ पाने के लिए पिछले 40 वर्षों से संघर्ष कर रहे हैं। बाद में यह विधेयक राज्य विधान परिषद में भी सर्वसम्मति से पारित हो गया। अब इसे राज्यपाल रमेश बैस के पास उनकी मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे 10 फरवरी से भूख हड़ताल पर बैठे हैं और उन्होंने मांग की थी कि इस मुद्दे पर एक विशेष सत्र बुलाया जाए। सरकार ने हाल ही में एक मसौदा अधिसूचना जारी की थी जिसमें कहा गया है कि यदि किसी मराठा व्यक्ति के पास यह दिखाने के लिए दस्तावेजी सबूत है कि वह कृषक कुनबी समुदाय से है, तो उस व्यक्ति के रक्त संबंधियों को भी कुनबी जाति प्रमाण पत्र मिलेगा।

प्रधानमंत्री...

दौरा करने से रोक दिया है। मोदी की संदेशखाली यात्रा की तैयारियां फिलहाल शुरुआती चरण में हैं क्योंकि यात्रा की सही तारीख और समय अभी तय नहीं हुआ है क्योंकि इस यात्रा में पीएम द्वारा बड़ी संख्या में परियोजनाओं का उद्घाटन भी किया जाएगा। शेख 5 जनवरी से लापता हैं जब भीड़ ने कथित राशन घोटाले के सिलसिले में उनके आवास पर छापेमारी के दौरान प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों पर हमला किया था। टीएमसी सुप्रीमो और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने ईडी और मीडिया के साथ मिलकर इलाके में घटना की पटकथा लिखने के लिए भाजपा को जिम्मेदार ठहराया है। बनर्जी ने कहा, '(संदेशखाली में) एक घटना घटी है। इसे घटित कराया गया था।

अनुच्छेद....

के स्पष्ट संदर्भ में कहा, जिन्होंने पिछले सात दशकों में राज्य पर शासन किया था। मोदी ने कहा, 'हमने वे दिन भी देखे हैं जब जम्मू-कश्मीर से केवल निराशाजनक खबरें आती थीं। बम, बंदूकें, अपहरण और अलगाववाद इसका दुर्भाग्य बन गए थे। आज, हम संतुलित और समग्र विकास वाला एक नया जम्मू-कश्मीर देख रहे हैं।' बारिश के बावजूद हजारों स्थानीय लोग रैली में शामिल हुए। अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद यह मोदी की जम्मू क्षेत्र की दूसरी यात्रा थी। इससे पहले उन्होंने अप्रैल 2022 में सांबा जिले के ग्राम पल्ली में एक सार्वजनिक रैली को संबोधित किया था। प्रधानमंत्री ने कहा कि सामाजिक न्याय का संवैधानिक वादा अंततः शरणार्थी परिवारों, वाल्मिकी समुदाय और सफाई कर्मचारियों तक पहुंचा।

सोनिया...

कांग्रेस अध्यक्ष अशोक चव्हाण सहित महाराष्ट्र के सभी छह उम्मीदवारों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। छह में से, भाजपा ने चव्हाण सहित तीन और एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और राकांपा ने एक-एक उम्मीदवार को मैदान में उतारा था। विपक्षी कांग्रेस ने एक उम्मीदवार को मैदान में उतारा था। निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए भाजपा उम्मीदवारों में चव्हाण, पूर्व विधायक मेधा कुलकर्णी और आरएसएस कार्यकर्ता अजीत गोपचड़े शामिल हैं। शिवसेना और अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार क्रमशः पूर्व कांग्रेस सांसद मिलिंद देवड़ा और प्रफुल्ल पटेल हैं। कांग्रेस ने दलित नेता चंद्रकांत हंडोरे को विपक्ष की ओर से एकमात्र उम्मीदवार बनाया था। बिहार में राज्यसभा चुनाव के लिए सभी छह उम्मीदवारों, जिनमें से तीन भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए से और कई विपक्षी इंडिया गुट से हैं, को संसद के उच्च सदन के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। विधानसभा सचिवालय ने जदयू के संजय कुमार झा के अलावा सहयोगी दल भाजपा के धर्मशीला गुप्ता और भीम सिंह को प्रमाण पत्र सौंपा। कांग्रेस के अखिलेश प्रसाद सिंह के अलावा राजद के मनोज कुमार झा और संजय यादव को भी प्रमाणपत्र सौंपा गया, जबकि कांग्रेस की राज्य इकाई के प्रमुख मनोज कुमार झा और अखिलेश प्रसाद सिंह लगातार दूसरे कार्यकाल का आनंद लेंगे।

संदेशखालि में स्थिति भयावह व पूरी तरह अराजक : शुभेंदु

भाषा। कोलकाता

कलकत्ता उच्च न्यायालय से अनुमति मिलने के बाद मंगलवार को दोपहर बाद पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के संदेशखालि पहुंचे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पश्चिम बंगाल इकाई के वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी ने संघर्षग्रस्त क्षेत्र की स्थिति को भयानक तथा अराजकता का स्पष्ट उदाहरण बताया। एक अन्य विधायक शंकर घोष के साथ पहुंचे अधिकारी ने महिलाओं सहित स्थानीय लोगों से बात की। महिलाओं ने फरार चल रहे शाहजहां शेख सहित तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के स्थानीय नेताओं द्वारा दिए गए अपने 'दर्दनाक' अनुभवों को साझा किया। भाजपा नेता नाव से कालिंदी नदी पार कर संदेशखालि पहुंचे, जहां महिलाओं सहित स्थानीय लोगों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने कहा, स्थानीय लोगों द्वारा साझा किए गए अनुभव बेहद दर्दनाक हैं। उनकी जमीनें हड़प ली गईं और महिलाओं का शोषण किया गया। सब कुछ पुलिस और प्रशासन की मदद से हुआ। स्थिति पूरी तरह से भयावह है और इलाके में अराजकता का स्पष्ट उदाहरण है। अधिकारी ने संदेशखालि में घरों का दौरा करने के साथ ही स्थानीय लोगों से बात की। वह 2007-08 में नंदीग्राम में भूमि अधिग्रहण-विरोधी आंदोलन के दिनों में तत्कालीन विपक्षी नेता ममता बनर्जी के करीबी विश्वासपात्र थे। अधिकारी 2021 के विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा में शामिल हो गए थे। पुलिस ने इससे पहले दिन में विपक्षी नेता ने निषेधाज्ञा लागू होने के आधार पर अधिकारी को संकटग्रस्त क्षेत्र में जाने से रोक दिया था। पुलिस ने कहा कि सरकार ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देते हुए एक खंडपीठ में अपील की है। उच्च न्यायालय की एकल पीठ ने ही सोमवार को पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता को क्षेत्र का दौरा करने की अनुमति दी थी। अधिकारी ने कहा, कलकत्ता उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ के आदेश का पालन करते हुए पुलिस ने अब मुझे और मेरे साथी भाजपा के विधायक शंकर घोष को संदेशखालि जाने की अनुमति दे दी है। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा उन्हें धमखाली नौका घाट तक ले जाया गया, जहां से उन्होंने संदेशखालि पहुंचने के लिए नाव से कालिंदी नदी को पार किया। उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ ने मंगलवार सुबह अधिकारी को संदेशखालि जाने की अनुमति दी। मुख्य न्यायाधीश टी.एस. शिवगणनम की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मंगलवार को एकल पीठ के आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया, जिसने अधिकारी और भाजपा के एक अन्य विधायक शंकर घोष को संदेशखालि जाने की अनुमति दी गई थी। उच्च न्यायालय ने सोमवार को भी अधिकारी को संदेशखालि जाने की अनुमति दी थी, इसके साथ ही भाजपा नेता को संकटग्रस्त क्षेत्र में कोई भी भड़काऊ भाषण नहीं देने या किसी भी तरह की कानून-व्यवस्था की स्थिति पैदा नहीं करने का भी निर्देश दिया था। पश्चिम बंगाल सरकार ने सोमवार के आदेश को चुनौती देते हुए खंडपीठ के समक्ष अपील दायर की थी। अधिकारी के दौरे पर प्रतिक्रिया देते हुए टीएमसी ने इसे माहौल खराब करने की कोशिश करार दिया। टीएमसी के प्रवक्ता कुणाल घोष ने कहा, हां, क्षेत्र से कुछ शिकायतें आई हैं, जिसमें प्रशासन और पार्टी दोनों ही उन्हें सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा इस मुद्दे को सांप्रदायिक रंग देने और माहौल खराब करने की कोशिश कर रही है। भाजपा राज्य सरकार के खिलाफ दुष्प्रचार कर रही है। संदेशखालि में बड़ी संख्या में महिलाओं ने तृणमूल कांग्रेस के कद्दावर नेता शाहजहां शेख और उनके समर्थकों पर जबरदस्ती जमीन हड़पने और यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया है।

पश्चिम बंगालः चार नाबालिगों की मौत के मामले में घटनास्थल पर पहुंचे राज्यपाल

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी. वी. आनंद बोस ने मंगलवार को उत्तर दिनाजपुर जिले के चोपड़ा में घटनास्थल का दौरा किया जहां भारत-बांग्लादेश सीमा के पास जल निकासी विस्तार के दौरान मिट्टी का एक टीला धसने से कथित तौर पर चार नाबालिगों की मौत हो गई थी। बोस ने घटनास्थल का दौरा किया और घटना की जानकारी लेने के लिए स्थानीय लोगों एवं तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के स्थानीय नेताओं से बात की। राजभवन के एक अधिकारी ने पीटीआई-भाषा से कहा कि राज्यपाल मृतक बच्चों के परिवारों से भी मुलाकात करेंगे। अधिकारी ने कहा कि बोस सोमवार रात सिलिगुड़ी के लिए ट्रेन में सवार हुए। इसके बाद वह सड़क मार्ग से चोपड़ा पहुंचे। चोपड़ा प्रखंड के चेतनगांव गांव में 12 फरवरी को खुदाई के दौरान मिट्टी धसने से उसके नीचे दब कर पांच से 12 साल की उम्र के चार बच्चों की मौत हो गई थी। निर्माण कार्य सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) द्वारा किया गया था। इस दुर्घटना ने उस वक्त राजनीतिक मोड़ ले लिया जब तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने चार नाबालिगों की मौत के लिए लापरवाही का आरोप लगाते हुए बीएसएफ को जिम्मेदार ठहराया। तृणमूल कांग्रेस ने घटना के लिए बीएसएफ को जिम्मेदार ठहराया और आरोप लगाया कि उसकी लापरवाही से चारों बच्चों की जान गई।

स्काईरूट ने अंतरिक्ष क्षेत्र में महिला इंजीनियरों के लिए कल्पना फेलोशिप शुरू की

नई दिल्ली,। स्काईरूट एयरोस्पेस ने मंगलवार को कल्पना फेलोशिप शुरू करने की घोषणा की। यह भारत का अपनी तरह का पहला फेलोशिप कार्यक्रम है जो विशेष रूप से अंतरिक्ष क्षेत्र की महिला इंजीनियरों को समर्पित है। हैदराबाद की स्टार्ट-अप कंपनी ने एक बयान में कहा कि कल्पना फेलोशिप अंतरिक्ष उद्योग में नई ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए महिला इंजीनियरों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करने, प्रोत्साहित करने और सशक्त बनाने के लिए शुरू की गई है। बयान के अनुसार, अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला की विरासत से प्रेरित फेलोशिप एक सर्वव्यापी कार्यक्रम प्रदान करती है जिसमें मासिक राशि, प्रायोगिक ज्ञान, अनुभवी पेशेवरों से मार्गदर्शन, स्काईरूट एयरोस्पेस में विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे और नवीन प्रौद्योगिकियों तक पहुंच शामिल है। वर्ष 2024 के लिए फेलोशिप पंजीकरण वर्तमान में जारी है। बयान में कहा गया कि एक साल की फेलोशिप पूरी करने वाली उत्कृष्ट अभ्यर्थियों को स्काईरूट एयरोस्पेस में पूर्णकालिक भूमिकाओं में स्थानांतरित होने का अवसर मिलेगा।

अज़ीम प्रेमजी विवि में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित

बंगलुरू। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय स्नातक कोर्सेस में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। इनमें बीएण् ऑनर्स, बी[एससी ऑनर्स और बीएससी[बीएडण् ड्युअल.डिग्री कोर्स प्रस्तुत किए जा रहे हैं। प्रवेश प्रक्रिया और उससे जुड़ी ज़रूरी तारीखें निम्नलिखित हैं ,आवेदन करने की आख़िरी तारीख़ 6 मार्च 2024 राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा 7 अप्रैल 2024 साक्षात्कार अप्रैल 2024 एडमीशन मई 2024ए क्लास की शुरुआत जुलाई 2024 हैं। ये कोर्स राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किए गए हैं। इनका मकसद सामाजिक रूप से जागरूकए चिंतनशील और स्वयं सीखने में सक्षम युवा नागरिकों को तैयार करना है। ये कोर्स चार अनिवार्य पहलुओं से मिलकर बने हैं, इन पाठ्यक्रमों में मुख्यस रूप से चार तरह के कोर्स शामिल है।

बिहार आर्थिक अपराध इकाई ने मॉनिटरिंग युनिट का गठन किया

पटना। बिहार आर्थिक अपराध इकाई (ईओयू) ने लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर एक सोशल मीडिया पेट्रोलिंग एवं निगरानी इकाई का गठन किया है। एक बयान मे इसकी जानकारी दी गई है। बिहार की आर्थिक अपराध इकाई द्वारा मंगलवार को जारी बयान के अनुसार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर संवेदनशील एवं आपत्तिजनकभड़काऊ पोस्ट की निगरानी के तहत आसन्न लोकसभा चुनाव 2024 को देखते हुए ईओयू मे एक सोशल मीडिया पेट्रोलिंग एवं निगरानी इकाई का गठन किया गया है।

शाहजहां की गिरफ्तारी न होने पर अदालत ने जताई हैरानी

भाषा। कोलकाता

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी को संकटग्रस्त संदेशखालि गांव का दौरा करने की अनुमति दे दी लेकिन साथ ही इस बात पर आश्चर्य जताया कि मुख्य आरोपी शाहजहां शेख को अब तक राज्य पुलिस ने गिरफ्तार नहीं किया है। मुख्य न्यायाधीश टी.एस. शिवगणनम की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मंगलवार को एकल पीठ के आदेश में हस्तक्षेप करने से इंकार कर दिया जिसने अधिकारी और भाजपा के एक अन्य विधायक शंकर घोष को उत्तर 24 परगना जिले के संदेखालि ब्लॉक दो के पंचायती गांव संदेशखालि जाने की अनुमति दी थी। कोलकाता से लगभग 100 किलोमीटर दूर सुंदरवन की सीमा पर नदी के किनारे स्थित संदेशखालि क्षेत्र में सत्तारूढ़ दल तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के कुछ नेताओं द्वारा महिलाओं पर यौन अत्याचार और भूमि हड़पने के आरोपों पर विरोध प्रदर्शन हो रहा है। खंडपीठ ने कहा, यह काफी आश्चर्य की बात है कि जिस व्यक्ति को इस समस्या का मूल कारण बताया जा रहा है उसे अभी भी पकड़ा नहीं जा सका है और वह कानून तोड़कर भागा हुआ है। पीठ ने कहा कि अदालत को नहीं पता कि उसे संरक्षण प्राप्त है या नहीं, तथ्य यह है कि उसे पकड़ा नहीं गया है। एकल पीठ के आदेश को चुनौती देने वाली राज्य सरकार की अपील पर सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा, इसका मतलब यह हो सकता है कि राज्य के पुलिस तंत्र के पास उसे पकड़ने के साधन नहीं हैं या (वह) राज्य पुलिस के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। एकल पीठ ने प्रशासन द्वारा संदेशखालि के कुछ इलाकों में धारा 144 लागू करने पर भी अगले आदेश तक रोक लगा दी थी। मुख्य न्यायाधीश शिवगणनम की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने कहा कि न्यायमूर्ति अपूर्व सिन्हा रॉय की एकल पीठ ने 12 फरवरी को बंदूक की नोक पर यौन उत्पीड़न और आदिवासी भूमि को जबरन छीनने के आरोपों पर स्वत: संज्ञान लिया था। खंडपीठ ने कहा था कि अदालत इस तथ्य पर न्यायिक संज्ञान ले सकती है कि प्रवर्तन निदेशालय द्वारा पांच जनवरी को संदेशखालि में उत्तर 24 परगना जिला परिषद के प्रमुख टीएमसी नेता शाहजहां शेख के परिसर की तलाशी लेने के बाद समस्या उत्पन्न हुई। इसमें कहा गया कि राज्य पुलिस शाहजहां को गिरफ्तार नहीं कर पाई है जबकि उसके खिलाफ कई मामले दर्ज किए गए हैं। उस पर आरोप है कि जब ईडी के अधिकारियों ने तलाशी अभियान चलाया तो उन पर हमला किया गया था। अदालत ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा शिविर लगाकर संदेशखालि में ग्रामीणों की भूमि को जबरन छीनने के आरोपों पर निवारण तंत्र की स्थापना प्रथम दृष्टया यह दर्शाती है कि क्षेत्र में भूमि हड़पने का काम किया गया है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा, "प्रथम दृष्टया यह आरोप स्थापित होते हैं कि कानूनी औपचारिकताओं का उल्लंघन करके आदिवासी ग्रामीणों के स्वामित्व वाली भूमि को जबरन छीन लिया गया है। पीठ ने यह देखते हुए कि प्रशासन अनावश्यक रूप से तनावपूर्ण स्थिति पैदा कर रहा है। शाहजहां को पकड़ने में असमर्थ होने के बावजूद केवल दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 लगाने का कोई असर नहीं पड़ेगा।

टीएमसी पार्षद ने ईसाइयों पर की विवादित टिप्पणी

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की निगम पार्षद अनन्या बनर्जी को ईसाई समुदाय के बारे में विवादास्पद टिप्पणी के लिए मंगलवार को उनकी पार्टी और विपक्षी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) दोनों की आलोचनाएं झेलनी पड़ी। इतना ही नही, कोलकाता के महापौर फिरहाद हकीम ने इस टिप्पणी की निंदा करते हुए उनसे स्पष्टीकरण मांगा।हकीम ने कोलकाता नगर निगम (केएमसी) में चर्चा के दौरान अनन्या बनर्जी द्वारा की गई टिप्पणियो की निंदा करते हुए इस बात पर जोर दिया कि केएमसी और तृणमूल कांग्रेस इस तरह के दृष्टिकोण से खुद को अलग करते है और इस मामले को आंतरिक रूप से निपटने के लिए कदम उठाए गए है। उन्होंने कहा, कल केएमसी बजट पर चर्चा के दौरान, पार्षद अनन्या बनर्जी ने एक विशेष समुदाय के बारे में कुछ टिप्पणी की। हम ऐसी टिप्पणियो की निंदा करते है। पार्टी उनके विचारो का समर्थन नही करती है। उनके विचारो को साझा न करें। टीएमसी की नगर निगम टीम ने उनसे स्पष्टीकरण मांगा है। अभिनय की दुनिया से राजनीति में आईं अनन्या बनर्जी की टिप्पणियो को केएमसी की कार्यवाही से हटा दिया गया है। अनन्या बनर्जी ने अपने बयान का बचाव करते हुए कहा कि अगर उनकी टिप्पणियो से किसी की धार्मिक भावनाएं आहत हुई है, तो उन्हे खेद है। भाजपा पार्षद सजल घोष ने ईसाई समुदाय के खिलाफ टिप्पणी के लिए टीएमसी और अनन्या बनर्जी की आलोचना की।

आईपीएस अधिकारी ने भाजपा कार्यकर्ताओं पर उन्हें खालिस्तानी कहने का आरोप लगाया

कोलकाता। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी को पश्चिम बंगाल में उत्तर 24 परगना जिले के अशांत संदेशखालि का दौरा करने से रोकने के लिए धमखाली में तैनात एक सिख आईपीएस अधिकारी को भाजपा कार्यकर्ताओं के एक समूह द्वारा कथित तौर पर खालिस्तानी कहा गया जिससे अधिकारी आक्रोशित हो गए। अधिकारी के साथ मौजूद भाजपा विधायक अग्निमित्र पॉल ने दावा किया कि पुलिस अधिकारी अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर रहे थे और इस आरोप को खारिज कर दिया कि भाजपा समर्थकों ने उन्हें खालिस्तानी कहा था। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा की विभाजनकारी राजनीति ने बड़ी ही निर्लज्जता के साथ संवैधानिक सीमाओं को लांघ दिया है। बनर्जी ने सिखों की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के दुस्साहसिक प्रयास की निंदा की और कहा कि उन्हें हमारे राष्ट्र के लिए उनके बलिदान और अटूट दृढ़ संकल्प के लिए सम्मान दिया जाता है। आईपीएस अधिकारी जसप्रीत सिंह अपनी टीम के साथ धमखाली में तैनात थे और उन्होंने शुभेंदु अधिकारी को कालिंदी नदी के पार स्थित संदेशखालि जाने से रोकने के लिए बैरिकेड लगाए थे। जसप्रीत सिंह को भाजपा समर्थकों के एक समूह द्वारा कथित तौर पर "खालिस्तानी" कहा गया। आईपीएस अधिकारी जसप्रीत सिंह भाजपा समर्थकों से यह कहते हुए सुने गए, सिर्फ इसलिए कि मैंने पगड़ी पहनी है, आप लोग मुझे खालिस्तानी कह रहे हैं? क्या आपने यही सीखा है? यदि कोई पुलिस अधिकारी पगड़ी पहनता है और अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाता है, तो वह आपके लिए खालिस्तानी बन जाता है? आपको शर्म आनी चाहिए। सिंह ने कहा कि वह सिर्फ अपना काम कर रहे थे। उन्होंने कहा, मैं तो बस अपना काम कर रहा हूं। क्या मैंने आपके धर्म के बारे में कुछ कहा? आप मेरे धर्म के बारे में क्यों बोल रहे हैं? बनर्जी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक वीडियो क्लिप साझा किया और कहा कि भाजपा की विभाजनकारी राजनीति ने सभी संवैधानिक सीमाएं लांघ दी हैं। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, आज भाजपा की विभाजनकारी राजनीति ने संवैधानिक सीमाओं को बड़ी ही बेशर्मी से लांघ दिया। भाजपा के अनुसार पगड़ी पहनने वाला हर व्यक्ति खालिस्तानी है।

अर्थव्यवस्था का परिदृश्य उज्ज्वल, अगले वित्त वर्ष में वृद्धि दर सात प्रतिशत से अधिक रहेगी : रिपोर्ट

नई दिल्ली। भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य उज्ज्वल नजर आ रहा है और अगले वित्त वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर सात प्रतिशत रहने की संभावना है। वित्त मंत्रालय की एक रिपोर्ट में मंगलवार को यह बात कही गई है। रिपोर्ट में कहा गया कि देश को भू-राजनीतिक दबाव और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में अस्थिरता से पैदा होने वाली प्रतिकूल वैश्विक परिस्थितियों पर नजर रखने की जरूरत है। चालू वित्त वर्ष के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 7.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा संस्थान नए आपराधिक कानूनों का प्रचार करें : यूजीसी

नई दिल्ली। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने देश भर के विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों (एचईआई) को नए आपराधिक कानूनों का प्रचार करने और उनसे संबंधित गलतफहमियों को दूर करने का निर्देश दिया है। यूजीसी ने जिन गलतफहमियों का जिक्र किया है उनमें यह भी शामिल है कि नए कानून व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए खतरा हैं और उनका उद्देश्य पुलिस राज स्थापित करना है। यह भी कि इसमें देशद्रोह के प्रावधानों को देशद्रोह के तहत बरकरार रखा गया है और ए कानून पुलिस यातना का कारक बन सकता है।विश्वविद्यालयों और एचईआई को अपने संदेश में यूजीसी ने इन गलतफहमियों और सच्चाइयों का उल्लेख करते हुए एक विस्तृत पत्र भी भेजा है।यूजीसी सचिव मनीष जोशी ने कहा, उच्च शिक्षण संस्थानों से अनुरोध किया गया है कि वे भारतीय न्याय संहिता, 2023 को विस्तृत पत्र में निहित विषयों के आसपास प्रचारित करें और प्रचार सामग्री के माध्यम से प्रदर्शनी अभियान चलाएं, पर्चे वितरित करें ।और वकीलों, न्यायाधीशों, सेवारत और सेवानिवृत्त न्यायाधीशों व संस्थान के संबंधित संकाय सदस्यों के साथ संगोष्ठी और वार्ता आयोजित करें।

तेजस ने स्वदेशी विकसित डिजिटल कंप्यूटर प्रणाली के साथ सफलतापूर्वक उड़ान भरी

भाषा। नई दिल्ली

रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि स्वदेशी रूप से विकसित डिजिटल फ्लाई-बाय-वायर फ्लाइट कंट्रोल कंप्यूटर को हल्के लड़ाकू विमान तेजस में एकीकृत किया गया है जो एक "महत्वपूर्ण घटनाक्रम" है। स्वदेश निर्मित तेजस एकल इंजन वाला बहुउद्देश्ईय लड़ाकू विमान है जो उच्च खतरे वाले हवाई क्षेत्र में काम करने में सक्षम है। इसे हवाई रक्षा, समुद्री टोही और हमले की भूमिका निभाने के उद्देश्य से डिज़ाइन किया गया है। रक्षा मंत्रालय ने कहा, "तेजस एमके।ए कार्यक्रम की दिशा में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में डिजिटल फ्लाई-बाय-वायर फ्लाइट कंट्रोल कंप्यूटर (डीएफसीसी) को प्रोटोटाइप एलएसपी7 में एकीकृत किया गया और 19 फरवरी को सफलतापूर्वक उड़ान संचालन किया गया। तेजस-एमके।ए संस्करण के लिए डीएफसीसी को वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई), बेंगलुरु द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि उड़ान नियंत्रण के सभी महत्वपूर्ण मानक और प्रदर्शन संतोषजनक पाए गए। इसने कहा कि पहली उड़ान का संचालन राष्ट्रीय उड़ान परीक्षण केंद्र से संबद्ध विंग कमांडर सिद्धार्थ सिंह केएमजे (सेवानिवृत्त) ने किया। भारतीय वायुसेना पहले ही तेजस एलसीए एमके। का संचालन शुरू उकर चुकी है।

क्विक न्यूज़

संसदीय समिति ने कल्याण, सुरक्षा के लिए टीटीडी के उठाए कदमों की सराहना की

तिरुपति (आंध्र प्रदेश)। गृह मामलों की संसदीय स्थाई समिति के एक दल ने तिरुपति के विश्व प्रसिद्ध श्री वेंकटेश्वर मंदिर में तीर्थयात्रियों के कल्याण और सुरक्षा के लिए उठाए गए कदमों की मंगलवार को सराहना की।तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी)की एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि समिति के दल को उसकी दो दिवसीय यात्रा के दौरान श्री वेंकटेश्वर मंदिर के आधिकारिक संरक्षक टीटीडी द्वारा की गई विभिन्न सामाजिक-आर्थिक और धार्मिक गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई।टीटीडी के कार्यकारी अधिकारी ए वी धर्मा रेड्डी ने संसदीय समिति को 40 मिनट की दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति दी जिसके जरिए टीटीडी द्वारा उसकी स्थापना के बाद से की गई विभिन्न सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक गतिविधियों और पिछले नौ दशकों में अपनाई गई प्रगतिशील पद्धतियों के बारे में जानकारी दी गई। समिति के सदस्यों ने तीर्थयात्रियों, कर्मचारियों और पारिस्थितिकी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मंदिर निकाय द्वारा अपनाई गई प्रभावी भीड़ प्रबंधन प्रणाली, स्वच्छता एवं सुरक्षा के लिए उठाए गए कदमों और आपदा प्रबंधन योजना की सराहना की। गृह मामलों की संसदीय स्थाई समिति के सदस्यों में बिप्लब कुमार देब, नीरज शेखर, दिलीप घोष, दुलाल चंद्र गोस्वामी, राजा अमरेश्वर नाइक, सत्य पाल सिंह, निशिकांत दुबे और अन्य शामिल थे।

अकासा नौ शहरों में डिजीयात्रा कराएगा

मुंबई। भारत की तेजी से बढ़ती एयरलाइन्स अकासा एयर ने देश के नौ प्रमुख हवाई अड्डों पर डिजी यात्रा के फेशियल रिकग्निशन सिस्टम को अपनाने की पुष्टि की है। यह सिस्टम यात्रियों की चेहरे से पहचान करता है। इन शहरों में बेंगलुरु, नई दिल्ली, वाराणसी, हैदराबाद, लखनऊ, अहमदाबाद, गुवाहटी, कोलकाता और पुणे शामिल हैं। डिजीयात्रा को अपनाने से अकासा एयर की नए-नए प्रयोग करने तथा अपने यात्रियों को यात्रा का बेजोड़ अनुभव देने की प्रतिबद्धता साफझलकती है। डिजीयात्रा की यह सर्विस पूरी तरह बायोमेट्रिक-आधारित सेल्फबोर्डिंग समाधान हैए जिससे यात्री बिना किसी परेशानी के अपना सफर कर सकते हैं। टर्मिनल में प्रवेश करने से पहलेए यात्री अपने फ्लाइट विवरण के साथ सुविधाजनक रूप से अपनी आईडी और बायोमेट्रिक डेटा को यूज़रफ्रेंडली डिजीयात्रा ऐप पर रजिस्टर कर सकते हैं। जैसे ही यात्री एयरपोर्ट पर आते हैंए अत्याधुनिक बायोमेट्रिक तकनीक यात्री की पहचान कर उसे सत्यापित करती है। इससे उच्च स्तर की सुरक्षा और गोपनीयता मिलती है।

दावणगेरे तीसरी तिमाही में की शानदार कमाई

नई दिल्ली। चीनी, सस्टेनेबल पॉवर और इथेनॉल के अग्रणी खिलाड़ी दावणगेरे शुगर कंपनी लिमिटेड ने 14 फरवरी 2024 को हुई अपनी बोर्ड बैठक में 31 दिसंबर 2023 को समाप्त हुई तिमाही और नौ महीनों के लिए अपने अनऑडिटेड फाइनेंशियल रिजल्ट्स को मंजूरी दी। पिछली तिमाही की तुलना मेंए दावणगेरे शुगर कंपनी लिमिटेड ने कुल राजस्व में 190प्रतिशत की भारी वृद्धि देखी, जो वित्तीय वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही में 26.92 करोड़ से बढ़कर वित्तीय वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही में 78.31 करोड़ हो गई। इसी के साथए नेट प्रॉफिट में उल्लेखनीय 478 प्रतिशत की वृद्धि हुईए जो 0.97 करोड़ से बढ़कर 5.61 करोड़ हो गई। इसके साथ हीए कंपनी बोर्ड ने अपशिष्ट गुड़ किण्वन फर्मन्टेशन को लिक्विडिफाइड कार्बन डाइऑक्साइड और ड्राई आइस में बदलने के लिए 3 करोड़ के निवेश से सीओ2 प्लांट को चालू करने की मंजूरी दे दी। इनोवेशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के तहत कंपनी ने अपने प्रोडक्ट पोर्टफोलियो को चीनी से आगे बढ़ाकर सस्टेनेबल पॉवर और इथेनॉल सॉल्यूशन में विस्तारित किया है। वर्तमान में दावणगेरे शुगर कंपनी लिमिटेड अपने विशाल चीनी प्लांट में 6000 टीसीडी टन्स ऑफकेन क्रशड पर डेढ्ढ की क्षमता रखती है।

अमेरिका भारतीय नौसेना की भूमिका की सराहना की

नई दिल्ली। अमेरिका के उप विदेश मंत्री रिचर्ड वर्मा ने मंगलवार को कहा कि उनका देश एक सिख अलगाववादी की हत्या की कथित साजिश के मामले में भारत से संपर्क बनाए हुए है और इसकी जांच के लिए नई दिल्ली द्वारा नियुक्त उच्चस्तरीय समिति के निष्कर्षों की प्रतीक्षा है। विभिन्न भू-राजनीतिक चुनौतियों पर चर्चा करते हुए उन्होंने लाल सागर में विभिन्न वाणिज्यिक पोतों पर हूती विद्रोहियो के हमलो के मद्देनजर रणनीतिक जल क्षेत्र में भारतीय नौसेना की भूमिका की सराहना की। अमेरिका ने पिछले साल दिसंबर में दावा किया था कि उसने अमेरिकी धरती पर सिख अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या के लिए कथित रूप से एक भारतीय एजेंट द्वारा रची गई साजिश को विफल कर दिया। इन आरोपों की जांच के लिए भारत पहले ही एक जांच समिति गठित कर चुका है।भारत में अमेरिका के पूर्व राजदूत ने ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ओआरएफ) द्वारा आयोजित परिचर्चा सत्र में एक सवाल के जवाब में कहा, देखिए, हमने भारत सरकार के समक्ष अपनी चिंताओं को रखा है। एक जांच समिति इस मामले की जांच कर रही है और हम सरकार के साथ जुड़े रहेंगे एवं उनके निष्कर्षों की प्रतीक्षा करेंगे। उन्होंने इसे बहुत गंभीरता से लिया है जिसके लिए हम आभारी है। उन्होंने कहा, हम भारत द्वारा नौसेना के जरिए लाल सागर में किए जा रहे काम और उनके द्वारा प्रदान किए गए अविश्वसनीय समर्थन की सराहना करते है। भारतीय नौसेना ने पिछले कुछ हफ्तों में अरब सागर में कई वाणिज्यिक पोतों पर हुए हमलो के बाद उन्हें सहायता प्रदान की है। वर्मा ने कहा कि अमेरिका और भारत संबंध उस गति और पैमाने पर आगे बढ़ रहे है जिसके बारे में हम में से कई लोगों ने कुछ साल पहले तक अनुमान भी नही लगाया होगा। उन्होंने कहा कि क्वाड (चतुष्पक्षीय सुरक्षा संवाद) ढांचे के तहत सहयोग करने का उद्देश्य चीन को रोकना नही है और इसका मुख्य लक्ष्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति सुनिश्चित करना है। उन्होने कहा, हम जिन खतरों का सामना कर रहे है वे वास्तविक है, लेकिन हमारी सामूहिक क्षमताओं का निर्माण, सूचनाओं के आदान-प्रदान में वृद्धि और समुद्री क्षेत्र में जागरूकता और आपसी सहयोग बढ़ाकर यह सुनिश्चित होगा कि भारत पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र और उससे भी परे सुरक्षा प्रदाता बना रहेगा। उन्होंने कहा कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी एस ट्रूमैन, ड्वाइट आइजनहावर और जॉन एफ कैनेडी- ए सभी अमेरिका-भारत के बीच मजबूत संबंधो के लिए प्रतिबद्ध थे।वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि 1961 में कैनेडी ने राष्ट्रपति बनने से पहले एक सीनेटर के तौर पर कहा था कि एशिया का भाग्य भारत पर निर्भर है।

समाज के गुमनाम नायकों को किया याद

मुंबई। पेस्ट कंट्रोल की दुनिया के अग्रणी ब्रांडों में से एक मोर्टिन ने अपने मौजूदा कैम्पेन मोर्टिन की रक्षा ज्योति के तहत एक एड फिल्म पेश की है। इस एड फिल्म में समाज की सुरक्षा करने वाले लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया गया है। यह फिल्म सामुदायिक कार्यकर्ताओं के निस्वार्थ काम को सम्मान देने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करती है। ये सामुदायिक कार्यकर्ता चौबीसों घंटे काम में जुटे रहते हैं और समाज तक प्रक्षा ज्योतिष् पहुंचाते हैं और समाज को मच्छर जनित बीमारियों से बचाते हैं।बीमारी फैलाने वाले मच्छरों से सुरक्षित रहने के लिए हर परिवार कई प्रकार के पेस्ट कंट्रोल सॉल्यूशंस का इस्तेमाल करता है। लेकिन वे लोगए जो बिना थके पूरे समाज को सुरक्षित रखने के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैए वे ही अक्सर डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी बीमारियों के संपर्क में आ जाते हैं। इस कैम्पेन फिल्म के साथए मोर्टिन उन लोगों की अधिक देखभाल करने के जरूरत पर जोर देता है जो समाज की देखभाल करते हैं। उन्हें हम मोर्टिन की सुरक्षा की ढाल प्रदान करते हैं। सौरभ जैन रीजनल मार्केटिंग डायरेक्टर साउथ एशिया हाइजीनरेकिट ने कहा कि बीते कई सालों से मोर्टिन भारतीय घरों में एक विश्वसनीय पेस्ट कंट्रोल सॉल्यूशन के रूप में मौजूद रहा है। मॉर्टिन परिवारों को मच्छरों से पैदा होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। हमारी फिल्म की रिलीज के साथए हम सामाजिक कार्यकर्ताओं की सेहत और सुरक्षा पर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। ये गुमनाम नायक हमें सुरक्षित रखने के लिए दिन रात अथक परिश्रम करते रहते हैं। फिल्म का मुख्य संदेश श्उनकी रक्षा करें जो रोज हमारी रक्षा करेंश् लोगों से मोर्टिन लिक्विड वेपोराइज़र के साथ हमारे रक्षकों की सुरक्षा करने का आग्रह करता है। हमारा उद्देश्य उन्हें रोग फैलाने वाले मच्छरों से सुरक्षित रखना है।

कांग्रेस की राजनीति हिंदुओं के लिए नहीं : हिमंत विश्व शर्मा

भाष। हैदराबाद

असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने मंगलवार को कांग्रेस की आलोचना करते हुए दावा किया कि उसकी राजनीति हिंदुओं के लिए नहीं है। शर्मा लोकसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की विजय संकल्प यात्रा की शुरुआत के सिलसिले में तेलंगाना के निर्मल जिले के भैंसा में एक सार्वजनिक सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सवाल किया कि सोनिया गांधी, राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे सहित कांग्रेस के शीर्ष नेता, आमंत्रित किए जाने के बावजूद अयोध्या में राम मंदिर कार्यक्रम में क्यों शामिल नहीं हुए। उन्होंने दावा किया कि वह आयोजन राजनीतिक नहीं था। उन्होंने कांग्रेस पार्टी से सवाल किया, "आप क्यों नहीं गए? क्या आपको हिंदुओं से प्रेम नहीं है? क्या आप हमेशा रजाकारों और बाबर के साथ रहेंगे। शर्मा ने कहा कि देश रजाकारों और बाबर के साथ खड़ा नहीं होगा। उन्होंने इतिहास की ओर इशारा करते हुए यह स्पष्ट नहीं किया कि वह वर्तमान में किसका जिक्र कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस ने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की अनुमति नहीं दी। उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए दावा किया कि कांग्रेस आगामी लोकसभा चुनाव में 30 सीट भी नहीं जीत पाएगी।

नब्बे प्रतिशत जलमार्ग विकास परियोजनाएं हुईं पूरी : सर्बानंद सोनोवाल

गुवाहाटी। केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने मंगलवार को दावा किया कि पिछले 10 वर्ष में जलमार्गों के विकास के लिए शुरू की गई 90 प्रतिशत परियोजनाएं पूरी हो गई है।बंदरगाह, नौवहन एवं जलमार्ग मंत्री ने युवाओं से उन्नत जलमार्गों की संभावनाओं का लाभ उठाने का अनुरोध किया विशेषकर माल की सस्ती ढुलाई के लिए और नौवहन संबंधी अवसरों का लाभ करियर बनाने के लिए करने के मामले में। यहां भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण की 284 करोड़ रुपए की परियोजनाओं के उद्घाटन एवं शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सोनोवाल ने कहा, समयबद्धता एवं गुणवत्ता क्रियान्वयन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के राज मे सुशासन की निशानी है। बंदरगाह, नौवहन एवं जलमार्ग मंत्री ने कहा, मुझे खुशी है कि मोदी जी के पिछले 10 सालो के शासन काल मे जलमार्ग विकास के लिए शुरू की गई 90 प्रतिशत परियोजनाएं उनके कार्यकाल मे ही पूरी हो गई है। बाकी एक-दो परियोजनाएं इस साल के अंत तक पूरी हो जाएंगी। सोनोवाल ने कहा कि मोदी सरकार के तहत जलमार्गो की संभावनाओ को फिर से पता लगाया जा रहा है। उन्होने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार पर इस क्षेत्र की संभावना को तलाशने एवं उनका उपयोग करने विफल रहने का आरोप लगाया।उन्होने कहा कि जलमार्गो मे सुधार करने तथा यात्री एवं माल ढुलाई के वास्ते उसका उपयोग बढ़ाने के लिए पुराने कानूनों को संशोधित किया जा रहा है तथा नए कानून बनाए जा रहे है।उन्होंने यह भी कहा कि मालो की सस्ती ढुलाई के वास्ते जलमार्गो के बढ़ते इस्तेमाल के अलावा नौवहन गतिविधियो मे वृद्धि से इन क्षेत्रो मे रोजगार के अधिक अवसर भी सामने आए है।

अमरिंदर ने प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की, किसानों के मुद्दे पर चर्चा की

भाषा। नई दिल्ली

पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता अमरिंदर सिंह ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की और किसानों से संबंधित कई मुद्दों पर चर्चा की सिंह ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, किसानों की चिंताओं से संबंधित मुद्दों सहित पंजाब से जुड़े विषयों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के साथ विस्तृत बैठक की। दोनों की यह मुलाकात ऐसे समय हुई है जब अपनी विभिन्न मांगों को लेकर किसानों का विरोध प्रदर्शन हो रहा है। इस विरोध प्रदर्शन में ज्यादातर पंजाब के किसान हैं। दिल्ली चलो आंदोलन में भाग ले रहे किसान नेताओं ने सरकारी एजेंसियों द्वारा पांच साल तक दाल, मक्का और कपास की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर किए जाने के केंद्र के प्रस्ताव को सोमवार को खारिज करते हुए कहा कि यह किसानों के हित में नहीं है तथा उन्होंने बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी कूच करने की घोषणा की।किसानों के साथ वार्ता के बाद, तीन केंद्रीय मंत्रियों की एक समिति ने दाल, मक्का और कपास सरकारी एजेंसियों द्वारा एमएसपी पर खरीदने के लिए पांच वर्षीय समझौते का प्रस्ताव दिया था।तीन केंद्रीय मंत्रियों - पीयूष गोयल, अर्जुन मुंडा और नित्यानंद राय की समिति ने रविवार को चंडीगढ़ में चौथे दौर की वार्ता के दौरान किसानों के समक्ष यह प्रस्ताव रखा था।

भारत का गरीबी व भुखमरी से निपटने के लिए 10 लाख डॉलर का योगदान

भाषा। संयुक्त राष्ट्र

गरीबी और भूखमरी से निपटने के उद्देश्य से स्थापित किए गए एक कोष में भारत ने दस लाख अमेरिकी डॉलर का योगदान दिया है। इस कोष को भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका द्वारा स्थापित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र में भारतीय राजदूत रुचिरा कंबोज ने गरीबी और भूखमरी उन्मूलन कोष (आईबीएसए कोष) के लिए योगदान के रूप में सोमवार को संयुक्त राष्ट्र दक्षिण-दक्षिण सहयोग कार्यालय (यूएनओएसएससी) के निदेशक दिमा अल-खतीब को 10 लाख अमेरिकी डॉलर का चेक सौंपा। इस अवसर पर कंबोज ने कहा कि भारत की अध्यक्षता में हुए जी20 शिखर सम्मेलन में जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया था। इसीलिए भारत आईबीएसए कोष का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा मानना है कि इसके जरिए ग्लोबल साउथ में लाखों लोगों के जीवन पर सकारात्मक असर पड़ा है और सहयोग की भावना मजबूत हुई है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थाई मिशन द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया कि आईबीएसए (भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका) में शामिल प्रत्एक देश विकासशील देशों में परिवर्तनकारी परियोजनाओं के लिए साझेदारी और समर्थन की भावना के साथ कोष में सालाना 10 लाख डॉलर का योगदान देते हैं। इस कोष की स्थापना 2004 में की गई थी और इसका संचालन 2006 से शुरू हुआ। तब से लेकर अब तक आईबीएसए कोष में भारत की ओर से कुल मिलाकर 1.8 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक का योगदान दिया जा चुका है।

गाजा में तत्काल मानवीय संघर्षविराम की मांग वाले प्रस्ताव पर अमेरिका का वीटो

संयुक्त राष्ट्र। अमेरिका ने संकटग्रस्त गाजा पट्टी मे इजराइल-हमास युद्ध मे तत्काल मानवीय संघर्षविराम की मांग करने वाले अरब समर्थित संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव को मंगलवार को वीटो कर दिया। पंद्रह सदस्ईय सुरक्षा परिषद मे मतदान 13 के मुकाबले। रहा, जिसमे ब्रिटेन अनुपस्थित रहा। यह चार महीने से अधिक समय से जारी युद्ध को समाप्त करने के लिए व्यापक वैश्विक समर्थन को दर्शाता है। यह युद्ध दक्षिणी इजराइल पर हमास के अचानक आक्रमण के साथ शुरू हुआ था। इसमे लगभग।,200 लोग मारे गए थे और 250 अन्य को बंधक बना लिया गया था। गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, तब से, इजराइल के सैन्य हमले मे 29,000 से अधिक फलस्तीनी मारे गए है।

गाजा युद्ध पर टिप्पणी के लिए माफी नही मांगने तक ब्राजील राष्ट्रपति का स्वागत नही करेंगे: इजराइल

भाषा। यरुशलम

इजराइल के विदेश मंत्री ने सोमवार को कहा कि ब्राजील के राष्ट्रपति का उनके देश में तब तक स्वागत नहीं किया जाएगा जब तक वह उस टिप्पणी के लिए माफी नहीं मांगते जिसमें उन्होंने गाजा में जारी युद्ध की तुलना हिटलर के नरसंहार से करते हुए इजराइल पर यहूदी विरोधी हमले करने का आरोप लगाया था। इथियोपिया में अफ्रीकी संघ शिखर सम्मेलन में संवादाताओं से बात करते हुए राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा ने रविवार कहा था, गाजा पट्टी और फलस्तीनी लोगों के साथ जो हो रहा है वह इतिहास में कभी नहीं देखा गया। ऐसा तब हुआ था जब हिटलर ने यहूदियों के नरसंहार का फैसला लिया था। इजराइल के विदेश मंत्री काट्ज ने सोमवार को यरुशलम में ब्राजील के राजदूत को तलब किया।काट्ज ने कहा, लूला ने हिटलर द्वारा की गई यहूदियों की हत्या और नरसंहार की तुलना हमास के खिलाफ इजराइल के युद्ध की, जो कि शर्मनाक और अस्वीकार्य है। लूला की टिप्पणियों पर इजराइल की प्रतिक्रिया के बाद, ब्राजील ने सोमवार को इजराइल में देश के राजदूत फ्रेडरिको मेयर को परामर्श के लिए वापस बुला लिया।

क्विक न्यूज

किनमेन के पास चीन के एक पर्यटक नौका को रोकने पर ताइवान ने विरोध जताया

ताइपे। किनमेन द्वीपसमूह के पास चीन द्वारा एक पर्यटक नौका को रोके जाने पर ताइवान ने मंगलवार को विरोध जताया जिससे द्वीप में तनाव बढ़ गया है। किनमेन द्वीप चीन के तट से कुछ ही दूरी पर है, लेकिन इस पर ताइवान का नियंत्रण है। ताइवान के मीडिया की खबरों में बताया गया कि 11 चालक दल और 23 यात्रियों को ले जा रही नौका किंग किया को चीनी तट रक्षक ने सोमवार को लगभग 32 मिनट तक रोके रखा। बाद में ताइवान के तट रक्षक नौका को वापस किनमेन ले आए। ओशन अफेयर काउंसिल मंत्री कुआन बी लिंग ने मंगलवार को संवाददाताओं से कहा कि इस घटना ने हमारे लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाई, लोगों में दहशत पैदा हो गई। प्रधानमंत्री चेन चिएन-जेन ने कहा कि जनवरी में ताइवान में आयोजित हुए राष्ट्रपति के चुनाव के बाद से चीन की सैन्य गतिविधियों के कारण क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है और ताइवान इसे कम करने की कोशिश कर रहा है। वर्ष 1949 के गृह युद्ध के दौरान ताइवान चीन से अलग हो गया था, लेकिन बीजिंग दो करोड़ से अधिक की आबादी वाले इस द्वीप को अपना क्षेत्र मानता है और सैन्य बल के जरिए इसे अपने नियंत्रण में करने की धमकी देता रहा है।

सिखों को मुसलमान समझने की भूल संबंधी पोस्ट को लेकर बर्मिंघम विश्वविद्यालय ने मांगी माफी

लंदन। बर्मिंघम विश्वविद्यालय ने एक विवादास्पद सोशल मीडिया पोस्ट को हटाते हुए माफी मांगी है। इस पोस्ट में ऐसा लग रहा था कि सिख विद्यार्थियों को मुसलमान समझने की भूल हुई है। बर्मिंघम मेल की खबर के अनुसार, विश्वविद्यालय द्वारा किए गए पोस्ट में कहा गया था कि इस माह के प्रारंभ में विश्वविद्यालय की सिख सोसाइटी द्वारा आयोजित 20वां लंगर ऑन कैंपस कार्यक्रम इस्लामिक जागरूकता सप्ताह का हिस्सा था। विश्वविद्यालय के इंस्टाग्राम एकाउंट पर एक पोस्ट में लंगर की तस्वीरें टैग की गईं और उसके साथ डिस्कवर इस्लाम वीक लिखा गया। सिख प्रेस एसोसिएशन के प्रवक्ता जसवीर सिंह ने कहा, यह देखकर न केवल निराशा, बल्कि आश्चर्य भी हुआ है कि जिन लोगों पर बर्मिंघम विश्वविद्यालय की छवि का जिम्मा है, वे विश्वविद्यालय में समुदायों को लेकर अनभिज्ञ हैं। एसोसिएशन ने ही अपने सोशल मीडिया मंचों पर विश्वविद्यालय की इस गलती को प्रमुखता से उजागर किया। सिंह ने कहा, यह स्पष्टतः विश्वविद्यालय कर्मियों को दिए जा रहे प्रशिक्षण एवं शिक्षण का मुद्दा है। सिख दशकों से बर्मिंघम विश्वविद्यालय समुदाय का एक अहम हिस्सा रहे हैं। कई लोगों ने सोशल मीडिया पर विश्वविद्यालय के इस गलती को लापरवाही एवं अविश्वसनीय बताया।

कॉकपिट में जलने की गंध आने के बाद न्यूयॉर्क जा रहे विमान को टोरंटो वापस लौटना पड़ा

टोरंटो। टोरंटो से न्यूयॉर्क सिटी जा रहे विमान को इस महीने की शुरुआत में वापस लौटना पड़ा क्योंकि विमान के कॉकपिट में कुछ जलने जैसी गंध आने लगी थी। कनाडा के परिवहन सुरक्षा बोर्ड ने बताया कि एंडेवर एयर की उड़ान संख्या 48263 ने तीन फरवरी की सुबह टोरंटो पीयर्सन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से न्यूयॉर्क के जेएफके हवाई अड्डे के लिए उड़ान भरी थी, लेकिन उसी दौरान विमान के चालक दल ने आपातकालीन स्थिति की घोषणा की। सुरक्षा बोर्ड ने कहा कि दो इंजन वाले बॉम्बार्डियर विमान का चालक दल जब यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि गंध कहां से आ रही है, तभी कैप्टन की ओर लगे विंडशील्ड हीट नियंत्रण इकाई से चिंगारी और आग की लपटें निकलती दिखीं। उन्होंने फौरन ऑक्सीजन मास्क लगाए और आपातकालीन स्थिति की घोषणा की। इसके बाद उन्होंने विमान को वापस टोरंटो लेकर आने की इजाजत मांगी। विमान बिना किसी नुकसान के हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतर गया। सुरक्षा बोर्ड ने बताया कि जब विमान के क्रू ने विंडशील्ड हीटर को बंद कर दिया तो उसमें से चिंगारी और आग की लपटें बंद हो गईं। विमान में 74 लोग सवार थे। हालांकि, किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। एंडेवर एयर का स्वामित्व रखने वाली डेल्टा एयर लाइन्स के प्रवक्ता ने सोमवार को कहा कि तकनीशियनों ने बाद में विमान की विंडशील्ड और विंडशील्ड हीटिंग यूनिट को बदल दिया।

पेप्सिको वैश्विक विकास को कृषि में लैंगिक समावेशन को देगा बढ़ावा मनाया जशन

यूएस। पेप्सिको आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने के लिए महिलाओं में निवेश एक वैश्विक विकास गठबंधन-जीडीए के साथ कृषि में लैंगिक समावेशन को आगे बढ़ा रही है। यूनाइटेड स्टेट एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट यूएसएआईडी के सहयोग से 2020 में शुरू की गई यह पंचवर्षीय दो करोड़ अमेरिकी डॉलर वाली साझेदारी वर्तमान में भारत सहित पांच देशों में क्रियान्वित की जा रही है। भारत म एक सोर्सिंग क्षेत्र के रूप में यूपी पेप्सिको के लिए एक रणनीतिक स्थान रखता है, यहां कंपनी के कई प्रतिष्ठित खाद्य और पेय उत्पादों का उत्पादन किया जाता है जिसमें आलू का महत्वपूर्ण योगदान है। आगरा, अलीगढ़, हाथरस, एटा, रायबरेली और फतेहपुर जिलों में 11 जेंडर स्मार्ट डेमो फार्म की स्थापना इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है। जेंडर स्मार्ट फार्म्स-जीएसएफने न केवल नवाचार का प्रदर्शन किया हैए बल्कि 2023 फसल वर्ष में पेप्सिको को 171 टन आलू की आपूर्ति भी की हैए जो बेसलाइन की तुलना में 28 टन की शुद्ध वृद्धि दर्शाता है। कार्यक्रम के बारे में बोलते हुए अनुकूल जोशी डायरेक्टरए एग्रोपेप्सिको इंडिया ने कहा कि जीडीए के माध्यम से पेप्सिको और यूएसएआईडी का सहयोग आलू आपूर्ति श्रृंखला में लैंगिक समानताए महिलाओं की आर्थिक स्थिति और कृषि उत्पादकता को बढ़ाने पर केंद्रित है। कृषि में महिलाएं एक महत्वपूर्ण श्रमबल हैं सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ उनकी क्षमता और ज्ञान को बढ़ाने से स्थिरता और पेप् लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलेगी।

विश्वप्रसिद्ध एक्स सीरीज़ से लोग होंगे रुबरु

हालीवुड। ऑनर ने अपने पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए अपनी विश्वप्रसिद्ध एक्स सीरीज़ में ऑनर एक्स9बी का लॉन्च किया। इस लॉन्च द्वारा ऑनर का उद्देश्य ग्राहकों को हर विशेषता में कुछ एक्स्ट्रा जैसे अतुलनीय डिस्प्ले क्वालिटी, बेहतर बैटरी और ऑप्टिमाईज़्ड सॉफ्टवेयर परफॉर्मेंस प्रदान करना है, जो विभिन्न ग्राहकों की जरूरतों को पूरा कर सकें।ऑनर एक्स9बी 5जी के अलावाए ब्रांड ने बेहतर ऑडियो के लिए ऑनर चॉईस एक्स5, और फिटनेस ट्रैकिंग के लिए ऑनर हेल्थ ऐप के साथ ऑनर चॉईस स्मार्टवॉच के लॉन्च की भी घोषणा कीए ताकि भारत में एक कनेक्टेड ईकोसिस्टम पेश किया जा सके। ऑनर एक्स9बी में ऑनर अल्ट्रा.बाउंस एंटी ड्रॉप 360 डिग्री डिस्प्ले ह, जो बेजोड़ ड्यूरेबिलिटी और स्थिरता प्रदान करता है। इस फोन के चारों ओर एयरबैग कुशनिंग टेक्नोलॉजी और इनोवेटिव शॉक.एब्ज़ॉर्बिंग संरचना 1.5 मीटर तक की ऊँचाई से गिरने पर भी इसे बेहतरीन सुरक्षा प्रदान करती है। यह फोन सभी चार कोनों और छः सतहों पर 360 डिग्री सुरक्षा की गारंटी देता हैए और मार्बल जैसी कठोर सतहों पर भी सुरक्षित रहता है। इस स्मार्टफोन में प्रीमियम स्लीक डिज़ाईन में 5800एमएएच की एक्स्ट्रा ड्यूरेबल बैटरी लगी हैए ताकि यूज़र्स बैटरी की पॉवर की फिक्र किए बगैर पूरे दिन अपने फोन का उपयोग कर सकें।

एयर एशिया बेस से लोगों को जोड़ेगा

बैंकॉक । एयर एशिया ने भारत के कई शहरों से कुआलालम्पुर, बैंकॉक एवं कई अन्य गंतव्यों के लिए आईएनआर0' बेस फेयर सीट्स के साथ अपने बिग सेल कैंपेन का लॉन्च किया है। अब आप विशाखापटनम, जयपुर, त्रिवेन्द्रम, अहमदाबाद सहित कई शहरों से मलेशिया. कुआलालम्पुर की उड़ान लेकर इस बेहतरीन गंतव्य का अनुभव पा सकते हैं। और अगर आप बैंकॉक जाना चाहते है, तो भी एयर एशिया ने आपको कवर किया है। आप सीट के लिए नो कोस्ट' पर सीधे लखनऊ, गुवाहाटी से उड़ान ले सकते हैं। कंपनी कुआलालम्पर से मलेशिया के सैंकड़ों गंतव्यों के लिए भी आईएनआर0' सीट्स का ऑफर लेकर आई हैए तो अब लैंगकावी के समुद्रतटीय द्वीपों, कोटा किनाबालु के पहाड़ों और खूबसूरत बाली की यात्रा का यादगार अनुभव पाने के लिए तैयार हो। एयरलाईन किफ़ायती एवं सुलभ फ्लाई, विकल्प भी लेकर आई है, जहां भारत से मलेशिया जाने वाले मेहमान कनेक्टिंग हब कुआलालम्पुर होते हुए 22 देशों के 130 से अधिक गंतव्यों के लिए एयर एशिया की उड़ान ले सकते हैं। एयर एशिया के चीफ़ एक्ज़िक्टिव ऑफिसर बो लिंगम ने कहा कि पीपल्स एयरलाईन बनने के दृष्टिकोण के साथ हम अपने व्यापक नेटवर्क के माध्यम से मेहमानों को उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करते रहे हैं। हम हमेशा से अपने सिगनेचर बिग सेल कैंपेन के साथ वैल्यू.एडेड डील्स लेकर आते हैं।

ब्रेव वीरता और बलिदान की कहानी कहेगा

अमेजन। अमेज़ॅन की मुफ्त वीडियो स्ट्रीमिंग सेवा अपनी आगामी श्रृंखला रक्षक,इंडियाज़ ब्रेव्सरू चैप्टर 2 के साथ दर्शकों की देशभक्ति की भावना को जगाने के लिए पूरी तरह तैयार है। दर्शकों को ऑपरेशन कुलगाम ् की याद दिलाते हुएए स्ट्रीमिंग सेवा ने आज श्रृंखला का भावनात्मक रूप से रोमांचित ट्रेलर जारी किया। मनोरंजक कथा सच्ची घटनाओं पर आधारित है जो नायब सूबेदार सोमबीर सिंह और डीवाईएसपी अमन ठाकुर की वीरता को श्रद्धांजलि अर्पित करती है, जिन्होंने सेना के काफिले पर दुर्भाग्यपूर्ण पुलवामा हमले के कुछ दिनों बाद कुलगाम जिले में, श्रेणी के आतंकवादियों के साथ करीबी लड़ाई में अपनी जान दे दी। जगरनॉट स्टूडियो द्वारा निर्मित और बरुण सोबतीए सुरभि चंदना और विश्वास किनी की प्रमुख भूमिकाओं में शामिल हैं, रक्षक. इंडियाज़ ब्रेव्सरू चैप्टर-2 का प्रीमियर 22 फरवरी से अमेज़ॅन मिनीटीवी पर मुफ्त में किया जाएगा। राष्ट्रभक्ति के जोश से भरपूर, ट्रेलर कुलगाम ऑपरेशन की साहसी और वीर गाथा में एक झलक प्रस्तुत करता है, जिसमें उच्च-संघर्ष युद्ध दृश्य, वास्तविक क्रिया, मोहक सिनेमेटोग्राफी और गुणवत्ता वाले पात्र शामिल हैं। सीरीज के बारे में बात करते हुए बरुन सोबती जो नायब सूबेदार सोमबीर सिंह की भूमिका निभा रहे हैं ने साझा किया मैं अमेज़ॅन मिनीटीवी पर रक्षक. इंडियाज ब्रेव्सरू चैप्टर 2 का हिस्सा बनकर बेहद सम्मानित महसूस कर रहा हूं।

नेपाल के बीरगंज में दो समूहों के बीच झड़प के बाद कर्फ्यू लगाया गया

काठमांडू। नेपाल के बीरगंज शहर के कुछ इलाको में दो समुदायो के बीच झड़पें होने के बाद सोमवार को अनिश्चितकालीन कर्फ्यू लगा दिया गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। परसा जिले के मुख्य जिला अधिकारी दिनेश सागर भुशाल ने एक बयान मे कहा कि बीरगंज शहर के कुछ हिस्सो मे सोमवार शाम कर्फ्यू लगा दिया गया क्योंकि दो समूहो के बीच हुई झड़पों के चलते लोगो की जान को खतरा हो सकता है।अधिकारियो ने बताया कि चार दिन पहले, रौतहट जिले में दो समूहो के बीच उस वक्त झड़प हो गई थी, जब हिंदू समुदाय के कुछ लोग सरस्वती पूजा के बाद प्रतिमा के विसर्जन के लिए शोभायात्रा निकाल रहे थे। दोनों समूहों ने एक-दूसरे पर पथराव किया। घटना के बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गई, जिसके कारण अधिकारियो को कर्फ्यू लगाना पड़ा।

इंडिया इंटरनेशनल ईवी शो के चौथे संस्करण का आयोजन

नई दिल्ली। आगामी इंडिया इंटरनेशनल ईवी शो 2024 आईईवी शो का दिल्ली में एक बड़ा आयोजन होने जा रहा ह। इस प्रतिष्ठित प्रदर्शनी का आयोजन 15 से 17 मार्च 2024 इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपो सेंटर -आईआईसी, द्वारका, में किया जायेगा। भारत के सबसे बड़े इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग के सम्मेलन के रूप में पहचाने जाने वाले इस कार्यक्रम में इंजीनियरोंए मैकेनिकों, वैज्ञानिकों और निर्णयकर्ताओं को एक साथ आने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। प्रदर्शनी का आयोजन फ्युचरेक्स ग्रुप द्वारा इंडस्ट्री एसोसिएशन पार्टनर के रूप में सोसाइटी ऑफ मैन्युफैक्चरर्स ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल-एसएमईवी के साथ मिलकर किया गया है। इस कार्यक्रम को फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन फाडा-ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया एआरएआई इंटरनेशनल सेंटर फॉर ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी आईसीएटी- इंडिया एनर्जी स्टोरेज अलायंस-आईईएसए आईपीसी इंटरनेशनल इंक और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी फाइनेंशियर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया - ईएमएफआई का समर्थन प्राप्त है।

अंतरिक्ष हथियार खतरा पैदा करते हैं

पोर्ट्समाउथ (यूके)। एक ऐसे हफ्ते में जब वाशिंगटन में राष्ट्रीय सुरक्षा केंद्र में आ गई है, व्हाइट हाउस ने गुरुवार को पुष्टि की कि उसके पास सबूत है कि रूस अंतरिक्ष-आधारित परमाणु उपग्रह विरोधी हथियार विकसित कर रहा है।राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने संवाददाताओं को बताया कि व्हाइट हाउस का मानना है कि रूस का कार्यक्रम 'परेशान करने वालो है।

पाकिस्तान में नई सरकार के गठन में गतिरोध के संकेत : बिलावल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) अध्यक्ष बिलावल भुट्टो-जरदारी ने मंगलवार को कहा कि यदि कोई अपना रुख बदलने के लिए तैयार नहीं है तो उन्हें पाकिस्तान में गठबंधन सरकार बनने में गतिरोध की आशंका है, जो देश के राजनीतिक परिदृश्य में गहराती दरार का संकेत देता है। बिलावल की यह टिप्पणी पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के शीर्ष नेताओं के बीच सोमवार को हुई नवीनतम दौर की बातचीत बेनतीजा समाप्त होने के एक दिन बाद आई है। आठ फरवरी के चुनाव में खंडित जनादेश के बाद केंद्र में गठबंधन सरकार बनाने के लिए दोनों पक्षों के बीच सत्ता-साझा करने के मुद्दे पर अभी तक आम सहमति नहीं बन पाई है। पीपीपी पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की पीएमएल-एन को समर्थन देने के लिए राष्ट्रपति, सीनेट का अध्यक्ष और नेशनल असेंबली के अध्यक्ष जैसे प्रमुख संवैधानिक पदों की कथित तौर पर मांग कर रही है। डॉन अखबार की खबर के अनुसार, बिलावल ने उच्चतम न्यायालय में पत्रकारों से कहा कि पीपीपी और वह अपने रुख पर अड़े हुए हैं और इस बात पर जोर दिया वह इसे किसी भी कीमत पर नहीं बदलेंगे।उन्होंने कहा, अगर कोई और अपना रुख बदलना चाहता है, तो प्रगति हो सकती है। यदि वे इसे बदलने के लिए तैयार नहीं हैं, तो मुझे गतिरोध की आशंका है। उन्होंने कहा कि इससे लोकतंत्र या संसदीय प्रणाली को कोई लाभ नहीं होगा।पूर्व विदेश मंत्री बिलावल (35) ने कहा, अगर मैं पीएमएल-एन को वोट दूंगा तो मैं वह अपनी शर्तों पर दूंगा। वहीं, पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की पार्टी ने 2018 के आम चुनाव को पाकिस्तान के इतिहास में एक काला अध्याय करार देते हुए कहा कि देश का चुनावी इतिहास सही नहीं रहा है और धांधली और हेरफेर के आरोपों के बीच यह स्थिति कई दशकों से बनी हुई है।पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के सीनेटर इरफान सिद्दीकी ने संसद के ऊपरी सदन में कहा, 2018 में, नवाज शरीफ जेल में थे, उन्हें चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी गई। क्या तब यह उचित था? और उस समय कोई हंगामा नहीं हुआ था। देश के सबसे शक्तिशाली राजनीतिक परिवार और पीएमएल-एन का नेतृत्व करने वाले शरीफ को 2017 में उच्चतम न्यायालय ने सार्वजनिक पद संभालने से अयोग्य घोषित कर दिया था और जवाबदेही अदालत ने उन्हें 10 साल जेल की सजा भी सुनाई थी। दोषसिद्धि और सजा के कारण वह आम चुनाव नहीं लड़ सके।सिद्दीकी ने सीनेट में कहा कि यह सच है कि पाकिस्तान का चुनावी इतिहास सही नहीं रहा है और यह स्थिति कई दशकों से बनी हुई है।उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई किसी भी सरकार को अपना कार्यकाल पूरा नहीं करने दिया गया। उन्होंने कहा कि हमारे चुनावों का इतिहास वास्तव में सबसे अच्छा नहीं है। लेकिन हम 2018 के चुनावों के बारे में बात क्यों नहीं कर रहे हैं? उन्होंने कहा, 2018 के आम चुनावों में जो कुछ भी हुआ वह हमारे देश के इतिहास में एक काला अध्याय है। तब बहुत कुछ हुआ था और शायद इस साल भी वही हुआ। और अगर वही दोबारा हुआ, तो यह पूरे देश में हुआ, सिर्फ पंजाब या बलूचिस्तान में नहीं। यह खैबर पख्तूनख्वा में भी हुआ।वर्ष 2018 के आम चुनाव में इमरान खान की पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और अन्य पार्टियों के समर्थन से केंद्र में सरकार बनाई।

इमरान की बहन ने बुशरा बीबी के मेडिकल परीक्षण के लिए अदालत में याचिका दायर की

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की बहन ने इस्लामाबाद उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर कर खान की पत्नी बुशरा बीबी का मेडिकल परीक्षण कराए जाने की अपील की है। बुशरा बीबी को उनके पति के घर में कैद रखा गया है जबकि इमरान रावलपिंडी की अडियाला जेल मे बंद है। खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में आरोप लगाया है कि बुशरा बीबी को एक सप्ताह पहले रसायन युक्त भोजन दिया गया था, जिससे उनके गले और पेट मे जलन महसूस हो रही है। जेल मे बंद इमरान खान की पार्टी ने सोमवार को दावा किया कि 49 वर्षीय बुशरा बीबी अस्वस्थ हैं और वह खाना नही खा पा रही हैं। पार्टी ने यह भी कहा कि अधिकारी उन्हे उपचार मुहैया नही करा रहे है। खान की बहन उज्मा खान ने अदालत मे याचिका दायर कर अनुरोध किया कि शौकत खानम मेमोरियल अस्पताल के चिकित्सा निदेशक डॉ असीम यूसुफ को जेल के डॉक्टर की उपस्थिति में बुशरा बीबी की मेडिकल जांच करने की अनुमति दी जाए। शौकत खानम मेमोरियल अस्पताल इमरान खान द्वारा स्थापित एक धर्मार्थ संगठन द्वारा चलाया जाता है। पार्टी ने अदालत मे दायर याचिका की तस्वीरें भी साझा की। पिछले हफ्ते इमरान की पार्टी ने बुशरा बीबी के स्वास्थ्य को लेकर चिंता जताते हुए दावा किया था कि उनकी जान को गंभीर खतरा है। पिछले महीने, तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले मे जवाबदेही अदालत द्वारा दंपति को 14 साल जेल की सजा सुनाए जाने के बाद से बुशरा बीबी जेल मे है।

नवलनी की पत्नी ने पुतिन के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखने का संकल्प लिया

भाषा। मॉस्को

रूस में प्रमुख विपक्षी नेता रहे एलेक्सी नवलनी की पत्नी ने देश के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखने का सोमवार को संकल्प लिया। इस बीच, नवलनी की मां ल्यूदमिला नवलन्या को आर्कटिक पीनल कॉलोनी में स्थित मुर्दाघर नहीं जाने दिया गया। बताया जा रहा है कि वहां उनके बेटे का शव रखा हुआ है। यूलिया नवलन्या ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में पुतिन पर जेल में बंद उनके पति की हत्या करने का आरोप लगाया और कहा कि अधिकारियों द्वारा नवलनी के शव को सौंपने से इनकार करना इसी सच को छुपाने के लिए उठाया गया कदम है। नवलनी की प्रवक्ता किरा यार्मिश ने कहा कि देश में अपराधों की जांच करने वाली शीर्ष एजेंसी इन्वेस्टिगेटिव कमेटी ने ल्यूदमिला नवलन्या को बताया है कि उनके बेटे की मौत का कारण पता नहीं चला है और अधिकारी जांच कर रहे हैं। यार्मिश ने कहा कि नवलनी की 69 वर्षीय मां और उनके वकीलों को सोमवार सुबह सालेकहार्ड के मुर्दाघर में जाने की अनुमति नहीं दी गई। यार्मिश ने कहा कि जब उन्होंने पूछा कि क्या शव वहां है तो कर्मचारियों ने कोई जवाब नहीं दिया। नवलनी (47) की 16 फरवरी को जेल में मौत हो गई थी। नवलनी को भ्रष्टाचार और रूस सरकार खिलाफ व्यापक विरोध-प्रदर्शनों के लिए जाना जाता था।यूलिया नवलन्या ने पुतिन पर निशाना साधते हुए कहा, वे कायर हैं और शव को छिपा रहे हैं, उनका शव उनकी मां को देने से इनकार कर रहे हैं, सरासर झूठ बोल रहे हैं और जहर दिए जाने के सबूत मिटने का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने रूसियों से उनके साथ खड़े होने का आग्रह किया।

पुतिन मेरे बेटे का शव सौंपें: नवलनी की मां ने अपील की

मॉस्को। रूस के विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी की मां ने मंगलवार को राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से हस्तक्षेप करने और उनके बेटे का शव उन्हें सौंपने की अपील की। ल्यूडमिला नवलनाया एक वीडियो में उस आर्कटिक क्षेत्र में दिखाई दी जहां नवलनी की मौत हुई थी। वह शनिवार से अपना बेटे का शव प्राप्त करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने वीडियो में कहा, पांचवे दिन भी मै अपने बेटे का शव नही देख पाई हूं। वे मुझे यह भी नही बता रहे कि उसे कहां रखा गया है। नवलनी की टीम द्वारा सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए वीडियो मे नवलनाया ने कहा, व्लादिमीर पुतिन मै आपसे अपील करती हूं। इस मामले का समाधान केवल आप कर सकते है। मुझे अपने बेटे का शव देखने दें। मेरी मांग है कि शव तत्काल मुझे दिया जाए, ताकि मै उसे सम्मान के साथ दफना सकूं। उनकी टीम के सदस्यों के अनुसार, रूसी अधिकारियों ने कहा है कि नवलनी की मौत का कारण अभी भी अज्ञात है और प्रारंभिक जांच जारी रहने के कारण अगले दो सप्ताह तक शव नही दिया जा सकता।

नवलनी की मौत का मामला : अमेरिका ने रूस पर व्यापक प्रतिबंध का संकल्प जताया

वाशिंगटन। व्हाइट हाउस ने मंगलवार को कहा कि विपक्षी नेता एलेक्स नवलनी की मौत के मामले को लेकर वह रूस पर अतिरिक्त व्यापक प्रतिबंध लगाने की योजना बना रहा है। अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने कहा कि आगामी शुक्रवार को रूस पर अतिरिक्त प्रतिबंधों की घोषणा की जा सकती है। हालांकि, उन्होंने इस बारे में अधिक विवरण साझा नहीं किया कि ए प्रतिबंध किस प्रकार के होंगे। अमेरिका और इसके सहयोगी देशों ने रूस के यूक्रेन पर हमला करने के बाद मॉस्को पर कई तरह के प्रतिबंध लगाए हैं। किर्बी ने कहा कि अमेरिका को नहीं पता कि नवलनी की मृत्यु कैसे हुई, लेकिन अंतिम जिम्मेदारी रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की ही है। वहीं, रूस के विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी की मां ल्यूडमिला नवलनाया ने मंगलवार को राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से हस्तक्षेप करने और उनके बेटे का शव उन्हें सौंपने की अपील की।

पुतिन ने किम जोंग उन को रूस निर्मित कार भेंट की

भाषा। सियोल

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपने विशेष संबंधों को प्रदर्शित करते हुए उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन को निजी इस्तेमाल के लिए रूस में निर्मित कार उपहार में दी है। उत्तर कोरिया के सरकारी मीडिया ने मंगलवार को यह जानकारी दी। खबर में यह नहीं बताया गया कि यह किस प्रकार की कार है या इसे कैसे भेजा गया था। पर्यवेक्षकों ने हालांकि कहा कि यह संयुक्त राष्ट्र के उस प्रस्ताव का उल्लंघन हो सकता है जो देश पर परमाणु हथियार छोड़ने के लिए दबाव बनाने के प्रयास में उत्तर कोरिया को विलासिता की वस्तुओं की आपूर्ति पर प्रतिबंध लगाता है।

कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी ने कहा कि किम की बहन किम यो जोंग और एक अन्य उत्तर कोरियाई अधिकारी ने रविवार को उपहार स्वीकार किया और उन्होंने पुतिन को अपने भाई की तरफ से धन्यवाद दिया। खबर में कहा गया है कि किम यो जोंग ने कहा कि यह उपहार नेताओं के बीच विशेष व्यक्तिगत संबंध को दर्शाता है।पिछले सितंबर में पुतिन के साथ शिखर वार्ता के लिए किम की रूस यात्रा के बाद से उत्तर कोरिया और रूस ने अपने सहयोग को काफी बढ़ाया है। किम की रूस के मुख्य अंतरिक्ष केंद्र की यात्रा के दौरान पुतिन ने उत्तर कोरियाई नेता को अपनी निजी ऑरस सीनेट लिमोजिन दिखाई और किम उसकी पिछली सीट पर बैठे थे। रूस की सरकारी समाचार एजेंसी तास के अनुसार, ऑरस पहला रूसी लक्जरी कार ब्रांड था और इसका उपयोग पुतिन सहित शीर्ष अधिकारियों के वाहनों के काफिले में किया जाता है। पुतिन के काफिले में 2018 से इसका इस्तेमाल हो रहा है।

मिट्टी में पोटेशियम कमी, वैश्विक खाद्य सुरक्षा को खतरा

● नए अध्ययन ने सुझाया रास्ता

भाषा। लंदन

दुनिया भर की मिट्टी में पोटेशियम की कमी हो रही है, जो पौधों के विकास के लिए आवश्यक एक प्रमुख पोषक तत्व है। इसका अंततः मतलब यह है कि हम सभी के लिए पर्याप्त भोजन उगाने में सक्षम नहीं रह जाएंगे। लेकिन अभी भी देर नहीं हुई है: हमने अभी छह चीजों की पहचान करते हुए शोध प्रकाशित किया है जो हमें पोटैशियम आपूर्ति और खाद्य उत्पादन की सुरक्षा के लिए करना चाहिए। पौधों की वृद्धि के लिए नाइट्रोजन और फास्फोरस के साथ-साथ पोटैशियम की भी आवश्यकता होती है (लैटिन में इसे कलियम के रूप में जाना जाता है, एनपीके उर्वरकों में पोटैशियम के है)। जबकि नाइट्रोजन और फास्फोरस से जुड़े पहलू व्यापक रूप से ज्ञात हैं, पोटैशियम इस मामले में पीछे रहता है। फिर भी दुनिया भर में लगभग 20 प्रतिशत कृषि मिट्टी पोटेशियम की कमी से जूझ रही है, खासकर पूर्वी एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, लैटिन अमेरिका और उप-सहारा अफ्रीका में। वैश्विक स्तर पर, खेतों में उर्वरकों के रूप में मिलाए जाने की तुलना में अधिक पोटैशियम फसल में निकाला जा रहा है – पोटैशियम की थोड़ी मात्रा हमारे द्वारा उगाई जाने वाली प्रत्एक फसल के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए, चीन की लगभग 75 प्रतिशत धान की मिट्टी और दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया की 66 प्रतिशत गेहूं बेल्ट में पर्याप्त पोटैशियम नहीं है। भारत में, पोटैशियम की कमी के कारण पहले से ही फसल की पैदावार कम हो रही है। हालाँकि मिट्टी में अधिक पोटैशियम जोड़कर समस्या का समाधान करना आसान लग सकता है, लेकिन वास्तविकता कहीं अधिक जटिल है। आपूर्ति कुछ देशों में केंद्रित है-पोटैशियम आमतौर पर पोटाश से निकाला जाता है, जो भूमिगत चट्टानों की परतों में पाया जाने वाला एक क्रिस्टल जैसा खनिज है। दुनिया का भंडार मुट्ठी भर देशों में केंद्रित है, जिसका अर्थ है कि अधिकांश अन्य देश आयात पर निर्भर हैं, जिससे उनकी खाद्य प्रणालियाँ आपूर्ति में व्यवधान के प्रति संवेदनशील हो जाती हैं।कनाडा, बेलारूस और रूस के पास सामूहिक रूप से दुनिया के लगभग 70 प्रतिशत पोटाश भंडार हैं। चीन के साथ मिलकर, ए चार देश कुल वैश्विक उत्पादन का 80 प्रतिशत उत्पादन करते हैं और पोटैशियम उर्वरक के लिए 15 अरब अमेरिकी डॉलर के अंतरराष्ट्रीय बाजार पर हावी हैं।पोटाश की कीमतों में अस्थिरता की संभावना है और 2000 के बाद से दो बड़ी बढ़ोतरी हुई है। पहली बार 2009 में, जब कीमतें तीन गुना से अधिक हो गईं। उर्वरक-संचालित खाद्य मूल्य अस्थिरता के बारे में व्यापक चिंता के बावजूद, भविष्य के झटकों से बचाने के लिए बहुत कम कार्वाई की गई।2021 में उर्वरक की मांग में वृद्धि, कोविड-19 के बाद आर्थिक सुधार, यूक्रेन पर रूस के आक्रमण और ईंधन की बढ़ती लागत के कारण कीमतों में एक बार फिर तेजी से वृद्धि हुई। बेलारूस पर प्रतिबंधों ने व्यवधान को और बढ़ा दिया। अप्रैल 2022 तक, पोटाश जनवरी 2021 की तुलना में छह गुना अधिक महंगा था। तब से कीमतें थोड़ी कम हो गई हैं। हालांकि यह राहत स्वागत योग्य हो सकती है।

पंत आईपीएल में वापसी को तैयार

भाषा। नई दिल्ली

विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत कर्नाटक के अलूर में अपनी फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स द्वारा आयोजित अभ्यास मैच में हिस्सा लेने के बाद इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के आगामी सत्र में वापसी की राह पर हैं। पंत दिसंबर 2022 में भीषण कार दुर्घटना गंभीर रूप से चोटिल हुए थे। इसके कारण उन्हें लिगामेंट की सर्जरी करानी पड़ी थी। वह राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में रिहैबिलिटेशन (चोट से उबरने की प्रक्रिया) कर रहे हैं और मार्च के आखिरी सप्ताह के आस-पास शुरू होने वाले आईपीएल की शुरुआत से पहले मैच फिटनेस हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। इस वामहस्त बल्लेबाज ने पिछले साल भी एक प्रदर्शनी मैच में भाग लिया था। एनसीए के एक सूत्र ने बेंगलुरु के पास अलूर में इंट्रा-स्क्वाड मैच का जिक्र करते हुए कहा, मैच मूल रूप से उनकी शारीरिक फिटनेस के आकलन के लिए था। वह कुछ समय से नेट सत्र में बल्लेबाजी कर रहे थे और अभ्यास मैच में खेलना इसका अगला चरण की तरह है। इससे पहले इस महीने की शुरुआत में दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच रिकी पोंटिंग ने कहा था कि पंत आईपीएल के आगामी सत्र में वापसी करने को लेकर आश्वस्त हैं। पंत अगर विकेट के पीछे अपनी की भूमिका निभाने में सक्षम नहीं हुए तो वह बल्लेबाज के रूप में खेल सकते हैं या आगामी आईपीएल में उनका इस्तेमाल इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में हो सकता है। पोंटिंग ने मेलबर्न में एक कार्यक्रम में कहा था, ऋषभ को पूरा भरोसा है कि वह मैच खेलने के लिए फिट होंगे। वह टीम में किस क्षमता में रहेंगे इसे लेकर हम अभी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं है। पोंटिंग ने कहा, आपने सोशल-मीडिया पर उनसे जुड़ी चीजें देखी होंगी, वह सक्रिय है और अच्छी तरह से चल-दौड़ रहा है। उन्होंने कहा, हम बस यही उम्मीद कर सकते है कि वह खेलने के लिए उपलब्ध रहे। हो सकता है कि वह सभी मैच ना खेले लेकिन अगर वह 14 लीग मैचों में से 10 मैच भी खेलता है तो यह टीम के लिए बोनस की तरह होगा। पोंटिंग ने कहा, मैं गारंटी देता हूं कि अगर मैंने अभी उससे खेलने के बारे में पूछा तो वह कहेगा, मैं हर मैच खेलने के लिए तैयार हूं , मैं हर मैच में कीपिंग और चौथे क्रम पर बल्लेबाजी के लिए तैयार हूं। हम हालांकि अभी इस मामले में और इंतजार करना चाहेंगे। उन्होंने कहा, वह कमाल का खिलाड़ी है। वह स्पष्ट रूप से हमारा कप्तान है। हमें पिछले साल उसकी कमी बहुत अधिक खली थी। आप अगर उसके पिछले 12-13 महीने की यात्रा को देखेंगे तो उसने काफी मेहनत की है। क्रिकेट खेलना तो दूर वह खुद को भाग्यशाली समझता है कि वह जीवित बच गया। पंत अगर फिटनेस हासिल करने में सफल रहे तो दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी करेंगे। उनकी गैरमौजूदगी में डेविड वॉर्नर ने पिछले सत्र में टीम का नेतृत्व किया था। छब्बीस साल के पंत ने भारत के लिए 33 टेस्ट, 30 एकदिवसीय और 66 टी20 अंतरराष्ट्रीय खेले हैं।

आईपीएल को 22 मार्च से शुरू करने की योजनाः धूमल

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का आगामी चरण 22 मार्च से शुरू होगा और लोकसभा चुनावों के बावजूद इसका आयोजन पूरी तरह से देश में ही होगा। आईपीएल के अध्यक्ष अरुण धूमल ने पीटीआई-भाषा को यह जानकारी दी।आम चुनाव के अप्रैल और मई में होने की संभावना है और यही कारण है कि आईपीएल के 17वें सत्र का कार्यक्रम अभी तक जारी नहीं किया गया है। धूमल ने कहा कि शुरुआत में इस लीग के केवल पहले 15 दिनों के कार्यक्रम की घोषणा की जाएगी। बाकी मैचों के कार्यक्रम की घोषणा आम चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद होगी।लोकसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा अगले महीने की शुरुआत में होने की संभावना है। धूमल ने कहा, हम टूर्नामेंट को 22 मार्च से शुरू करने की योजना बना रहे हैं। हम सरकारी एजेंसियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हम सबसे पहले शुरुआती कार्यक्रम जारी करेंगे। पूरा टूर्नामेंट भारत में आयोजित किया जाएगा। इससे पहले 2009 में आम चुनावों के दौरान आईपीएल के पूरे सत्र का आयोजन दक्षिण अफ्रीका में हुआ था जबकि 2014 में इसके कुछ मैचों का आयोजन यूएई में हुआ था। इसके बाद 2019 के आम चुनावों के दौरान इस लीग का आयोजन पूरी तरह से देश में ही हुआ था।

कड़ी मेहनत करके इस स्तर तक पहुंचा हूं: पंजाब किंग्स के बल्लेबाज आशुतोष शर्मा

मोहाली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की टीम पंजाब किंग्स के नए खिलाड़ी आशुतोष शर्मा ने कहा कि मौका मिलने पर वह अपनी फ्रेंचाइजी के लिए बल्ले से प्रभावी प्रदर्शन करना चाहते हैं। आशुतोष ने कहा कि उन्होंने इस स्तर तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत की है और खेल में गलती होने पर पर खुद को घरेलू काम करने की सजा भी देते है। मध्य प्रदेश के लिए प्रथम श्रेणी के चार मैचों में एक शतक लगाने वाले आशुतोष को पंजाब किंग्स ने आईपीएल नीलामी में 20 लाख रुपए की बोली के साथ टीम में शामिल किया है। मध्य प्रदेश के रतलाम के आशुतोष को अपने संघर्ष के दिनों में आर्थिक तंगी से निपटने के लिए अंपायरिंग का सहारा भी लेना पड़ा था। आशुतोष ने कहा, मैंने जब क्रिकेट में करियर बनाने के लिए घर छोड़ा था तब मेरे पास ज्यादा पैसे नहीं थे। मैं शिविर में जाता था और दोपहर के खाने के लिए मैंने अंपायरिंग करना शुरू कर दिया था। हमारे परिवार में कमाई के सीमित संसाधन थे और शुरुआत में खुद के बूते सब कुछ करना काफी मुश्किल था। मैंने कभी अपने संघर्षों का असर अपने परिवार पर नहीं पड़ने दिया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि वे चिंतित हो। आशुतोष ने कम उम्र में ही अपनी क्रिकेट यात्रा की शुरुआत कर दी थी लेकिन रतलाम में मौके की कमी के कारण वह आठ साल की उम्र में इंदौर आ गए और मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ की आवासीय अकादमी में प्रशिक्षण लेने लगे। खेल में उत्कृष्टता हासिल करने का उनका दृढ़ संकल्प ऐसा था कि अंडर-19 क्रिकेट खेलते समय अगर कोई गलती हो जाती थी, तो वह सजा के तौर पर घर का काम करने लगते थे। आशुतोष का मानना है कि सजा उनके जीवन में अनुशासन लाएगी और उन्हें इस स्तर तक पहुंचने के लिए किए गए त्याग की याद दिलाएगी।

कोहली और अनुष्का को पुत्ररत्न की प्राप्ति

भाषा। नई दिल्ली

भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने मंगलवार को घोषणा की कि उन्हें और उनकी अभिनेत्री पत्नी अनुष्का शर्मा को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है। उनकी पत्नी ने 15 फरवरी को पुत्र को जन्म दिया। कोहली और अनुष्का पहले से ही तीन साल की बेटी वामिका के माता-पिता हैं। कोहली ने इंस्टाग्राम पर की गई पोस्ट में जानकारी दी, अत्यधिक खुशी और प्यार के साथ हम सभी को यह बताते हुए खुशी हो रही है कि 15 फरवरी को हमने इस दुनिया में अपने बेटे और वामिका के छोटे भाई अकाय का स्वागत किया। उन्होंने कहा, आपकी जिंदगी के इन खूबसूरत पलों में हम आपका आशीर्वाद और शुभकामनाएं चाहते हैं। हम आपसे अनुरोध करते हैं कि इस समय हमारी निजता का सम्मान करें। कोहली निजी कारणों से इंग्लैंड के खिलाफ वर्तमान टेस्ट श्रृंखला में नहीं खेल रहे हैं। भारत पांच मैच की श्रृंखला में अभी 2-। से आगे है।

वेकिच ने टेनिस में सबालेंका को हराया

दुबई। ऑस्ट्रेलियाई ओपन खिताब का सफलतापूर्वक बचाव करने के बाद आर्यना सबालेंका को मंगलवार को दुबई चैम्पियनशिप में पुरानी प्रतिद्वंद्वी डोना वेकिच से हार का सामना करना पड़ा। वेकिच ने दूसरे दौर के मुकाबले में पहला सेट गंवाने और दूसरे सेट में 0-2 से पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए 6-7, 6-3, 6-0 से जीत दर्ज की। रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज खिलाड़ी के खिलाफ आठ मैचों में यह क्रोएशिया की वेकिच की छठी जीत है।विम्बलडन चैम्पियन और सातवीं वरीयता प्राप्त मार्केटा वोंद्रोसोवा ने आठ महीने में तीसरी बार पेटयॉन स्टर्न्स को 6-।, 5-7, 6-2 से हराया।

नंदल ने रैकेटलॉन ओपन का खिताब जीता

नई दिल्ली। सिद्धार्थ नंदल ने फाइनल में विक्रमादित्य चौफला को हराकर मुंबई में खेले गए चौथे रैकेटलॉन ओपन के एलीट वर्ग में एकल खिताब जीता। नंदल को हालांकि चौफला की कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा लेकिन आखिर में वह 21-23, 21-16, 21-9, 7-3 से जीत दर्ज करने में सफल रहे। नंदल और चौफला दोनों ने कई बार विश्व रैकेटलॉन चैम्पियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। पूर्व बैडमिंटन खिलाड़ी चौफला ने वर्ल्ड यूनिवर्सिटी बैडमिंटन चैपियनशिप में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

नेपोली ने कोच मजारी को बर्खास्त किया, केलजोना नए कोच होंगे

नेपल्स (इटली)। गत चैंपियन नेपोली ने चैंपियन्स लीग में बार्सीलोना से भिड़ने से दो दिन पहले सत्र में दूसरी बार अपना कोच बदल दिया है। नेपोली ने सोमवार को ट्रेनिंग के बाद अपने कोच वाल्टर मजारी को बर्खास्त कर दिया और स्लोवाकिया के कोच फ्रांसेस्का केलजोना को नियुक्त किया। केलजोना सिरी ए टीम में पूर्व सहायक रह चुके हैं लेकिन क्लब स्तर पर उन्होंने कभी किसी टीम का प्रबंधन नही किया। मजारी को नवंबर में ही रूडी गार्सिया की जगह कोच नियुक्त किया गया था। नेपोली खिताब जीतने के बाद एक ही सत्र में दो कोच बदलने वाली सिरी ए की पहली टीम बन गई है। साथ ही नेपोली पर सिरी ए के इतिहास में सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली गत चैपियन टीम में से एक बनने का खतरा भी मंडरा रहा है।

संतोष ट्रॉफी के अंतिम दौर का पहला मैच मेघालय और सेना के बीच

ईटानगर। संतोष ट्रॉफी के लिए खेले जाने वाली राष्ट्रीय फुटबाल चैपियनशिप के अंतिम दौर का पहला मैच बुधवार को यहां मेघालय और सेना के बीच खेला जाएगा। संतोष ट्रॉफी के अंतिम दौर में कुल 12 टीम भाग लेंगी। इस प्रतियोगिता का आयोजन पहली बार अरुणाचल प्रदेश में किया जा रहा है। मेजबान अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, गोवा, असम, सेना और केरल को ग्रुप ए में जबकि कर्नाटक, महाराष्ट्र, दिल्ली, मणिपुर, मिजोरम और रेलवे को ग्रुप बी में रखा गया है।

गत चैंपियन नोरी रियो ओपन के दूसरे दौर में

रियो डि जिनेरियो। कैमरन नोरी ने रियो ओपन टेनिस टूर्नामेंट में खिताब की रक्षा के अपने अभियान की शुरुआत सोमवार को यहां पहले दौर में बोलीविया के ह्यूगो डेलियन को हराकर की। दूसरे वरीय नोरी ने डेलियन को 6-3, 6-2 से हराया। नोरी ने 2023 के फाइनल में कार्लोस अल्कारेज को हराकर उलटफेर करते हुए खिताब जीता।

भारत के खिलाफ गेंदबाजी पर विचार कर रहे हैं स्टोक्स

राजकोट। भारत के खिलाफ लगातार दो टेस्ट मैच में शिकस्त ने इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स को गेंदबाजी में जल्द वापसी पर विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है और मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम ने स्वीकार किया है कि यह एक अच्छा संकेत है लेकिन वे नहीं चाहते कि यह ऑलराउंडर अनावश्यक रूप से जल्दबाजी करे। अब भी घुटने की सर्जरी से उबर रहे स्टोक्स ने पिछले साल जून में दूसरे एशेज टेस्ट के बाद से गेंदबाजी नहीं की है।मैकुलम के हवाले से सोमवार को ईएसपीएनक्रिकइंफो ने कहा, यह अच्छा है कि वह उस स्थिति में पहुंच रहा है जहां उसे लगता है कि वह गेंदबाजी कर सकता है। उन्होंने कहा, लेकिन बेन चतुर है, वह काफी चतुर है। वह तब तक गेंदबाजी नहीं करेगा जब तक उसे नहीं लगता कि वह वैध रूप से गेंदबाजी करने में सक्षम है। समस्या तब होगी जब वह गेंदबाजी स्पैल शुरू करेगा और फिर उसे खत्म नहीं कर पाएगा। इसलिए हम देखेंगे कि क्या होता है। मैकुलम ने कहा, हमें देखना होगा कि खतरा कहां है और उसे इससे दूर करने की कोशिश करनी होगी। लेकिन यह एक अच्छा संकेत है। राजकोट टेस्ट से पहले स्टोक्स ने

कहा था कि उन्होंने अपने फिजियोथेरेपिस्ट से वादा किया था कि वह मौजूदा श्रृंखला में गेंदबाजी नहीं करेंगे। लेकिन रविवार को तीसरे टेस्ट में 434 रन की हार के बाद जब उनसे पूछा गया कि क्या वह अपनी ऑलराउंडर की भूमिका दोबारा निभाएंगे तो स्टोक्स ने कहा, मैं हां नहीं कह रहा हूं, मैं ना भी नहीं कह रहा हूं। उन्होंने कहा, मैं ज्यादातर चीजों के बारे में हमेशा बहुत आशावादी रहता हूं। मेडिकल टीम के साथ विस्तृत बातचीत होगी कि मुझ पर काम का कितना बोझ है जिससे कि मुझे कोई बड़ा खतरा नहीं हो। राजकोट टेस्ट के दौरान स्टोक्स ने शत प्रतिशत क्षमता से ट्रेनिंग की थी और स्वीकार किया था कि उन्हें काफी अच्छा महसूस हो रहा है।उन्होंने कहा, मैं अभ्यास के एक दिन शत प्रतिशत क्षमता के साथ गेंदबाजी करने में सफल रहा जिससे मुझे काफी अच्छा महसूस हुआ। मुझे लगा कि मैं मैच में गेंदबाजी कर सकता था लेकिन यह बेवकूफी होती। ृंखला का पहला मैच 28 रन से जीतने के बाद इंग्लैंड को विशाखापत्तनम में 106 रन से हार का सामना करना पड़ा जिसके बाद राजकोट में उसे अपनी सबसे करारी हार में से एक झेलनी पड़ी और टीम पांच मैच की श्रृंखला में ।-2 से पिछड़ गई। अगर यह तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर दोबारा गेंदबाजी करना शुरू कर दे तो इंग्लैंड की टीम को काफी फायदा होगा। मेहमान टीम ने पहले दो टेस्ट में सिर्फ एक तेज गेंदबाज को खिलाने का विकल्प चुना। उन्होंने तीसरे मैच में जेम्स एंडरसन और मार्क वुड दोनों तेज गेंदबाजों को खिलाने के लिए स्पिनर शोएब बशीर को एकादश से बाहर कर दिया।

बैजबॉल से नही अपनी परवरिश से सीखा है जायसवाल : हुसैन

लंदन। पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने राजकोट टेस्ट में यशस्वी जयसवाल की आक्रामक बल्लेबाजी को इंग्लैड की बैजबॉल रणनीति से प्रभावित बताने वाले बेन डकेट की आलोचना करते हुए कहा कि मेहमान टीम को इस युवा भारतीय बल्लेबाज से सीख लेने की जरूरत है। राजकोट में तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के बाद डकेट ने जायसवाल की आक्रामक बल्लेबाजी की प्रशंसा की और कहा कि टेस्ट मैचों में आक्रामक बल्लेबाजी करने के लिए प्रेरित करने का श्रेय इंग्लैड की वर्तमान टीम को जाता है।इंग्लैड की आक्रामक बल्लेबाजी करने की बैजबॉल रणनीति इस मैच में नही चल पाई और उसे 434 रन की करारी हार का सामना करना पड़ा। हुसैन ने डकेट की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया करते हुए कहा, जायसवाल को लेकर डकेट की टिप्पणी की उसने हमसे सीखा, मै उसके बारे मे बात करने जा रहा हूं। उसने (जायसवाल) आपसे नही सीखा है बल्कि उसने अपनी परवरिश और कड़ी मेहनत से सीखा है। उसने आईपीएल से सीखा है। हुसैन ने स्काई स्पोर्ट्स पर इंग्लैड के एक अन्य पूर्व कप्तान माइकल एथरटन के साथ चर्चा के दौरान कहा, अगर कुछ भी हो मै उसे देखकर सीख लूंगा। हुसैन ने रांची मे होने वाले चौथे टेस्ट मैच से पहले इंग्लैड के खिलाड़ियों को आत्ममंथन करने की सलाह भी दी। उन्होने कहा, वे सार्वजनिक रूप से या ड्रेसिंग रूम मे जो भी कुछ कह रहे हों, उन्हें असल मे अपने अंदर झांकने की जरूरत है।

रूट को बैजबॉल छोड़ नैसर्गिक तरीके से खेलना चाहिएः चैपल

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान इयान चैपल ने खराब फॉर्म में चल रहे इंग्लैंड के बल्लेबाज जो रूट से बैजबॉल (टेस्ट में बेहद आक्रामक होकर बल्लेबाजी की रणनीति) तरीके को छोड़कर अपना स्वाभाविक खेल खेलने की सलाह दी। सीनियर बल्लेबाज रूट भारत के खिलाफ पांच मैचों की श्रृंखला में रन बनाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। पिछली छह पारियों में उनका सर्वोच्च स्कोर 29 रन रहा है। वह इस दौरान ज्यादातर मौके पर आक्रामक शॉट खेलने की कोशिश में आउट हुए। ब्रैंडन मैकुलम के कोच और बेन स्टोक्स के कप्तान बनने के बाद इंग्लैंड बैजबॉज अंदाज में टेस्ट खेल रहा है और रूट को खासकर भारत के मौजूदा दौरे पर इससे सामंजस्य बिठाने में संघर्ष करना पड़ा है। चैपल ने वाइड वर्ल्ड ऑफ स्पोर्ट्स से बैजबॉल को बेहद खराब रणनीति करार देते हुए कहा, अपने स्वाभाविक खेल से रूट का रिकॉर्ड कमाल का है। वह अपने नैसर्गिक खेल से भी अपेक्षाकृत तेजी से रन बना सकते हैं। उन्होंने कहा, मुझे नहीं पता कि वह अपने खेल में इतना बदलाव क्यों कर रहा है।

लेन उल्लंघन के कारण गुलवीर ने गंवाया स्वर्ण पदक

तेहरान। भारत के गुलवीर सिंह ने यहां संपन्न हुई एशियाई इंडोर एथलेटिक्स चैपियनशिप में पुरुषों की 3000 मीटर दौड़ का स्वर्ण पदक गंवा दिया, क्योंकि उन्हें लेन उल्लंघन के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया था। गुलवीर ने सोमवार को 3000 मीटर के फाइनल में 8 मिनट 07.48 सेकंड का समय लेकर पहला स्थान हासिल किया था। यह स्पर्धा ओलंपिक में शामिल नही है। इस भारतीय एथलीट को हालांकि बाद में लेन उल्लंघन के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने देर रात इस फैसले के खिलाफ अपील भी दायर की लेकिन उसे भी नामंजूर कर दिया गया।टीम के साथ गए एक कोच ने पीटीआई से कहा, हां, यह फैसला सुनाया गया कि गुलवीर ने लेन का उल्लंघन किया था। एएफआई ने विरोध भी दर्ज कराया लेकिन उसे नामंजूर कर दिया गया। उन्होंने कहा, जूरी ने बताया कि उनके पास इस बात के पर्याप्त सबूत है कि गुलवीर ने लेन का उल्लंघन किया था। नियम 17.2 और 17.3 में बताया गया है कि कोई एथलीट कैसे लेन का उल्लंघन कर सकता है और किन परिस्थितियों में उसे अयोग्य नही ठहराया जा सकता है। इन नियमों के अनुसार किसी भी एथलीट को शुरू से लेकर आखिर तक उसी लेन में दौड़ना होगा जो उसे आवंटित की गई हो।

प्रो लीग में नीदरलैंड के खिलाफ दबदबा बरकरार रखने उतरेगा भारत

राउरकेला। भारतीय पुरुष हॉकी टीम बुधवार को यहां एफआईएच प्रो लीग के अगले चरण में नीदरलैंड के खिलाफ उतरेगी तो उसकी नजरें जीत के साथ इस टीम पर अपना दबदबा बनाए रखने पर होंगी। प्रो लीग में भारत ने अब तक प्रभावी प्रदर्शन किया है। ड्रैगफ्लिकर हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली टीम ने पांच में से अपने दो मुकाबले नियमित समय में जीते जबकि नीदरलैंड और स्पेन को शूट आउट में हराकर बहुमूल्य बोनस अंक भी हासिल किए। टीम ने एकमात्र मुकाबला ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ गंवाया है लेकिन उसमे भी भारतीय टीम जीत दर्ज करने की स्थिति में थी। भारत अभी पांच मैच में 10 अंक के साथ प्रो लीग तालिका में चौथे स्थान पर चल रहा है। नीदरलैंड नौ मैच में 18 अंक के साथ शीर्ष पर है। अर्जेन्टीना के आठ मैच में 13 जबकि ऑस्ट्रेलिया के चार मैच में 12 अंक है। दुनिया की तीसरे नंबर की टीम भारत को हालांकि दुनिया की 12वें नंबर की टीम आयरलैंड और आठवें नंबर की टीम स्पेन के खिलाफ पिछले दो मुकाबलों में जूझना पड़ा है। आयरलैंड के खिलाफ भारत ने गुरजंत सिंह के अंतिम मिनट में दागे गोल की बदौलत।-0 से जीत दर्ज की और फिर मैराथन शूट आउट में स्पेन को 8-7 से हराया। भारत और स्पेन 60 मिनट के नियमित समय के बाद 2-2 से बराबर थे।

साइंस इन एक्शन से बच्चों को मिलेगी जानकारी

गोरखपुर। भारत की प्रमुख विज्ञान आधारित आयुर्वेद कंपनी डाबर इंडिया लिमिटेड ने उपभोक्ताओं को आयुर्वेद के फायदों और सेहतमंद जीवनशैली के बारे में जागरुक बनाने के लिए जागरुकता अभियान साइंस इन एक्शन् की शुरूआत की है। इसके तहत आज सम्पदा देवी बालिका इंटर कालेज पतरा बाजार में आयोजन किया गया । जिसमें मुख्य अतिथि दिनेश कुमार थे, अध्यक्षता प्रधानाचार्य नीलम पांडेय, विशिष्ट अतिथि गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब के उपाध्यक्ष कुंदन उपाध्याय ने भी सम्बोधित किया। संचालन रमेश मणि ने किया। यह कैंपेन आयुर्वेद के संबंध में वैज्ञानिक रूप से जांचे गए तथ्यों के बारे में बताया गया। इस अभियान के तहत डाबर जाने.माने आयुर्वेदिक चिकित्सकों के साथ 22 शहरों के स्कूलों में सेमिनार का आयोजन भी करेगा। ये सत्र बच्चों को बताएंगे कि किस तरह आयुर्वेद उनके समग्र स्वास्थ्य को सनिश्चित कर उज्जवल भविष्य का निर्माण करने में योगदान दे सकता है। इस अभियान के हिस्से के रूप में और भावी पीढ़ियों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिएए डाबर ने देश भर में बच्चों के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से एक मेगा जागरूकता पहल भी शुरू की है। डाबर इंडिया लिमिटेड दिनेश कुमारएमैनेजर कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन ने कहा कि आज के दौर में सभी लोग अपने स्वास्थ्य और कल्याण का महत्व समझ रहे हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए डाबर उन्हें विज्ञान पर आधारित जानकारी देकर परम्परा और आधुनिकता के बीच के अंतर को दूर करना चाहता है।

दिल्ली प्रीमियर लीग में फिक्सिंग के आरोपों की जांच करेगा एआईएफएफ

नई दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ (एआईएफएफ) दिल्ली प्रीमियर लीग में सट्टेबाजी और मैच फिक्सिंग के आरोपों के सामने आने के बाद इस खतरे की तह तक पहुंचने के लिए सरकारी एजेंसियों की मदद से देश के विभिन्न शहरों में जांच शुरू करेगा। दिल्ली लीग में मैच फिक्सिंग और सट्टेबाजी का संदेह सोमवार को तब पैदा हुआ जब अहबाब एफसी ने रेंजर्स एफसी के खिलाफ मैच के आखिरी क्षणों में दो आत्मघाती गोल किए। अहबाब एफसी पहले इस मैच को 4-0 जीत रहा था लेकिन आखिर में उसने 4-2 से जीत दर्ज की। इन दोनों आत्मघाती गोल के वीडियो वायरल हो गए इसके बाद एआईएफएफ ने मंगलवार को इस संदेहास्पद मैच की विस्तृत जानकारी देने के लिए फुटबॉल दिल्ली के प्रमुख अनुज गुप्ता को तलब किया और उन्हें नोटिस भी सौंपा।

नागल और रामनाथन एटीपी चैलेंजर के प्री क्वार्टर फाइनल में

पुणे। भारत के शीर्ष वरीयता प्राप्त सुमित नागल और वाइल्डकार्ड से प्रवेश पाने वाले रामकुमार रामनाथन ने मंगलवार को यहां अपने-अपने मैच जीतकर एटीपी चैलेंजर 100 अंतरराष्ट्रीय टेनिस टूर्नामेंट के प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। नागल ने दो घंटे पांच मिनट तक चले मैच में चीनी ताइपे के यू ह्सिउ सू को 7(6)-6, 6-4 से हराया। दूसरी तरफ रामनाथन ने एक घंटे 55 मिनट तक चले रोमांचक मुकाबले में पिछले सप्ताह बेंगलुरु ओपन का खिताब जीतने वाले स्टेफानो नेपोलिटानो पर 7-6(5) 7-6(5) से जीत दर्ज की। विश्व में 101वीं रैंकिंग के खिलाड़ी नागल क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने के लिए हमवतन निकी कालियांदा पूनाचा से, जबकि रामनाथन रूस के एलेक्सी ज़कारोव से भिड़ेंगे। युगल में वाइल्ड कार्ड से प्रवेश पाने वाले भारत के सिद्धांत बंठिया और परीक्षित सोमानी ने लुका मार्गारोली और गोंकालो ओलिवेरा को 5-7, 7-6 (5), 10-5 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। लेकिन श्रीराम बालाजी और आंद्रे बेगेमैन की चौथी वरीयता प्राप्त जोड़ी को जापान के तोशीहिदे मात्सुई और काइटो उएसुगी से 4-6, 7-6 (5), 10-5 से हार का सामना करना पड़ा।

ईपीएलः एवर्टन ने क्रिस्टल पैलेस को बराबरी पर रोका

लीवरपूल। नए कोच ओलिवर ग्लासनर के मार्गदर्शन में खेल रहे क्रिस्टल पैलेस को इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल टूर्नामेंट में सोमवार को यहां एवर्टन ने अंतिम लम्हों में गोल दागकर।-। से बराबरी पर रोक दिया। रॉय हॉजसन के सोमवार को स्वास्थ्य संबंधी समस्या के कारण इस्तीफा देने के बाद ग्लासनर को इस मुकाबले से कुछ ही घंटो पहले कोच नियुक्त किया गया। जोर्डन आएव ने 66वें मिनट में क्रिस्टल पैलेस को बढ़त दिलाई थी लेकिन अमादोउ ओनाना ने 84वें मिनट में एवर्टन को बराबरी दिला दी। एवर्टन की टीम पिछले आठ मैच में जीत दर्ज करने के नाकाम रही है लेकिन ड्रॉ के साथ बेहतर गोल अंतर के कारण रेलीगेशन जोन (निचली लीग में खिसने वाले टीमें) से बाहर आ गई है।

पश्चिम जर्मनी को चैंपियन बनाने वाले ब्रेहमे का निधन

बर्लिन। अर्जेंटीना के खिलाफ 1990 विश्व कप फाइनल मैच का इकलौता गोल कर पश्चिम जर्मनी को चैंपियन बनाने वाले एंड्रियास ब्रेहमे का निधन हो गया है। वह 63 वर्ष के थे। ब्रेहमे की पार्टनर सुजैन शेफर ने मंगलवार को जर्मनी की डीपीए समाचार एजेंसी को दिए बयान में उनके की निधन पुष्टि की। शेफर ने कहा कि ब्रेहमे का रात में दिल का दौरा पड़ने से अचानक और अप्रत्याशित रूप से निधन हो गया। उनके पूर्व क्लब बायर्न म्यूनिख ने एक्स पर कहा एंड्रियास ब्रेहमे हमेशा हमारे दिलों में रहेंगे। एक विश्व कप विजेता और इससे भी महत्वपूर्ण एक बहुत ही खास व्यक्ति के रूप में वह हमारे दिलों में रहेंगे। ब्रेहमे अग्रिम पंक्ति में आम तौर पर बाईं ओर से खेलते थे। वह 1980 और 1990 के दशक में जर्मनी के दिग्गज खिलाड़ियों में शामिल थे।

भारतीय पुरुष और महिला टीमें नॉकआउट चरण में

विश्व टेबल टेनिस चैम्पियनशिप

भाषा। बुसान

भारतीय पुरुष और महिला टीमों ने मंगलवार को यहां विश्व टेबल टेनिस (डब्ल्यूटेटे) टीम चैंपियनशिप के ग्रुप चरण में विपरीत अंदाज में जीत के साथ नॉकआउट चरण में जगह पक्की की। भारतीय महिला टीम ने पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए स्पेन पर 3-2 से रोमांचक जीत दर्ज की, वहीं पुरुष टीम ने न्यूजीलैंड को आसानी से 3-0 से हराया। कागजों पर मजबूत भारतीय टीम को स्पेन से कड़ी टक्कर मिली। श्रीजा अकुला और मनिका बत्रा के शुरुआती दोनों मैचों में हारने के बाद अयहिका मुखर्जी ने जीत के साथ भारत की मुकाबले में वापसी कराई। इसके बाद श्रीजा और मनिका चौथे और पांचवें मैच को जीतने में सफल रहे। श्रीजा शुरुआती एकल में मारिया जियाओ से 9-11, 11-9, 11-13, 4-11 से हार गईं। सोफिया-जुआन झांग ने भारत की शीर्ष रैंक वाली खिलाड़ी मनिका पर 13-11,6-11,8-11,11-9,11-7 से जीत के साथ स्पेन का स्कोर 2-0 कर दिया। अयहिका ने तीसरे एकल में एल्विरा रेड को 11-8, 11-13, 11-8, 9-11, 11-4 से हराकर भारत को मुकाबले में बनाए रखा। इसके बाद मनिका ने चौथे एकल में मारिया को 11-9, 11-2, 11-4 से हराकर स्कोर 2-2 कर दिया। श्रीजा ने निर्णायक मैच में झांग पर 11-6, 11-13, 11-6, 11-3 से जीत दर्ज कर भारत को सफलता दिलाई। भारतीय महिला टीम चार मैचों में तीन जीत के साथ ग्रुप एक में दूसरे स्थान पर रही। इस ग्रुप में चीन शीर्ष स्थान पर रहा। भारत को ग्रुप चरण में इकलौती हार चीन से मिली। चीन के खिलाफ अयहिका और श्रीजा ने विश्व की नंबर एक और नंबर दो खिलाड़ी क्रमशः सुन यिंघसा और वांग यिदि को मात दी थी। पुरुषों वर्ग में मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन हरमीत देसाई और जी साथियान ने शुरुआती दो एकल में क्रमशः चोई टिमोथी और अल्फ्रेड पेना डेला के खिलाफ आसान जीत दर्ज की। हरमीत ने जहां 11-5, 11-।, 11-6 से जीत हासिल की।

सिंगापुर के भारतीय मूल के आठ साल के लड़के ने पोलैंड के ग्रैंडमास्टर को हराया, रिकॉर्ड बनाया

सिंगापुर। भारतीय मूल के सिंगापुर के आठ साल के अश्वथ कौशिक रविवार को स्विट्जरलैंड में बर्गडोर्फर स्टेडथॉस ओपन टूर्नामेंट में पोलैंड के शतरंज ग्रैंडमास्टर जासेक स्टोपा को हराकर क्लासिकल शतरंज में किसी ग्रैंडमास्टर को हराने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बने। चैनल न्यूज एशिया की खबर के अनुसार सिंगापुर का प्रतिनिधित्व कर रहे अश्वथ ने 37 साल के स्टोपा को हराया। पिछला रिकॉर्ड कुछ ही हफ्ते पहले बना था जब सर्बिया के लियोनिड इवानोविच ने बेलग्रेड ओपन में बुल्गारिया के 60 साल के ग्रैंडमास्टर मिल्को पोपचेव को हराया था। इवानोविच की उम्र अश्वथ से कुछ महीने अधिक है। फिडे विश्व रैंकिंग में दुनिया के 37,338वें नंबर के खिलाड़ी अश्वथ 2017 में सिंगापुर आ गए थे। उन्होंने कहा, मुझे अपने खेल पर और मैंने जैसा प्रदर्शन किया उस पर गर्व है, विशेषकर तब जब मैं एक समय बहुत खराब स्थिति में था लेकिन वहां से वापसी करने में कामयाब रहा। सिंगापुर के ग्रैंडमास्टर और सिंगापुर शतरंज महासंघ के सीईओ केविन गोह ने अश्वथ की उपलब्धि की सराहना करते हुए एक्स पर लिखा, उसके पिता ने काफी समर्थन किया, लड़का समर्पित है, स्कूल ने लचीलापन दिखाया और निश्चित रूप से उसमें नैसर्गिक प्रतिभा है। यह देखना बाकी है कि वह कितनी दूर तक जा सकता है।

लखनऊ के अरहम ने कराटे में जीता स्वर्ण

लखनऊ। लखनऊ के उभरते हुए कराटे खिलाड़ी अरहम खान ने प्रथम यूएई इंटरनेशनल कराटे ओपन प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर प्रदेश व देश का नाम रोशन किया। संयुक्त अरब अमीरात ;यूएईद्ध के फुजैरा में 16 से 19 फरवरी 2024 तक आयोजित इस प्रतियोगिता में अरहम खान ने बालक 10 साल काता में स्वर्णिम सफलता हासिल की। अरहम ने फाइनल में रूस के खिलाड़ी को मात दी। इससे पहले चैंपियन ऑफ चैंपियंस कराटे अकादमी व वर्ल्ड मॉडर्न शोतोकान फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रशिक्षुए फर्स्ट डिग्री डिग्री ब्लैक बेल्ट अरहम खान ने फाइनल तक के अपने सफर में फिलिपींसए यूएईए कुवैत तथा कतर के खिलाड़ियों को मात दी थी। अरहम खान ने इससे पूर्व राष्ट्रीय कराटे चैंपियनशिप में तीन बार स्वर्ण पदक अपने नाम किए है। अरहम खान की इस सफलता पर उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के महासचिव डा. आनन्देश्वर पाण्डेय सहित कराटे एसोसिएशन ऑफ़ यूपी के अध्यक्ष टीपी हवेलिया, कार्यकारी अध्यक्ष डाण्सैयद रफ्त जुबैर रिजवी एवं महासचिव जसपाल सिंह, वर्ल्ड मॉडर्न शोतोकान फेडरेशन ऑफ उत्तर प्रदेश के महासचिव संतोष कुमार व कराटे एसोसिएशन ऑफ लखनऊ के सचिव कृष्णावतार एवं रवि चौरसिया अशोक पाल तथा लखनऊ के सभी प्रशिक्षकों ने हार्दिक बधाई देते हुए अरहम के उज्जवल भविष्य की कामना की।

शाकुंभरी क्लब की जीत में देवेंद्र, अक्षय और अखिलेश के अर्धशतक

लखनऊ। देवेंद्र पाल-83, अक्षय-88 व अखिलेश यादव -66 के अर्धशतकों से शाकुंभरी क्रिकेट क्लब ने द्वितीय तारा देवी मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट में सीएसडी सहारा क्रिकेट अकादमी गोमतीनगर को 57 रन से हराकर पूरे अंक जुटाए।गियर क्रिकेट ग्राउंड पर शाकुंभरी क्रिकेट क्लब ने निर्धारित 40 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 318 रन का विशाल स्कोर बनाया। सलामी बल्लेबाज शिवम सिंह 2 रन ही बना सके। उनके बाद अक्षय ने 75 गेंदों पर 12 चौके व 3 छक्के से 88 रन और देवेंद्र पाल ने 73 गेंदों पर 12 चौके व एक छक्के से 83 रन की अर्धशतकीय पारी खेली। अखिलेश यादव ने 47 गेंदों पर 4 चौके व 4 छक्के से उम्दा 66 रन बनाए। सीएसडी सहारा क्रिकेट अकादमी गोमतीनगर से आदित्य सिंह ने 2 विकेट हासिल किए। जवाब में सीएसडी सहारा क्रिकेट अकादमी गोमतीनगर लक्ष्य का पीछा करते हुए 36०1 ओवर में 261 रन ही बना सका और जीत से 57 रन दूर रह गया। सलामी बल्लेबाज रितिक राय-69 रन, 72 गेंद, 8 चौके ने पारी की शुरुआत की। वहीं आदित्य कृष्णा ;61 रन 47 गेंद 7 चौके3 छक्के और अनुभव पीसिंह-50 रन 23 गेंदए 9 चौकेए 1 छक्का ने भी अर्धशतक जड़ा लेकिन टीम की हार को टाल न सके। शाकुंभरी क्रिकेट क्लब से मनीष रावतए मनीष कश्यप व आर्यन मिश्रा ने 2.2 विकेट झटकते हुए टीम की जीत तय की। मैन ऑफद मैच का पुरस्कार शाकुंभरी क्रिकेट क्लब के देवेंद्र पाल को मिला।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाषः 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 ,बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।